पवित्र आत्मा

लेखक: जे. सी. चोट

अनुवादक: अरनेस्ट गिल

THE HOLY SPIRIT

By J. C. Choate

Hindi Translation by
Earnest Gill

पवित्र आत्मा

लेखक: **जे. सी. चोट**

अनुवादक: **अरनेस्ट गिल**

All Biblical quotes are from Hindi ov (Re-edited)
by Bible society of India

Church of Christ
P. O. Box 44
Chandigarh-160017

Email: hindibiblecourse@gmail.com

एक परिचय

''परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, देखो, ऐसे दिन आते हैं, जब मैं इस देश में महंगी करूंगा; उस में न तो अन्न की भूख और न पानी की प्यास होगी, परन्तु यहोवा के वचनों के सुनने ही की भूख प्यास होगी। और लोग यहोवा के वचन की खोज में समुद्र से समुद्र तक और उत्तर से पूरब तक मारे मारे फिरेंगे, परन्तु उसको न पाएंगे'' (आमोस 8:11–12)।

ज्यों–ज्यों परमेश्वर के निकट होने और पवित्र आत्मा की ओर से बोलने का दावा करने वालों की संख्या बढ़ रही है, त्यों–त्यों यह विषय बहुतों के लिए और जटिल होता जा रहा है। उसका सबसे बड़ा कारण तो परमेश्वर के वचन की जानकारी का न होना ही है।

कारण शायद यह है कि हर कोई जो पवित्र आत्मा की बात करता है वह वही सोच कर दावा करता है कि उसे सब ज्ञान है। कुछ लोग पवित्र आत्मा के बारे में बता तो उतना ही पाते हैं जितना उन्हें उसकी समझ होती है, पर वे दावे बड़े–बड़े करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 29:29 में कहा गया है कि ''गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वंश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश में रहेंगी ...।'' यह इस बात को मानने के लिए कि सब कुछ जानने का दावा या कोशिश करना बेमानी है और हमें उसी से, जो प्रगट किया गया है, संतुष्ट होकर, हमारे उद्धार के विषय में बताई गई बातों को मानना आवश्यक है।

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमें अपना वचन दिया है जिससे हम जान सकते हैं कि परमेश्वर हमें क्या बताना चाहता है। आज इक्कीसवीं सदी में भी यह वही वचन है जो पहली सदी में परमेश्वर की प्रेरणा या इल्हाम प्राप्त प्रेरितों को दिया गया था और उन्हीं के द्वारा लिखकर हम तक पहुंचाया गया (इफिसियों 3:1–6; 2:20)।

भाई जे. सी. चोट के द्वारा दिए गए रेडियो प्रवचन चाहे पहले भी हू–ब–हू प्रकाशित किए जा चुके हैं परन्तु सम्पादित रूप में उन्हें पुस्तक रूप में आप तक पहुंचाते हुए मुझे अत्यंत हर्ष व आनंद का अनुभव हो रहा है।

मसीह में आपका
अरनेस्ट गिल

लेखक की ओर से

यह कोलम्बो, श्री लंका में हमारे रेडियो प्रसारणों के लिए तैयार किए गए प्रवचनों की एक श्रृंखला का पुस्तक रूप है। इन प्रवचनों का थीम **पवित्र आत्मा का काम** है। इससे बढ़कर विवादास्पद शायद और कोई विषय नहीं है। इसी कारण सच्चाई को प्रस्तुत करना बेहद आवश्यक है।

मैंने इस विषय से सम्बन्धित विभिन्न बातों और इससे जुड़े प्रश्नों को कवर करने की कोशिश की है। जहां तक हो पाया, छात्र को पवित्र आत्मा के अलग–अलग नापों को याद दिलाना जारी रखते और आरम्भ से उसके काम के बारे में बताते हुए, मैंने इसे आसान बनाने की कोशिश की है। बेशक हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पवित्र आत्मा आज कैसे काम करता है। यदि आम लोग यह समझ जाएं कि पवित्र शास्त्र इस संबंध में क्या बताता है तो हमारे समय की बहुत सी धार्मिक समस्याएं खुद स्वयं ही सुलझ जाएंगी।

आत्मा ने बाइबल के पृष्ठों के माध्यम से बात की है। उसका वचन, खास कर नया नियम, हमारे लिए परमेश्वर का सम्पूर्ण और अंतिम वचन है। जो कुछ वह कहना चाहता था, वह उसने कह दिया है, और अगर हम बाइबल को पढ़ते और इसका अध्ययन करते हैं तो हम उसकी सम्पूर्ण इच्छा को समझ सकते हैं। इसका मतलब यह है कि हम समझ सकते हैं कि आत्मा आज क्या करता है और हमारे जीवनों में उसका योगदान क्या है।

कृपया अपने दिमाग को खोलकर सच्चाई को मानने के लिए तैयार रहें। वो चाहे उस से, जिसे आप अब तक सच्चाई मान रहे थे, मेल खाती हो या नहीं। यदि आप अपने मन को खोल दें तो मेरा मानना है कि आपको इस अध्ययन से बहुत बहुत लाभ मिलेगा। इसे पुस्तक रूप में लिखने का यही उद्देश्य था।

–जे. सी. चोट

अतिरिक्त परिचय

जे. सी. द्वारा दिए गए रेडियो सरमनों की श्रृंखला को पुस्तक रूप दिया गया है। मूल में ये पंद्रह–पंद्रह मिनट के 26 पाठ थे।

पवित्र आत्मा के पूरे विषय पर दुनिया भर में गलत शिक्षा को मान रहे लोगों की बढ़ती संख्या के कारण मुझे लगा कि सम्पादित पुस्तक के रूप में लिख कर आज भी जे. सी. की आवाज़ को पहुंचाया जाना ज़रूरी है। यकीनन रेडियो प्रवचनों के अभिनंदन और समापन वाले और दोहराव वाले भागों को निकालना आवश्यक था जिन्हें रेडियो प्रवचनों में कड़ी को जोड़ने तथा और प्रभावशाली बनाने के लिए जोड़ा जाता था।

अब इन पाठों को बाइबल क्लास में उपयोग किए जाने के लिए तैयार किया गया है जिसमें हर पाठ के बाद में प्रश्न भी जोड़े गए हैं। प्रभु की कलीसिया के लोगों को यह पता होना आवश्यक है कि पवित्र आत्मा और आज उसके हमारे जीवनों में कार्य करने के साथ साथ कालांतर में इस विषय पर वचन क्या कहता है। इसके अलावा दुनिया के इतिहास में और आज तक भी बहुत से मसीही लोगों को इस बात पर कि परमेश्वर उनके लिए किस प्रकार काम करता है, बाइबल का ज्ञान न होने के कारण मैंने तेरहवें अध्याय में कुछ पद्य जोड़ दिए हैं। ये कहानियां बाइबल के समय में और आज की परिस्थितियों में परमेश्वर के प्रबंध के शानदार उदाहरण हैं।

हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर उन्हें, जो इन पाठों का अध्ययन करते हैं, आशीष दे ताकि हम खोए हुए संसार में उसके सुसमाचार को पहुंचाने में उसे काम करने दें।

–बैटी बर्टन चोट

विषय सूची

1. पवित्र आत्मा का परिचय देना 01

2. वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा 10

3. पवित्र आत्मा के नाप 20

4. शमौन जादूगर को पवित्र आत्मा की सामर्थ... 30

5. पवित्र आत्मा का दान 36

6. आत्मिक वरदान 45

7. चमत्कारी चिह्न: पहली सदी या आज 52

8. आज परमेश्वर मनुष्य के साथ 64

9. मनपरिवर्तन में पवित्र आत्मा 73

10. "विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे" 79

11. आत्मा की एकता 89

12. पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप 97

13. "परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा" 106

लाइफटाइम गारंटी 122

पाठ 1

पवित्र आत्मा का परिचय देना

इस पाठ में हम केवल पवित्र आत्मा का परिचय ही देना चाहेंगे। अन्य बहुत सी बातों के साथ–साथ हमें परमेश्वर के वचन के अनुसार यह समझना आवश्यक है कि वह कौन है, कहां से आया, और इस संसार में आज उसका काम क्या है।

पहले हमें यह समझना आवश्यक है कि पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व यानी Godhead में तीसरा व्यक्ति है। परमेश्वर है, मसीह है और फिर पवित्र आत्मा है। मसीह ने अपने प्रेरितों से उनका उल्लेख इसी क्रम में किया था, ''इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र; और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो'' (मत्ती 28:19)।

इफिसियों 4:4–6 में प्रेरित पौलुस ने घोषणा की कि एक ही परमेश्वर, एक ही मसीह और एक ही आत्मा है। रोम के मसीही लोगों के नाम पत्र लिखते हुए उसने इन तीनों का उल्ल्ेख किया, ''और हे भाइयो; यीशु मसीह के और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिला कर, तुम से विनती करता हूं कि मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो'' (रोमियों 15:30)।

2 कुरिन्थियों 13:14 में उसने फिर से इन तीनों का परिचय कराया, ''प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे, आमीन!''

तीन व्यक्ति होने के कारण कुछ लोग परमेश्वर, मसीह तथा पवित्र आत्मा को 'ट्रिनटी' यानी त्रिएकता का नाम भी देते हैं। बेशक वे तीनों अलग–अलग व्यक्ति हैं, परन्तु हैं वे तीनों एक। कइयों के लिए इसे समझ पाना सिर से ऊपर की बात लगती है। कुछ लोग यह मानना चाहते हैं कि तीन परमेश्वर

हैं। इसे समझने के लिए, ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि यीशु खुद ही है, पर कभी वह ''परमेश्वर पिता'' होता है और कभी ''पवित्र आत्मा'' बन जाता है। इस शिक्षा को ''अकेला यीशु'' यानी ओनली जीज़स नामक शिक्षा के नाम से जाना जाता है। बिना किसी शक के यह गलत शिक्षा है।

बेशक हमारे लिए यह समझ पाना कठिन हो सकता है कि ऐसा कैसे हो सकता है कि एक परमेश्वर, एक मसीह और एक पवित्र आत्मा हो, और तीनों अलग–अलग व्यक्ति या ईश्वरीय जीव हों, पर फिर भी तीनों ''एक किए हुए'' हों [जोकि परमेश्वर के वर्णन के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले इब्रानी शब्द ''एक'' *(achid)* का अर्थ है: ''हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है!'' (व्यवस्थाविवरण 6:4)]। पर बाइबल हमें यही तो बताती है और इस कारण हमें विश्वास से इसे मानना आवश्यक है, चाहे अपनी सीमित बुद्धि से हमें इसकी समझ आए या नहीं।

परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा के एक होने को समझाने के लिए पवित्र शास्त्र में ट्रिनटी या त्रिएक शब्द का तो इस्तेमाल नहीं हुआ, परन्तु उन्हें ''परमेश्वरत्व'' कहा गया है। पौलुस ने अथेने के लोगों में प्रचार किया था, ''अत: परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व, सोने या रुपए या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों'' (प्रेरितों 17:29)।

परमेश्वर का इनकार करने वालों के पास पौलुस ने घोषणा की थी, ''उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं'' (रोमियों 1:20)। मसीह की बात करते हुए उसने कहा, ''क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'' (कुलुस्सियों 2:9)। इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वरत्व जिसे इन वचनों में हम देखते हैं वह परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा को मिलाकर ही बनता है।

परन्तु यह परमेश्वरत्व कब से है? जहां हमें एक के बारे में पढ़ने को मिलता है, वहीं दूसरों के बारे में भी होता है। उनके बारे में सबसे पहले हम वस्तुओं के आरम्भ में पढ़ते हैं, जो इस बात का संकेत है कि वे सृष्टि से पहले यानी अनंतकाल से हैं, जिसका अर्थ यह है कि वे खुदा हैं।

बाइबल की पहली ही आयत कहती है, ''आदि में परमेश्वर यानी एलोहीम (इब्रानी भाषा में ''परमेश्वर'' के लिए इस शब्द का बहुवचन रूप) ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:1)। ''परमेश्वर'' [यानी एलोहीम] में परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा तीनों आते हैं। फिर से, सृष्टि के सम्बन्ध

में हम पढ़ते हैं, ''फिर परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं' '' (उत्पत्ति 1:26)। यूहन्ना ने कहा, ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई'' (यूहन्ना 1:3)। ''... तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था'' (उत्पत्ति 1:2)। पवित्र शास्त्र की इन आयतों से हम साफ देख सकते हैं कि परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्ति आदि में थे जिस का अर्थ यह हुआ कि वे सदा से हैं। इनमें से कोई भी सृजा हुआ जीव नहीं है।

यदि हम परमेश्वरत्व के हर सदस्य का अध्ययन करें तो हम पाएंगे कि हर किसी ने एक भूमिका निभाई या उसने काम किया था। यह पूरे पुराने नियम में तो मिलता ही है, नये नियम के समय में भी मिलता है। पवित्र आत्मा ने विशेष तौर पर कई लोगों को पवित्र शास्त्र को लिखने के लिए प्रेरणा और अगुआई दी ताकि उसे सम्भालकर रखा जा सके और फिर हम तक पहुंचाया जा सके।

पतरस ने लिखा, ''क्योंकि जब उसने परमेश्वर पिता से आदर और महिमा पाई और उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं। तब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे और स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी। हमारे पास जो भविष्यवक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है, जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे'' (2 पतरस 1:17–21)।

आप इन आयतों में फिर से देख सकते हैं कि परमेश्वरत्व के तीनों सदस्यों का वर्णन है, परन्तु इन में पवित्र आत्मा को, जिसके द्वारा पवित्रशास्त्र दिया गया, विशेष तौर पर दिखाया गया है। पौलुस ने लिखा, ''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16–17)।

कहा जाता है कि पुराने नियम में पवित्र आत्मा का वर्णन 88 बार हुआ

है और उसके 18 नाम बताए गए हैं। इसके साथ ही नये नियम में उसका वर्णन 264 बार हुआ है और उसे 39 विभिन्न नामों से बुलाया गया है। यह भी कहा जाता है कि इन नामों में 5 नाम दोनों (पुराने तथा नये नियमों) में बार–बार मिलते हैं जबकि बाइबल में पवित्र आत्मा के 52 अलग–अलग नाम दिए गए हैं।

पवित्र आत्मा को आम तौर पर रहस्यमयी शक्ति या प्रेतात्मा के रूप में दिखाया जाता है, पर बाइबल उसे एक व्यक्ति या व्यक्तित्व के रूप में दिखाती है। उसके अंदर भावना है (इफिसियों 4:30), दिमाग है (रोमियों 8:27), वह बोल सकता है (1 तीमुथियुस 4:1), और इन बहुत सी बातों के अलावा वह दुर्बलता में हमारी सहायता कर सकता है (रोमियों 8:26)।

1. आत्मा के द्वारा बपतिस्मे में हमारा जन्म होता है (यूह. 3:3–5)।
2. वह हमारा सहायक है (यूह. 14:16–18)।
3. वह हमारे छुटकारे का बयाना है (2 कुरिं. 1:22)
4. वह हमारा बयाना है (2 कुरिं. 5:5)
5. हमारे लिए उसे शोकित करना सम्भव है (इफि. 4:30)
6. हमारे लिए उसे बुझाना सम्भव है (1 थिस्स. 5:19)
7. वह हमारी अगुआई करता है (गला. 5:18)
8. हम उस में रहते हैं (2 कुरिन्थियों 3:6)
9. हम उस में चलते हैं (गला. 5:16)
10. उसके द्वारा हम फल लाते हैं (गला. 5:22–23)
11. उसके द्वारा हम देह, यानी कलीसिया में प्रवेश करते हैं (1 कुरिं. 12:13)
12. वह हम में वास करता है (2 तीमु. 1:14; 1 कुरिं. 3:16, 17)।
13. वह हम में रहता है (1 यूह. 4:13)
14 वह हमें सामर्थ देता है (इफि. 3:16–21)
15. उसी के द्वारा हम देह की क्रियाओं को मारते हैं (रोमि. 8:13)
16. वह गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं (रोमि. 8:16)
17. वह हमारे लिए विनती करता है (रोमि. 8:27; इफि. 2:18)
18. वह हमारे लिए आहें भरता और बयान से बाहर शब्दों का इस्तेमाल करता है (रोमि. 8:26)
19. वह हमें सिखाता है (1 कुरिं. 2:13)
20. वह जांचता है (1 कुरिं. 2:14)

21. उस में हम प्रार्थना करते हैं (यहूदा 1:19, 20)

22. वह हमें जीवन देता है (यूह. 6:63)

23. वह हमें स्वतंत्रता दिलाता है (2 कुरिं. 3:17)

24. हमारे दर्पण में मसीह के चेहरे को देखने पर वह हमें बदल देता है (2 कुरिं. 3:18)

25. उस के द्वारा हम जीवन की कटनी काटते हैं (गला. 6:8)

26. उस के द्वारा हमारी पहुंच पिता तक होती है (इफि. 2:18)

27. आत्मा की सामर्थ के द्वारा हमारी आशा बढ़ती है (रोमि. 15:13)

28. आत्मा ही के द्वारा हम परमेश्वर का निवास स्थान बनते हैं (इफि. 2:22)

29. कलीसिया के साथ-साथ, वह भी कहता है, ''आओ'' (प्रका. 22:17)।

यह शब्दावली, अपने आप में ही, बड़ी मज़बूती के साथ यह संकेत देती है कि हम जब मिलकर अपने उद्धाकर्त्ता की बाट जोहते हैं, तो पवित्र आत्मा इस संसार में कलीसिया के साथ रह रहा होता है।

अगले अध्यायों में हम प्रेरितों में, आरम्भिक कलीसिया में, सदियों से कलीसिया में और आज कलीसिया के अंदर पवित्र आत्मा के काम पर विचार करेंगे। हमारा उद्देश्य बाइबल समर्थन के बिना कुछ न कहने का है ताकि जो भी सबक हम सीखें वे पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट किए गए परमेश्वर के वचन के साथ मेल खाते हों।

पवित्र आत्मा का काम

पवित्र आत्मा का यह विषय महत्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से लोग पवित्र आत्मा और उसके काम के बारे में उलझन में हैं। एक ओर जहां बहुत से लोग उसे सिरे से नकारते हैं, वहीं कुछ इतनी हद कर देते हैं कि वे दावा करते हुए सिखाते हैं कि पवित्र आत्मा आज भी वैसे ही आश्यर्चकर्मों के द्वारा कार्य करता है, जैसे वह यीशु और प्रेरितों के समय में किया करता था और उनकी शिक्षा और दावों का आधार यही होता है। कई धार्मिक शिक्षकों के लिए परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों में पिता परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता मसीह नहीं बल्कि केवल पवित्र आत्मा ही मुख्य आकर्षण होता है। पर बाइबल क्या कहती है?

वचन बताता है कि पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व में तीसरा व्यक्ति है, यानी वह एक व्यक्तित्व है। परमेश्वर तथा यीशु की तरह ही वह भी अनादि है यानी

वह सदा से है और सदा तक रहेगा। उसका योगदान सृष्टि की रचना और पुराने नियम के काल की सब बड़ी घटनाओं में था। इस पाठ में हम मसीह और प्रेरितों के समय में उसके काम के बारे में सीखेंगे।

मसीह के जन्म की ओर वापस जाने पर वचन में हम पढ़ते हैं कि ''यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इकट्ठा होने से पहले ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। अतः उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने का विचार किया। जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा,

'हे यूसुफ! दाऊद की संतान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।'

यह सब इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो: 'देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा,' जिसका अर्थ है – परमेश्वर हमारे साथ।

तब यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा के अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया; और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया: और उसने उसका नाम यीशु रखा'' (मत्ती 1:18–25)।

कृपया इस सब में पवित्र आत्मा की भूमिका को देखें। पवित्र आत्मा ने ही यशायाह भविष्यद्वक्ता को प्रेरणा देकर यह लिखवाया था कि ''इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी'' (यशायाह 7:14)। बाद में हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से मरियम एक बालक को जन्म देती है। अंत में यह सब इसलिए हुआ ताकि भविष्यवक्ता के द्वारा जो वचन यहोवा की ओर कहा गया था वह पूरा हो कि ''एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।''

लूका अध्याय 1 के अनुसार जकर्याह तथा इलीशिबा के यहां भी पवित्र आत्मा की सामर्थ से एक बालक का जन्म हुआ था। उसका नाम यूहन्ना रखा गया और बाद में वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के नाम से प्रसिद्ध हुआ क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा को मानने वालों को बपतिस्मा देता था। मसीह के पूर्वगामी के रूप में जिसे प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया था,

उसने कहा, ''मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।''

''उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। परन्तु यूहन्ना यह कह कर उसे रोकने लगा, मुझे तो तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है? यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। तब उसने उसकी बात मान ली।

''और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं'' (मत्ती 3:11–17)।

जैसे कि हम ने पहले देखा, कि मरियम पवित्र आत्मा की सामर्थ से गर्भवती पाई गई थी जिससे मसीह का जन्म संसार में हुआ। एक वयस्क के रूप में अब हम यीशु को यूहन्ना से बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लेते हुए देखते हैं। पिता की स्वीकृति के प्रमाण के रूप में परमेश्वर का आत्मा उतरा और परमेश्वर ने कहा, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।''

मत्ती 4:1 में वचन कहता है, ''तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो।'' वह शैतान की चुनौतियों और परीक्षा का सामना कैसे कर पाया? हर बार उस ने पवित्रशास्त्र में से उत्तर दिये, जिसके लेखकों को पवित्र आत्मा की प्रेरणा दी गई थी।

यूहन्ना 3:34 में हम पढ़ते हैं कि यीशु को आत्मा नाप–नाप कर नहीं मिला था जिसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा की सामर्थ भरपूर मिली, जिससे वह उस संसार में जिसमें काम करने वह आया था काम कर सका। परन्तु इसे हम ऐसे भी देखते हैं दूसरों को आत्मा नाप कर मिला था यानी उनके लिए इस की सीमाएं थीं कि वे पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ क्या कर सकते हैं या क्या नहीं।

मसीह ने अपने प्रतिनिधि बनाने और अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए बारह पुरुषों को चुना था। इन लोगों को प्रेरित कहा जाता था। प्रेरित होने की एक योग्यता यह थी कि वह यीशु की सेवकाई के आरम्भ से लेकर उसके जी

उठने के समय तक बराबर उसके साथ रहा हो। यह विशेष शर्त इस बात को दिखाती है कि हमारे बीच में आज कोई प्रेरित नहीं है। धार्मिक जगत में कुछ लोग चाहे इस सम्मान को पाने का दावा करते हैं।

यह जानते हुए कि जी उठे प्रभु के रूप में वह स्वर्ग में पिता के पास लौट जाएगा, यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा, ''तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा'' (यूहन्ना 16:7)। सहायक की पहचान कराते हुए उसने फिर कहा, ''परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हे स्मरण कराएगा'' (यूहन्ना 14:26)।

यीशु की प्रतिज्ञा के अनुसार प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने के बाद सहायक अर्थात पवित्र आत्मा ने कई काम करने थे (प्रेरितों 2)। उसने उनका सहायक होना था, उन्हें सब सत्य का मार्ग बताना था, उन सब बातों को स्मरण कराना था जो यीशु ने उन्हें बताईं थीं, उन्हें अन्य भाषाएं बोलने के योग्य बनाना था और लोगों को यकीन दिलाने के लिए कि उन्हें परमेश्वर की ओर से भेजा गया था आश्चर्यकर्म करने थे।

परन्तु प्रेरितों ने वह सब काम जो किया जाना आवश्यक था, नहीं कर सकना था। प्रेरितों 6 में हम पढ़ते हैं कि प्रभु ने उन्हें चुने हुए चेलों पर हाथ रखने के योग्य बनाया ताकि उन्हें भी पवित्र आत्मा के द्वारा आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल सके। एक और जहां प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने का नाप मिला था और वे दूसरों पर हाथ रखने के द्वारा उन्हें आश्चर्यकर्म करने की शक्ति दे सकते थे, दूसरी ओर वे चेले जिन्हें पवित्र आत्मा का हाथ रखने का नाप मिला था दूसरों को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति आगे नहीं दे सकते थे। अपने अध्ययन में इस पर हम आगे और सीखेंगे।

अंत में, प्रेरितों 2:38 के अनुसार पापों को धोने के लिए पानी में बपतिस्मा लेने के समय दूसरे सब लोगों को आत्मा का साधारण या गैर चमत्कारी नाप मिला।

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के द्वारा और उनके द्वारा जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, उन्हें आश्चर्यकर्म करने की शक्ति देने और परमेश्वर का वचन लिखने की प्रेरणा देने के द्वारा काम किया। उस वचन की शिक्षा के अनुसार नया नियम पूरा हो जाने के बाद आत्मा आज वचन के द्वारा, और हमारे साथ यानी उस वचन की शिक्षा के अनुसार काम करता है।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. पवित्र आत्मा कोई ''वस्तु'' है या व्यक्ति?
2. तीन व्यक्तियों .... , ... और .... में एक ही परमेश्वर [इब्रानी: achid जिसका अर्थ एक हुए है न कि अकेला एक] है (मत्ती 28:19)।
3. इफिसियों 4:4–6 हमें क्या बताता है? रोमियों 15:30 क्या बताता है?
4. ''अकेला यीशु'' की शिक्षा क्या है?
5. 2 पतरस 1:17–21 के अनुसार, परमेश्वरत्व के किस व्यक्ति ने भविष्यवक्ताओं और लेखकों को परमेश्वर का वचन लिखने की प्रेरणा दी?
6. 29 प्वायंटों वाली सूची में से 5 प्वायंट चुनकर उन पर चर्चा करें जो पवित्र आत्मा के काम के बारे में अधिक स्पष्टता से बताते हैं।
7. मरियम .... की ओर से गर्भवती पाई गई थी। इससे हमें परमेश्वरत्व के एक होने का कैसे पता चलता है?
8. यीशु के बपतिस्मा लेने पर क्या हुआ था?
9. यूहन्ना 3:34 हमें उस सामर्थ के स्त्रोत के बारे में क्या बताता है जिस से यीशु आश्चर्यकर्म करता था?
10. यूहन्ना 14:26 में यीशु ने प्रेरितों से क्या प्रतिज्ञा की थी?

पाठ 2

वह तुम्हें पवित्र आत्मा के साथ और आग से बपतिस्मा देगा

वचन हमें बताता है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए आया था। अन्य शब्दों में, वह मन फिराव तथा पानी में बपतिस्मे का प्रचार करता रहा। मसीह चाहे परमेश्वर की दृष्टि में सिद्ध था, पर फिर भी उसकी सारी धार्मिकता को पूरा करने के लिए यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए उसके पास आया। बाद में यीशु ने अपने प्रेरितों को इस प्रचार के लिए भेजना था कि **''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:16)।**

मसीह और अपने बीच के फासले को समझाते हुए यूहन्ना ने यूं कहा था, **''मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं'' (मत्ती 3:11-12)।** यूहन्ना भला यहां पर क्या कह रहा है? आइए बड़े ध्यान से इसे देखें और इन बातों को समझने की कोशिश करें। यकीनन परमेश्वर चाहता है कि हम इन बातों को जानें, और यकीनन हम इन बातों को जान सकते हैं।

शुरु में, यूहन्ना यह दिखाता है कि मसीह ने उससे बहुत बड़ा होना था। उसने कहा कि वह तो मन फिराव के लिए पानी के साथ बपतिस्मा देता था,

पर मसीह ने पवित्र आत्मा के साथ और आग के साथ बपतिस्मा देना था।

डिनोमिनेशनों में पवित्र आत्मा और आग के बपतिस्मे के विषय में बहुत कुछ कहा जाता है। कहा जाता है कि आज दोनों ही बपतिस्मे लागू हैं। प्रचार किया जाता है कि आज विश्वासियों के लिए ''पवित्र आत्मा का बपतिस्मा'' लेना आवश्यक है, और दावा किया जाता है कि यह बपतिस्मा लेने वालों के पास चमत्कार करने की सामर्थ होती है। ''आग का बपतिस्मा'' शुद्ध किए जाने की प्रक्रिया या जीवन में आने वाली परेशानियों में से निकलते हुए कठिनाई को सहना बताया जाता है। कहा जाता है कि इससे व्यक्ति प्रभु की सेवा के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो जाता है। सवाल यह है कि क्या बाइबल ऐसा सिखाती है या फिर यह कुछ और बताती है?

पवित्र आत्मा के और आग के बपतिस्मे को समझने के लिए, हमें उस संदर्भ को देखना आवश्यक है जिसमें इसे दिए जाने की बात की गई है। यूहन्ना एक किसान की बात करता है जो गेहूं में से भूसी को उड़ा रहा होता है तथा अच्छे अनाज को सम्भालते हुए गेहूं को गाह रहा होता है, परन्तु भूसी को जलाने के लिए अलग कर रहा होता है। अब वह कहता है कि मसीह लोगों के साथ ऐसा ही करेगा। उसके पास लोगों को पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा देने, या पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा उन्हें आशीषित करने का अधिकार है। परन्तु भूसी, यानी बुरे लोगों को लेकर जलने के लिए आग में डाल दिया जाएगा। अन्य शब्दों में, उन्हें आग के साथ बपतिस्मा दिया जाएगा। इसका मतलब यह हुआ कि यूहन्ना यहां पर दो बपतिस्मों की बात कर रहा है, जिनमें से एक तो धर्मियों के लिए है, जबकि दूसरा दुष्टों के लिए।

वचन में आगे हम देखते हैं कि यीशु ने अपने चले जाने के बाद प्रेरितों के पास एक सहायक अर्थात पवित्र आत्मा भेजने का वायदा किया था। यूहन्ना 14 अध्याय को ध्यान से पढ़ने पर पता चलता है कि यह बपतिस्मा देने का अधिकार केवल मसीह के पास था और यह बपतिस्मा देने का वायदा केवल प्रेरितों को दिया गया था। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाकर उन्हें उन सब बातों को याद करने की जो यीशु ने उनके साथ रहते समय उन्हें बताई थीं, सच्चाई को बताने, होने वाली बातें बताने, अन्य भाषाओं में बोलने तथा आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल जानी थी। उन्हें यह सामर्थ लोगों को यह यकीन दिलाने के लिए दी जानी थी कि परमेश्वर ने उन्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर और अपनी इच्छा लोगों को बताने के लिए भेजा है।

हमें बताया गया है कि यह सामर्थ मिल जाने के बाद ''उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिह्नों

के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा'' (मरकुस 16:20)। परन्तु यह सब कब तक होता रहा? जब तक प्रेरित इस पृथ्वी पर जीवित रहे, क्योंकि केवल उन्हीं को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने का वायदा दिया गया था। तब तक नया नियम लिखित रूप में दे दिया जा चुका था और वचन को पक्का करने के लिए चिह्नों और चमत्कारों की आवश्यकता नहीं रही थी, क्योंकि यह तो पहले ही पक्का हो चुका था।

आज बहुत से ऐसे लोग हैं, जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए होने का दावा करते हैं, परन्तु वे एक दूसरे का विरोध करते हैं, ऐसी–ऐसी शिक्षाओं को मानते तथा सिखाते हैं जो बाइबल के विपरीत हैं, ऐसी–ऐसी कलीसियाओं में हैं जिनके बारे में हमें बाइबल में पढ़ने को नहीं मिलता। और तो और वे ऐसे–ऐसे काम करते हैं जो परमेश्वर के वचन का सीधा–सीधा विरोध करते हैं। तो फिर वे कैसे कह सकते हैं कि उन्हें भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा वैसे मिला है जैसे प्रेरितों को मिला था और वे पवित्र आत्मा की अगुआई से बोलते हैं? सच तो यह है कि उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला ही नहीं है। ऐसे लोग खुद तो धोखे में हैं ही, वे दूसरों को भी धोखा देते हैं।

मसीह की सामर्थ के द्वारा ही पिंतेकुस्त के दिन प्रेरितों के ऊपर (प्रेरितों 2) पवित्र आत्मा बहाया गया था। बाद में कुरनेलियुस के घर जाने के निर्देशों को मानने और उन्हें सुसमाचार सुनाने पर पतरस खुद दंग रह गया था। ''जब मैं बातें करने लगा तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था'' (प्रेरितों 10:44–46; 11:15)। आप देखेंगे कि इन अन्यजातियों में से सबसे पहले मसीह में आने वालों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पतरस की सामर्थ से नहीं, बल्कि परमेश्वर के काम करने से मिला था। यह आज के उन प्रचारकों के लिए एक चेतावनी होनी चाहिए जो पवित्र आत्मा को उनके ''विश्वासियों'' पर उतरने की आज्ञा देते हैं। मनुष्य परमेश्वर के आत्मा को आज्ञा नहीं देता है!

यह भी ध्यान दें कि प्रेरितों 2 में वर्णित पिंतेकुस्त वाले दिन पहली बार सुसमाचार सुनाए जाने के कई सालों बाद होने के बावजूद, प्रेरितों 11 में पतरस की बात से हम यह पक्का कह सकते हैं कि समय के उस अंतराल में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा किसी और को नहीं मिला था। पतरस ने क्या कहा था? कि ''पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था।'' जो कुछ हुआ था उस सब को देखकर पतरस खुद दंग था! स्पष्ट है कि परमेश्वर ने यह साबित करने के लिए कि वह किसी का पक्ष नहीं लेता और योएल की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए कि ''यहूदी हो

या अन्यजाति सब प्राणी'' मसीह के द्वारा उद्धार की आशीष पाएंगे, आत्मा के इस बहाए जाने को गवाही के रूप में इस्तेमाल किया कि उसने अन्यजातियों में से मनपरिवर्तन करने वालों को कलीसिया में स्वीकार करना था (प्रेरितों 10, 11)।

बाइबल में, किसी के भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के, केवल यही हवाले मिलते हैं। इस विशेष बपतिस्मे के इस्तेमाल का और इसे दिए जाने का समय बीत चुका है। यह इफिसियों 4:5 वाला वो ''एक ही बपतिस्मा'' नहीं है। इसके बावजूद, आज भी सब लोगों को, उसी बपतिस्मे के द्वारा आशीष दी जाती है क्योंकि प्रेरितों को सच्चाई का प्रचार करने और लिखित वचन देने के लिए पवित्र आत्मा की ओर से अगुआई दी गई थी।

पर उस दूसरे बपतिस्मे अर्थात आग के बपतिस्मे का क्या मतलब है? मसीह के पास धर्मियों को नहीं, बल्कि दुष्टों को यह बपतिस्मा देने का भी अधिकार है। बाइबल बताती है कि अन्त के दिन आज्ञा न मानने वालों को आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 19:20; 20:10)। हम पढ़ते हैं, ''डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है'' (प्रकाशितवाक्य 21:8)। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस आग के बपतिस्मे की बात यूहन्ना ने की थी उसे यीशु ने देना था। आइए हम प्रार्थना करें और प्रभु यीशु के आज्ञाकार बनने की कोशिश करें ताकि हमें वह बपतिस्मा न मिले।

बपतिस्मे का अर्थ गाड़े जाना या दफ़नाए जाना होता है। पाक रूह या पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने पर प्रेरितों पर पवित्र आत्मा उण्डेला गया था यानी उन्हें पवित्र आत्मा में डुबकी दी गई थी (प्रेरितों 2:1–4)। दुष्टों को आग में बपतिस्मा दिया जाने पर उन्हें आग की झील में डुबकी दी जाएगी या दफ़नाया जाएगा। किसी ने कहा है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की हमारी गाड़ी छूट गई है, आग के बपतिस्मे की गाड़ी अभी आई नहीं है, पर पानी के बपतिस्मे की गाड़ी स्टेशन पर खड़ी है, जो कि पापों की क्षमा के लिए है (प्रेरितों 2:38)।

इफिसियों 4:1–4 में पौलुस कहता है, ''इसलिए मैं जो प्रभु में बंदी हूं, तुम से विनती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो; और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।

एक ही देह [यानी कलीसिया] है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।''

आज भला, कितने बपतिस्मे हैं? परमेश्वर के वचन के अनुसार उतने ही बपतिस्मे हैं जितने कि परमेश्वर हैं, यानी केवल एक!

वचन के अनुसार, मैं जानता हूं कि आपको पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा नहीं मिला है, और मैं यह भी जानता हूं कि आपको आग का बपतिस्मा भी नहीं मिला, क्योंकि वह बपतिस्मा तो अभी किसी को भी नहीं मिला, वह तो अन्त के दिन दुष्टों को दिया जाएगा। तो फिर सवाल है कि क्या आपने वचन के अनुसार पापों की क्षमा के लिए पानी में बपतिस्मा ले लिया है?

सहायक का वायदा

यीशु इस संसार में पापियों का उद्धार करने के लिए आया था (1 तीमुथियुस 1:15)। हमें यह भी बताया गया है कि वह खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया था (लूका 19:10)। इसके और इस तथ्य के बावजूद कि मसीह ने निष्पाप जीवन जिया और वह केवल भलाई करता रहा फिर भी उसके शत्रु थे और अंत में उसने क्रूर क्रूस के ऊपर दे दिया जाना था। उसे यह सब मालूम था और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसका काम बंद न हो, उसने सिखाने और प्रशिक्षित करने के लिए बारह पुरुषों को चुना ताकि वे इस संसार से उसके चले जाने के बाद उसके काम को आगे बढ़ा सकें। उसे यह भी मालूम था कि वे हैं तो मनुष्य ही, जो गलती कर सकते थे कई बातों को जो उसने उन्हें बताई, या सिखाई थीं, या उन बहुत सी सच्चाइयों को जिन्हें वह चाहता था कि वे संसार को दें, समझने में भूल कर सकते थे। यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी अगुआई और निर्देशन बिल्कुल सही हो, उसने वायदा किया कि अपने जाने के बाद वह उनके लिए एक सहायक भेजेगा।

नये नियम में यूहन्ना की पुस्तक में हम उन कुछेक बातों को पढ़ते हैं जो सहायक के सम्बन्ध में लिखी गई हैं। प्रेरितों से बात करते हुए मसीह ने कहा, **''मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। 'मैं तुम्हें**

अनाथ नहीं छोडूंगा; मैं तुम्हारे पास आता हूं। और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे; इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे। उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में, और मैं तुम में। जिसके पास मेरी आज्ञाएं हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूंगा और अपने आप को उस पर प्रकट करूंगा' '' (यूहन्ना 14:16–21)।

प्रेरितों से मसीह ने कहा, ''**परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न डरे। तुम ने सुना कि मैंने तुम से कहा, 'मैं जाता हूं, और तुम्हारे पास फिर आऊंगा। यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूं, क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है**' '' (यूहन्ना 14:26–28)।

फिर मसीह ने समझाया, ''**परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा; और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो**'' (यूहन्ना 15:26, 27)।

आगे पढ़ने पर हम देखते हैं कि उस ने कहा, ''**तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा। वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते; और धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूं, और तुम मुझे फिर न देखोगे; न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।**

'मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे

और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे''' (यूहन्ना 16:7–16)।

अब इन सभी आयतों में हमें इन बातों का पता चलता है:

- **मसीह यहां केवल प्रेरितों से बात कर रहा था।**
- **इसलिए उसने सहायक का वायदा केवल उन्हीं को दिया, न कि संसार को और न ही अन्य चेलों को।**
- **सहायक का परिचय पवित्र आत्मा के रूप में कराया गया।**
- **सहायक ने प्रभु के चले जाने के बाद प्रेरितों पर आना था।**
- **सहायक यानी पवित्र आत्मा ने उनके साथ होना था, उन्हें वे सब बातें याद करवानी थीं जो यीशु ने उन्हें बताई थीं, उन्हें सब सत्य में अगुआई देनी थी, उन पर होने वाली बातें प्रकट करनी थीं, उन्हें अन्य भाषाओं में बोलने के योग्य बनाना था और उनके लिए आश्चर्यकर्म करना सम्भव बनाना था।**
- **उनके पास सहायक भेजने की सामर्थ या अधिकार केवल मसीह के पास होना था।**
- **सहायक के साथ प्रेरितों ने जो आरम्भ से प्रभु के साथ रहे थे, उसके गवाह होना था।**

लूका ने भी प्रेरितों पर पवित्र आत्मा को भेजने के मसीह के वायदे की बात की। अपनी मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने के बाद प्रभु प्रेरितों पर प्रकट हुआ, **''फिर उस ने उन से कहा, 'ये मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही थीं कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों।' तब उसने पवित्र शास्त्र बूझने के लिये उनकी समझ खोल दी, और उनसे कहा, 'यों लिखा है कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।' तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी; और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। तब वे उसको दण्डवत् करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए; और वे लगातार मन्दिर में उपस्थित**

होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे' '' (लूका 24:44–53)।

बाइबल के रिकॉर्ड में प्रेरितों 1:26 यहूदा की जगह मत्तियाह के प्रेरित चुने जाने के साथ समाप्त हो जाता है। यह आयत **''... अतः वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया''** के साथ खत्म हो जाती है। अब हम प्रेरितों 2 के साथ आरम्भ करने को तैयार हैं। याद रखें कि मूल हस्तलेख में कोई आयत या अध्याय नहीं है [क्योंकि बाइबल को पढ़ना और याद रखने के लिए इसे अध्यायों और पदों या आयतों में सदियों बाद बांटा गया]। विचार और गतिविधि की शृंखला अगली बात तक जारी रहती है। इसलिए आयत 26 का अंतिम संज्ञा शब्द ''प्रेरितों'' प्रेरितों 2:1 के आरम्भिक सर्वनाम ''वे'' के पूर्वपद का काम करेगा और इसे इस प्रकार पढ़ा जाएगा: **''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे** [यानी प्रेरित] **सब एक जगह इकट्ठे थे''** (प्रेरितों 2:1)। आगे पढ़ने पर वचन बताता है, **''एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया''** (प्रेरितों 2:2)।

इस आवाज़ से सारा घर गूंज गया, जहां **कौन** बैठा था? जहां *प्रेरित* बैठे थे। **''और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक** (यानी प्रेरितों) **पर, (जिन्हें पवित्र आत्मा देने का वायदा दिया गया था) आ ठहरीं।'' ''वे सब** (प्रेरित) **पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे** (प्रेरित) **अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे''** (प्रेरितों 2:3, 4)।

तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और बोलने लगा। ये ग्यारह कौन थे? बेशक ये प्रेरित थे। पतरस ने समझाया कि ये प्रेरित नशे में नहीं थे, जैसा कि भीड़ के कुछ लोग मजाक में सोच रहे थे, बल्कि यह जो हो रहा था यह तो योएल नबी के द्वारा कही गई परमेश्वर की बातों का पूरा होना था **''कि अंत के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूंगा''** (प्रेरितों 2:14–17)।

क्या परमेश्वर ने उस वायदे को पूरा किया? बिल्कुल, उस वायदे को पूरा करने के लिए उस ने यहूदी हो या अन्यजाति, सब आज्ञा मानने वालों को अपने आत्मा के नाप दिए:

(1) उस ने प्रेरितों [पौलुस को भी, जो अधूरे दिनों का जन्मा प्रेरित था] और कुरनेलियुस को **पवित्र आत्मा का बपतिस्मा** दिया।

(2) उस ने *प्रेरितों को चुने हुए चेलों के ऊपर* ***हाथ रखने*** *के* योग्य बनाया ताकि वे भी आत्मा के चमत्कारी दानों को पा सकें, जैसा कि प्रेरितों 6 अध्याय में दिखाया गया है।

(3) और अंत में प्रभु की आज्ञा मानने वाले सब लोगों को, आज हमारे समय में भी, पवित्र आत्मा का दान [यानी वास] मिलता है जो कि गैर चमत्कारी है (प्रेरितों 2:38)।

प्रेरितों 2 के अध्ययन को जारी रखते हुए हम प्रेरितों को वहां इकट्ठा हुए लोगों में सुसमाचार सुनाते देखते हैं जिस में लगभग 3,000 लोगों ने अपने पापों से मन फिराकर बपतिस्मा लेते हुए परमेश्वर की आज्ञा को माना था। जिसके परिणाम स्वरूप आयत 38 की प्रतिज्ञा के अनुसार उन्हें अपने पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा का दान मिला। आयत 47 कहती है कि प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिला लिया।

उसी अध्याय में यह भी ध्यान दिलाया गया है कि प्रभु की आज्ञा माननेवाले लोग प्रेरितों की शिक्षा में लौलीन रहे और प्रेरितों के हाथों से बहुत से अद्भुत काम और चिह्न होते थे। क्या ये चिह्न और अद्भुत काम बपतिस्मा लेने वाले सभी हज़ारों लोगों के हाथों से होते थे? नहीं, वचन साफ कहता है कि बपतिस्मा पाए हुए सभी विश्वासियों को आत्मा का दान बेशक मिलता था पर आश्चर्यकर्म केवल प्रेरित ही करते थे (प्रेरितों 5:12)।

सो आप देख सकते हैं कि इन सभी वचनों में प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के बहाए जाने पर जोर दिया गया है। क्यों भला? क्योंकि मसीह की ओर से केवल प्रेरितों को ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने का वायदा किया गया था। यदि एक सौ बीस लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया होता और सभी 3,000 लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया होता तो इसे उस दिन की घटनाओं के विवरण में लिखा जाता, और यदि आत्मा का बपतिस्मा पाए हुए उन सभी लोगों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिली होती तो प्रेरितों 6 में चेलों में से सात पुरुषों को चुनने की आवश्यकता नहीं होनी थी कि उनके सिर पर हाथ रखे जाएं ताकि उन्हें भी आश्चर्यकर्म करने की शक्ति मिल सके। इन बातों पर विचार करें। और जब आप इन पर विचार करेंगे तो साफ़ हो जाएगी।

निष्कर्ष? आज किसी को भी चमत्कार करने की शक्ति नहीं मिलती क्योंकि आज कोई भी प्रेरित जीवित नहीं है जो नये विश्वासियों पर हाथ रखकर उन्हें वह सामर्थ दे सकें। जो लोग ऐसी शिक्षा देते हैं वे पवित्र शास्त्र में आत्मा के दिए वचनों का ही विरोध करते हैं।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. यूहन्ना ने कहा कि जो उसके बाद आने वाला था उसने .... और .... से बपतिस्मा देना था।
2. डिनोमिनेशनों में इन दो बपतिस्मों को क्या बताया जाता है?

3. यूहन्ना 14 को पढ़ते हुए जहां मसीह पवित्र आत्मा की बात करता है, उसने उस बपतिस्मे का वायदा किस को दिया था? उस बपतिस्मे को देने का अधिकार केवल किसके पास था?
4. जो लोग आज पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए होने का दावा करते हैं वे एक दूसरे का .... करते हैं, ऐसी शिक्षाओं को मानते और सिखाते हैं जो बाइबल के .... हैं, ऐसी–ऐसी .... के सदस्य हैं जिनके बारे में बाइबल में पढ़ने को नहीं मिलता। और वे ऐसे–ऐसे .... करते हैं .... जो परमेश्वर के वचन का सीधा .... हैं।
5. प्रेरितों को छोड़ [जिसमें प्रेरित पौलुस भी है] वह बपतिस्मा और किसको मिला? (प्रेरितों 10:44–46; 11:15)।
6. प्रकाशितवाक्य 21:8 ''आग का बपतिस्मा'' की बात करता है। यह क्या होता है?
7. इफिसियों 4:1–4 के अनुसार आज कितने बपतिस्मे हैं?
8. यूहन्ना 14:26–28 के अनुसार पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के द्वारा क्या करना था?
9. प्रेरितों 1:26 में ''वे'' के पूर्वपद को देखते हुए, प्रेरितों 2:3, 4 में पवित्र आत्मा के बहाए जाने को पढ़ने, और प्रेरितों 2:14 की विशेष बात को ध्यान में रखते हुए, प्रेरितों 1:15 वाले 120 लोगों को बपतिस्मा मिला था या फिर केवल प्रेरितों को?
10. प्रेरितों 5:12 उनके बारे में बताता है जो उस समय आश्चर्यकर्म कर रहे थे? तो दूसरों को कब और कैसे आश्चर्यकर्म करने के योग्य बनाया गया? क्या आज संसार में कोई प्रेरित पाया जाता है जिसके पास लोगों को ये शक्तियां देने के लिए उनके ऊपर हाथ रखने की सामर्थ हो?

पाठ 3

पवित्र आत्मा के नाप

प्रेरित यूहन्ना ने मसीह के लिए कहा, ''क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है; क्योंकि वह आत्मा नाप–नाप कर नहीं देता'' (यूहन्ना 3:34)। यूहन्ना के यह कहने का क्या अर्थ था कि मसीह को आत्मा बिना नाप के दिया गया था? ''नाप–नाप'' कर देने में एक सीमा का संकेत है। अन्य शब्दों में, यूं कहें कि परमेश्वर अगर मसीह को आत्मा नाप कर देता तो इसका अर्थ यह होना था कि जो कुछ उस ने किया उस सब में तो है ही, उसके पास पवित्र आत्मा भी सीमित ही होना था। पर परमेश्वर ने उसे आत्मा ''नाप–नाप कर'' नहीं बल्कि ''बिना'' नाप के दिया था। इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह पर आत्मा की सामर्थ के इस्तेमाल में न तो परमेश्वर ने और न ही आत्मा ने किसी प्रकार की कोई पाबंदी लगाई।

हमारे प्रभु को आत्मा बिना नाप के मिला था, जिस कारण वह दुष्ट आत्माओं को निकालने तथा मुर्दों को जिलाने, तूफ़ान को थाम देने, पानी को दाखरस में बदलने, पानी पर चलने आदि सहित बड़े–बड़े आश्चर्यकर्म कर पाया। इन सब के अलावा यूहन्ना ने लिखा कि ''यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ'' (यूहन्ना 20:30–31)।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

ऐसे बहुत से लोग हैं जिनका मानना है कि प्रेरित हों या आज हमारे समय के मसीही लोग, प्रभु के सब लोगों को या तो पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का

नाप मिला है या फिर मिलना चाहिए। बहुत से लोग तो वह बपतिस्मा पाने के लिए प्रार्थना करते हैं जबकि ऐसे भी जो इतने हठी होते हैं कि वे परमेश्वर से उन्हें यह बपतिस्मा देने की मांग तक करते हैं! हम देखेंगे कि ऐसी उम्मीद करना उचित नहीं है।

सबसे पहले तो इस बात को याद रखें कि मसीह ने सहायक या पवित्र आत्मा भेजने का वायदा केवल प्रेरितों को किया था। उसने अपने सब चेलों के साथ या भविष्य में होने वाले सब चेलों के साथ यह वायदा नहीं किया था।

यूहन्ना की पुस्तक में हम पढ़ते हैं, **''परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा; और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो'' (यूहन्ना 15:26-27)।**

फिर, उसने कहा, ''तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा'' (यूहन्ना 16:7)।

आगे उसने कहा, ''परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा'' (यूहन्ना 16:13)। अब, ध्यान से देखें कि प्रभु यहां किससे बात कर रहा था? अगर आप संदर्भ को देखें, और ध्यान दें तो पाएंगे कि यीशु क्या कह रहा है। यह बिल्कुल साफ़ है कि वह यहां पर अपने प्रेरितों से यानी उनके साथ बात कर रहा है जो आरम्भ से उसके साथ रहे थे (यूहन्ना 15:27)। तो फिर सवाल यह है कि क्या प्रभु ने अपना वायदा निभाया?

इससे पहले कि हम यह देखें कि अंत में क्या हुआ, आइए इन बातों पर विचार करते हैं जो प्रभु ने स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस जाने से पहले प्रेरितों से कही थीं, ''और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो'' (लूका 24:49)। क्या यह बात आज के किसी भी व्यक्ति के लिए लागू हो सकती है? यकीनन नहीं!

लूका ने यह भी लिखा, ''हे थियुफिलुस, मैं ने पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी जो यीशु आरम्भ से करता और सिखाता रहा, उस दिन तक जब तक वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया। उसने दु:ख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक

वह उन्हें दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, 'यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे' '' (प्रेरितों 1:1–5)।

फिर यीशु ने कहा, ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे'' (प्रेरितों 1:8)। यकीनन इन बातों से हम देखते हैं कि यीशु मसीह ने अपने चेलों को पवित्र आत्मा की सामर्थ देने का वायदा किया था। अगर यह वायदा प्रेरितों के लिए था तो फिर आत्मा किन्हें मिला? केवल प्रेरितों को या फिर सब विश्वासियों को?

प्रेरितों 2 में हम पढ़ते हैं, ''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य–अन्य भाषा बोलने लगे'' (प्रेरितों 2:1–4)। इस अध्याय को पढ़ते–पढ़ते हम देखते हैं कि प्रेरित लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ को वचन सुना रहे थे जिनमें से 3,000 के लगभग लोगों ने सुसमाचार की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया और उद्धार पाने पर परमेश्वर ने उन्हें कलीसिया में मिला लिया (प्रेरितों 2:47)। हमें यह भी मिलता है, **''और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिह्न प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे'' (प्रेरितों 2:43)।**

यह इस प्रतिज्ञा का पूरा होना था कि मसीह ने पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देना था (मत्ती 3:11, 12)। बपतिस्मा शब्द की परिभाषा दफ़नाए जाने, डुबकी और अभिभूत करने वाले काम के रूप में की जाती है। यह ''दफ़नाया जाना'' पानी या किसी भी और चीज़ में हो सकता है। आत्मा में भी हो सकता है। इसलिए वचन कहता है कि पिन्तेकुस्त के दिन जब प्रेरित यरूशलेम नगर में इकट्ठा थे तो ''**आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज [यानी भर] गया'' (प्रेरितों 2:2)।** या यूं कहें कि प्रेरितों को पवित्र आत्मा में दफ़नाया गया और उनके आत्मा से भरे होने के सबूत के रूप में वे अन्य–अन्य भाषा बोलने लगे थे (प्रेरितों 2:3, 4)। इन भाषाओं को समझा जा सकता था क्योंकि सुनने वाले हैरान थे

कि उन्हें वे अपनी–अपनी मातृ भाषा में बोलते हुए सुन रहे थे (प्रेरितों 2:6)!

प्रेरितों के काम के अध्याय 5 में आगे पढ़ें तो (आयत 12), यही बात उन आश्चर्यकर्म करने वालों के विषय में फिर से कही गई है: **''प्रेरितों के हाथों से बहुत चिह्न और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे'' (प्रेरितों 5:12)।** तो, निष्कर्ष यह है कि उस दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल प्रेरितों को मिला था। उस दिन किसी ने आत्मा का बपतिस्मा पाने के लिए प्रार्थना नहीं की थी और न ही किसी ने आत्मा को उतर आने की आज्ञा दी थी, जैसा कि आज के झूठे शिक्षक अक्सर किया करते हैं। **वह बहाया जाना केवल परमेश्वर की ओर से था!**

पवित्र शास्त्र में प्रेरितों (शाऊल सहित जो पौलुस के नाम से प्रसिद्ध हुआ) को छोड़, पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का केवल एक और मामला मिलता है और वह कुरनेलियुस और उसके घराने का है, जो कि अन्यजाति थे। प्रेरित यहूदी थे और उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पहले ही मिला हुआ था। यह साबित करने के लिए कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, अन्यजातियों के इस परिवार को भी आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था।

प्रेरितों के काम 10 और 11 में हम इन लोगों के बारे में पढ़ते हैं। ''कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का एक मनुष्य था, जो इतालियानी नामक पलटन का सूबेदार था। वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उस के पास भीतर आकर कहता है, 'हे कुरनेलियुस!' उस ने उसे ध्यान से देखा और डरकर कहा, 'हे प्रभु, क्या है?' उस ने उस से कहा, 'तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं; और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह शमौन, चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहां अतिथि है, जिसका घर समुद्र के किनारे है' '' (प्रेरितों 10:1–6)।

यह प्रभु की इस बात को साबित करते हुए कि वह किसी का पक्ष नहीं करता, पतरस को कुछ सबक सिखाने के साथ हुआ जिसमें पतरस तथा अन्य लोग कुरनेलियुस और उसके घराने के पास आए। वचन आगे कहता है, ''तब पतरस ने कहा, 'अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है' '' (प्रेरितों 10:34, 35)।

फिर पतरस वहां इकट्ठा हुए लोगों को सुसमाचार सुनाता है, और हम पढ़ते हैं कि ''पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि **अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है।** क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति–भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा, 'क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?' और उसने आज्ञा दी कि 'उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए।' तब उन्होंने उससे विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे'' (प्रेरितों 10:44–48)।

प्रेरितों 11 में हम पढ़ते हैं कि पतरस को कुरनेलियुस और उसके घराने के लोगों के द्वारा प्रभु की आज्ञा मानने पर जो कुछ कैसरिया में हुआ था, उसे बताने के लिए जब यरूशलेम की कलीसिया की ओर से बुलाया गया तो उसने बताया कि ''जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था। तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया; जो उसने कहा था, **'यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।** अत: जब परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?' यह सुनकर वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, **'तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है'** '' (प्रेरितों 11:15–18)।

वचन यहां पर साफ़ बताता है कि कुरनेलियुस और उसके घराने के लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था, बिल्कुल वैसे जैसे आरम्भ में यानी यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन पतरस और अन्य प्रेरितों को मिला था। ध्यान दें कि यह एक विशेष बात थी, यानी ऐसा नहीं जब भी कोई विश्वासी बनता हो तब ऐसा ही होता हो। यहां तक कि पतरस को इसका एक और उदाहरण देने के लिए वर्षों पहले हुई उस घटना को याद करना पड़ा जब प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था।

बाकी के और मसीही लोगों को क्या मिला? क्या उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला? नहीं, उन्हें नहीं मिला। यदि सब मसीही लोगों को वह बपतिस्मा मिल जाता जिसे परमेश्वर द्वारा दिया जाता था तो प्रेरितों और कुरनेलियुस और उसके घराने के लोगों को दिए जाने में क्या फर्क होना था?

पर कोई कह सकता है, ''बेशक आज कुछ मसीही लोग होंगे जिन्हें पवित्र

आत्मा का बपतिस्मा मिला हुआ है।'' नहीं, आज किसी पर भी आत्मा के बहाए जाने की बात लागू नहीं होती। मान लीजिए अगर हुई भी हो, तो इसका उद्देश्य क्या होगा?

पहली सदी में सुसमाचार नया–नया सुनाया जा रहा था और पवित्र शास्त्र के लिखे जाने की प्रक्रिया जारी थी। इस कारण प्रेरित लोग प्रचार करने के लिए जहां भी जाते, **''... प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिह्नों के द्वारा जो साथ–साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन'' (मरकुस 16:20)।** आज हमें दिशा देने के लिए मुकम्मल हो चुका लिखित वचन है और जब हम इसकी शिक्षा को मान लेते हैं तो प्रभु हमारा उद्धार वैसे ही करता है जैसे उसने वायदा किया था कि वह करेगा। आज पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने का दावा करने वाले लोग पवित्र शास्त्र को न समझ पाने और इसके दुरुपयोग के आधार पर यह दावा करते हैं जो साफ़ साफ़ इस बात का दावा करता है कि उनके पास वह नहीं है जिसे पाने का वे दावा करते हैं क्योंकि आत्मा ने लिखित वचन में अपनी ही दी हुई बातों का विरोध नहीं करना था!

पवित्र आत्मा का ''हाथ रखने'' का नाप

अब हम पवित्र आत्मा के ''हाथ रखने'' के नाप के बारे में और जानना चाहते हैं। इन बातों के अध्ययन में हमारी दिलचस्पी खास तौर पर इस कारण है क्योंकि इस विषय पर बहुत सी गलत शिक्षाओं के साथ–साथ आत्मा और उसके काम करने के सम्बन्ध में बहुत सी नासमझी पाई जाती है।

मसीह के लिए यूहन्ना ने कहा, ''क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है; क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता। पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं'' (यूहन्ना 3:34, 35)। यानी मसीह को आत्मा की सामर्थ बिना नाप के मिली थी यानी आत्मा के द्वारा किया जाने वाला उसका कोई भी काम सीमित नहीं था। परन्तु यदि मसीह को आत्मा ''बिना नाप के'' मिला तो इसका अर्थ यह है कि दूसरों को वह ''नाप कर'' मिला। यह इस बात का सुझाव देगा कि उनके पास आत्मा की सामर्थ तो थी, पर वे उस सामर्थ का इस्तेमाल एक हद तक कर सकते थे।

उदाहरण के लिए हमने अपने अध्ययन में देखा है कि पवित्र आत्मा के

साथ और आग के साथ बपतिस्मा देने की सामर्थ केवल प्रभु के पास थी (मत्ती 3:11)। यह पुष्टि करने के लिए कि उसके पास बिना नाप के आत्मा की सामर्थ थी (मत्ती 3:13–17), हमें याद रखना आवश्यक है कि इन बपतिस्मों को केवल वही दे सकता था।

जहां तक पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की बात है, पहली बात तो यह कि मसीह ने केवल प्रेरितों से वायदा किया था कि वह उनके लिए सहायक भेजेगा जो कि पवित्र आत्मा था (यूहन्ना 14:26)। इस वायदे को लूका 24:49 में और प्रेरितों 1:8 में दोहराया गया। प्रेरितों 2:1–4 में हम पढ़ते हैं कि प्रेरितों को सचमुच में बपतिस्मा दिया गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि यह पवित्र आत्मा का बपतिस्मे का नाप था। बेशक उन्हें यह मिला था और इसका एक उद्देश्य था, पर वे दूसरों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं दे सकते थे। इसका अर्थ यह है कि आत्मा का इस्तेमाल वे केवल इसी हद तक कर सकते थे।

प्रेरित केवल बारह थे और उन्हें सारे संसार में सुसमाचार को पहुंचाने की आज्ञा दी गई थी। यानी उन्हें एक बहुत बड़ा काम सौंपा गया था। इसके अलावा प्रेरितों 6 अध्याय में हम पढ़ते हैं जहां वे चेलों की भौतिक आवश्यकताओं में उनकी सहायता में उलझ गए थे। यहां पर वचन हमें बताता है, ''तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, 'यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने–पिलाने की सेवा में रहें। इसलिये, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे' '' (प्रेरितों 6:2–4)।

आइए अब हम प्रेरितों के सुझाव से सम्बन्धित कुछ अवलोकन करें: ऐसे लोग हैं जो इस बात की वकालत करते हैं कि या तो (1) सब मसीही लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता है, या यकीनन (2) वे इसे पा सकते हैं। पर साफ़ है कि **प्रेरितों 6 अध्याय तक प्रभु की आज्ञा मानने वाले लोगों में सबको पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला था।** हमें यह मालूम है क्योंकि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के बावजूद वे कोई आश्चर्यकर्म नहीं कर रहे थे।

साफ़ है कि प्रेरितों को इस बात की समझ थी कि आम मसीही लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला है जिस कारण चुने हुए सात चेलों के पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं थी। तर्कसंगत रूप में, यदि उनके पास ऐसी सामर्थ होती तो चेलों के लिए उनमें से जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे उस काम में सहायता के लिए जो किया जाना आवश्यक था, सात पुरुषों को चुनना आवश्यक नहीं होना था!

इस तथ्य का कि प्रेरितों ने कहा कि सात पुरुषों को चुन लो जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हों, कुछ और अवलोकन करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना तो सम्भव था पर आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ अभी भी उनके पास नहीं थी! परन्तु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने और पवित्र आत्मा का नाप होने में जिससे व्यक्ति को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति मिल जाए क्या अंतर होगा? साफ़ है कि अंतर इस तथ्य में था कि आत्मा के अलग–अलग नाप थे। प्रेरितों को बपतिस्मे का नाप मिला था जिससे वे आश्चर्यकर्म करने के दानों वाले सारे काम कर सकते थे, जैसे अन्य भाषाओं में बोलना, बीमारों को चंगा करना, मुर्दों को जिलाना, परमेश्वर की प्रेरणा से प्रचार करना और लिखना तथा अन्य प्रकार के आश्चर्यकर्म।

परन्तु इसके उलट उन चेलों को जिन्हें प्रेरितों के काम में उनकी सहायता के लिए चुना गया था, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के बावजूद, केवल आत्मा का दान यानी वास ही मिला था जिसकी प्रतिज्ञा प्रेरितों 2:38 में की गई थी। इस दान के पाने वालों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं मिली थी क्योंकि प्रेरितों 5:12 से पता चलता है कि तब आश्चर्यकर्म केवल प्रेरित ही कर सकते थे।

इन चुने हुए चेलों को आत्मा का कौन सा नाप मिलना था? वचन बताता है कि उनके चुने जाने के बाद उन्हें ''प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे'' (प्रेरितों 6:6)। तो यह क्या था? यह पवित्र आत्मा का हाथ रखने का नाप था। प्रेरितों ने ही इन पुरुषों के ऊपर हाथ रखे थे इसलिए **केवल प्रेरितों के पास ही आत्मा का यह नाप देने की सामर्थ थी।**

परन्तु ये सात चेले बाद में क्या कर सकते थे? आगे पढ़ने पर हम देखते हैं कि ''स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े–बड़े अद्‌भुत काम और चिह्न दिखाया करता था'' (प्रेरितों 6:8)। बाकी क्या करते थे? वे ऐसा ही कर सकते थे जैसा कि हम अध्याय 8 में पढ़ते हैं, परन्तु याद रखें कि प्रेरितों के उन पर हाथ रखने से पहले वे ये सब बातें नहीं कर सकते थे।

पवित्र आत्मा के हाथ रखने के नाप से ये सातों चेले आश्चर्यकर्म तो कर सकते थे परन्तु इस दान को दूसरों को आगे नहीं दे सकते थे। उदाहरण के लिए फिलिप्पुस मसीह का प्रचार करने के लिए निचले इलाके सामरिया में चला गया, ''जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और **जो चिह्न वह दिखाता था उन्हें देख देखकर,** एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत

से लकवे के रोगी और लंगड़े भी अच्छे किए गए; और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया'' (प्रेरितों 8:6–8)।

आगे हम पढ़ते हैं, ''जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे, सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था; उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया'' (प्रेरितों 8:14–17)।

जैसे पहले ध्यान दिलाया गया था कि इन सातों पर प्रेरितों ने हाथ बेशक रखे थे ताकि वे पवित्र आत्मा की चमत्कारी सामर्थ को पा सकें, पर इस सामर्थ को वे आगे नहीं दे सकते थे। यदि दे सकते होते तो फिलिप्पुस ने, जो उनमें से एक था, नये बने मसीही लोगों को अलौकिक शक्ति की आशीष देने के लिए योग्य लोगों को चुन लिया होता। इसके बजाय दो प्रेरितों को चलकर सामरिया में आना पड़ा और उन्होंने नये विश्वासियों में से कुछ लोगों के ऊपर हाथ रखे ताकि उन्हें आश्चर्यकर्म करने की शक्ति मिल सके जिससे वे उस जगह पर काम करने में सहायता कर सकें [याद रखें, नया नियम अभी लिखा नहीं गया था सो नये विश्वासियों के लिए सुसमाचार को फैलाने के लिए आत्मा की अगुआई की आवश्यकता थी]।

यकीनन प्रेरितों ने देश भर में बहुत से चेलों के ऊपर यानी उनके ऊपर जो ईमानदार, खरे और उस विशेष सामर्थ को पाने के योग्य थे, हाथ रखे। इससे मसीह का काम बढ़ा और स्थानीय मण्डलियों में परिपक्वता आई। परन्तु जब प्रेरित मर गए और वे भी जिनके ऊपर उन्होंने हाथ रखे थे, मर गए तो आश्चर्यकर्मों का युग खत्म हो गया! अब आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि अब नया नियम दिया जा चुका था। अब अगुआई और दिशा देने के लिए हम सब के पास बेहतर तरीका है क्योंकि हमारे पास परमेश्वर का लिखित वचन है।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. मसीह ने आश्चर्यकर्म क्यों किए? (यूहन्ना 20:30, 31)। उसे ''बिना नाप के'' आत्मा दिया गया था। उसकी सामर्थ के सम्बन्ध में इसका क्या अर्थ है?

2. प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने का अधिकार केवल .... के पास था (यूहन्ना 14:16–21)। ''पवित्र आत्मा का बपतिस्मा'' पाने से वे क्या कर सकते थे? (प्रेरितों 2:43; यूहन्ना 14:26–28)।
3. प्रेरित आत्मा का ''हाथ रखने'' का नाप दे सकते थे (प्रेरितों 6:6)। इस से इसे पाने वाले क्या कर सकते थे? (प्रेरितों 6:8)।
4. क्या इस नाप को पाने वाले लोग मसीह में आने वाले अन्य लोगों को आत्मा की किसी प्रकार की सामर्थ दे सकते थे? (प्रेरितों 8:5–18)।
5. क्या प्रेरित किसी को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दे सकते थे?
6. पतरस के कुरनेलियुस और उसके घराने को वचन सुनाने के दौरान क्या हुआ? यह किसने करवाया था?
7. प्रेरितों 5:12 के अनुसार कलीसिया की उन्नति में उस समय आश्चर्यकर्म कौन कर रहा था?
8. प्रेरितों 6:8 और 8:6, 7 के अनुसार कलीसिया की आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रेरितों की सहायता के लिए सात जनों (पुरुषों) को चुन लिए जाने के बाद, वे क्या कर सकते थे?
9. पहली सदी के दौरान सिखाने वालों के आश्चर्यकर्म के द्वारा प्रेरणा की शक्ति के उपयोग के मुख्य कारण क्या थे?
10. आश्चर्यकर्मों के युग का स्वाभाविक अंत कब हुआ? तब तक क्या पूरा हो चुका था?

पाठ 4

शमौन जादूगर को पवित्र आत्मा की सामर्थ देने से मना क्यों किया गया था?

पहली सदी में सुसमाचार के प्रसार के विवरण में, आगे हम पढ़ते हैं कि फिलिप्पुस सामरिया में वहां के लोगों में मसीह का प्रचार करने के लिए गया। पर आप को कहानी का सार बताने के बजाय, मैं चाहूंगा कि हम वचन में से देखें कि वहां हुआ क्या था। लिखा है, ''जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिह्न वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के रोगी और लंगड़े भी अच्छे किए गए; और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया।

इस से पहले उस नगर में शमौन नामक एक मनुष्य था, जो जादू–टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को एक बड़ा पुरुष बनाता था। छोटे से बड़े तक सब उसका सम्मान कर कहते थे, 'यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान् कहलाती है।' उस ने बहुत दिनों से उन्हें अपने जादू के कामों से चकित कर रखा था, इसी लिये वे उसको बहुत मानते थे। परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री, बपतिस्मा लेने लगे। तब शमौन ने स्वयं भी विश्वास किया और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा। **वह चिह्न और बड़े–बड़े सामर्थ्य के काम होते देखकर चकित होता था।**

जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे, सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। उन्होंने

जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था; उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। **तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।**

जब शमौन ने देखा कि **प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है,** तो उनके पास रुपये लाकर कहा, 'यह अधिकार मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पाए।'

पतरस ने उस से कहा, 'तेरे रुपये तेरे साथ नष्ट हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया। इस बात में न तेरा हिस्सा है, न भाग; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं। इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए। क्योंकि मैं देखता हूं कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है।'

शमौन ने उत्तर दिया, 'तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं, उनमें से कोई मुझ पर न आ पड़े।' अत: वे गवाही देकर और प्रभु का वचन सुनाकर यरूशलेम को लौट गए, और सामरियों के बहुत से गांवों में सुसमाचार सुनाते गए'' (प्रेरितों 8:6–25)।

फिलिप्पुस उन सात में से था जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके और यह वही प्रचारक था जो सामरिया के लोगों के बीच मसीह का प्रचार करने के लिए गया था। सामरिया में प्रचार करने के अलावा उसने कई आश्चर्यकर्म यह दिखाने के लिए किए थे कि वह सचमुच में परमेश्वर का संदेश ही बता रहा था, जिसमें उसने दुष्टात्माओं को भी निकाला तथा ऐसे–ऐसे और काम किए।

इस सब से हमें बताया गया है कि बहुत से लोगों ने परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम से फिलिप्पुस के प्रचार पर विश्वास किया और क्या पुरुष और क्या स्त्री सब ने बपतिस्मा लिया।

यह खुशखबरी यरूशलेम में पहुंच गई जहां प्रेरित ठहरे हुए थे। उन्होंने इस बात को समझा कि इन नये मसीहियों को जो यरूशलेम की कलीसिया से दूर थे और उनके आत्मिक जीवन में अगुआई के लिए कोई लिखित वचन नहीं था, सहायता करनी चाहिए। पतरस और यूहन्ना उनके लिए प्रार्थना करने और उन पर हाथ रखने के लिए सामरिया में गए ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल सके। फिर आत्मा की प्रेरणा के द्वारा जिन्हें ''भविष्यवाणी'' (यूनानी शब्द के अनुसार, ''परमेश्वर का संदेश सुनाना जो और किसी तरीके

से जाना नहीं जा सकता, चाहे भूतकाल से सम्बन्धित हो या भविष्य या वर्तमान से'') का दान मिलना था, उन्हें मसीही लोगों की उन्नति, उपदेश और शांति के लिए चमत्कारी ढंग से योग्य बनाया जाना था (1 कुरिन्थियों 14:3)।

अब सवाल है कि फिलिप्पुस ने इन नये विश्वासियों को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति क्यों नहीं दी? यह दान देने के लिए यरूशलेम से दो प्रेरितों को चलकर सामरिया में क्यों आना पड़ा? इस हवाले से हमें साफ़ पता चलता है कि आत्मा में बपतिस्मा पाए हुए लोग ही दूसरों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दे सकते थे। फिलिप्पुस ने क्यों नहीं दी? क्योंकि वह नहीं दे सकता था! वह प्रेरित जो नहीं था!

सामरिया में वापस चलते हैं। एक और आदमी वहां था, जिसका बड़ा नाम था, वह शमौन टोना थो जो वहां का स्थानीय जादूगर था। उसने बहुत से लोगों को ठगा था जिन्हें यह लगता था कि उसके पास कोई बड़ी शक्ति है। शमौन केवल एक जादूगर था और उसे मालूम था कि जो कुछ वह कर रहा है वह केवल हाथ की सफाई है। उसके उलट जब उसने असली चमत्कार देखे तो मान लिया कि वे सही हैं और उस सुसमाचार को सुन कर जिसकी पुष्टि, आश्चर्यकर्मों के द्वारा हो चुकी थी, उसने भी परमेश्वर की आज्ञा माननी चाही।

प्रेरितों ने आकर बपतिस्मा पाए हुए कुछ विश्वासियों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी, पर बपतिस्मा पाए हुए सब विश्वासियों को यह सामर्थ नहीं दी गई थी। शमौन उन में से था जिन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ नहीं मिली थी, पर उसने जो हुआ था वह सब देखा था। यह विनती करने के बजाय कि उसे भी असली चमत्कार करने का दान दिया जाए उसने प्रेरितों से कहा कि उसे भी दूसरों को चमत्कार करने की शक्ति देने के लिए उन पर हाथ रखने की सामर्थ दी जाए।

ये आत्मा के दो बिल्कुल अलग–अलग नाप थे क्योंकि प्रेरितों को परमेश्वर द्वारा पवित्र आत्मा के बहाने से बपतिस्मा दिया गया था। जिससे न केवल वे हर प्रकार के आश्चर्यकर्म कर सकते थे बल्कि दूसरों को भी आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दे सकते थे। परन्तु जिन्हें प्रेरितों द्वारा हाथ रखने का नाप मिला था वे केवल कुछ खास आश्चर्यकर्म ही कर सकते थे। अगले विवरण के अनुसार जो 1 कुरिन्थियों 12 में दिया गया है कि अलग–अलग लोगों को अलग–अलग दान दिए जाते थे; कुछ लोग अन्य भाषाओं में बोल सकते थे, कुछ भविष्यवाणी कर सकते थे, कुछ आश्चर्यकर्म के द्वारा चंगाई दे सकते थे। इस प्रकार से पूरी कलीसिया को तैयार किया गया था, परन्तु मसीही लोग एक दूसरे पर निर्भर भी थे जिन्हें एक दूसरे के दानों की आवश्यकता पड़ती थी।

''वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है; और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है; और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। **क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं, और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। किसी को उसी आत्मा से विश्वास, और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति, और किसी को भविष्यवाणी की, और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा कराता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है'' (1 कुरिन्थियों 12:4-11)।**

शमौन चाहता था कि उसे दूसरों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देने की योग्यता मिल जाए, जिसके लिए उसने प्रेरितों को पैसा देने की पेशकश की। वह पहले भी लोगों से हेराफेरी करता और घूस देता होगा जिस कारण इस नई परिस्थिति में भी उसने वैसा ही करने का प्रयास किया। टोने या जादू के अपने करतबों के द्वारा वह लोगों की नज़रों में बड़ा आदमी बन गया था, जिस कारण उसे लगा होगा कि उसे पवित्र आत्मा की सामर्थ मिल जाए तो वह चमत्कार करने वाले बहुत से अनुयायी बना लेगा जिससे वह सचमुच में बड़ा आदमी बन सकता है।

संक्षेप में, यही कारण है कि दूसरों को आगे दान देने की सामर्थ केवल प्रेरितों को दी गई थी। यदि औरों को दी गई होती तो कुछ लोगों ने जिन्हें इसका महत्व भी पता नहीं होना था घूस लेने या अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को यह सामर्थ देने के लोभ में पड़ जाना था। बेशक मनुष्य परमेश्वर को आज्ञा नहीं दे सकता या उसे धोखा नहीं दे सकता इसीलिए इस प्रकार की बुराई की अनुमति नहीं हुई होगी।

घूस देने की शमौन की कोशिश सफ़ल नहीं हुई। पतरस ने उसे केवल इतना कहते हुए उत्तर दिया ''तेरे रुपये तेरे साथ नष्ट हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया'' (प्रेरितों 8:20)। प्रेरित पतरस ने उसे अच्छी तरह से समझा दिया कि परमेश्वर के दान को पैसे से खरीदा नहीं जा सकता। उसने उसे डांटा और उसे बताया कि उसका मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं है और उससे यह भी कहा कि वह इस बुराई से अपना मन फिराए और परमेश्वर से प्रार्थना करे जिससे उसे क्षमा मिल सके।

पतरस ने निष्कर्ष निकाला, ''क्योंकि मैं देखता हूं कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है'' (प्रेरितों 8:23)। अन्य शब्दों में, शमौन बहुत नीचे गिर गया था। वह बिल्कुल गलत था।

पतरस शमौन से यह बात इसलिए कह पाया क्योंकि उस ने सुसमाचार को सुनकर उसे माना था यानि वह एक मसीही था और कलीसिया का सदस्य था, और उसने पाप किया था पर उसके लिए फिर से सुसमाचार की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं थी। परमेश्वर की संतान बन जाने के कारण मन फिराकर परमेश्वर से प्रार्थना करना आवश्यक था जिससे उसे क्षमा मिल जाती। शमौन ने पतरस की बात को सुनकर बुरा नहीं माना बल्कि उसने कहा, ''तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं, उनमें से कोई मुझ पर न आ पड़े'' (प्रेरितों 8:24)।

इसके बाद पतरस और यूहन्ना यरूशलेम में लौट गए तथा फिलिप्पुस कहीं और चला गया। परन्तु शमौन का क्या हुआ? हम यह मान लेंगे कि पतरस ने उसे समझाया था और उससे कहा वह मन फिराए और क्षमा मांगने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करे और उसने ऐसा ही किया होगा और वह एक अच्छा मसीही बनकर रहने लगा होगा।

क्या इसका अर्थ यह है कि इसके बाद प्रेरितों ने शमौन पर हाथ रखे ताकि उसे आश्चयकर्म करने की सामर्थ मिल सके? नहीं, ऐसा कोई संकेत नहीं है, और इसके तीन कारण हैं:

> जब यरूशलेम में प्रेरितों ने सात पुरुषों के ऊपर हाथ रखे थे, और दूसरों के ऊपर नहीं रखे थे, हम देखते हैं कि सामरिया में बपतिस्मा लेने वाले हर व्यक्ति को चमत्कारी शक्ति नहीं दी गई थी।
>
> जहां तक शमौन की बात है, वह अपने जादू के नकली ''चमत्कारों'' के कारण काफ़ी प्रसिद्ध था। यह डर होगा कि लोगों को यह सुनकर कि मसीही बन जाने के बाद अब वह क्या कर रहा है यह लग सकता था कि वह सामर्थ शमौन की अपनी होगी या जादू के काम करते हुए जो वह दावा करता था उसी की होगी। देखने सुनने वालों को यही लगता कि कलीसिया में भी आज ऐसा ही होता है।
>
> पवित्र आत्मा की चमत्कारी शक्ति पाने से उसने उस सामर्थ का दुरुपयोग करने की बड़ी परीक्षा में पड़ जाना था। जैसा कि किसी ने कहा है, ''किसी को बैंक में डकैती डालने के लिए क्षमा किया जा सकता है यदि वह अपने पाप से मन फिराकर क्षमा मांग ले, परन्तु

आप उसे अब बैंक में खजांची की नौकरी नहीं दे देंगे; यानी उसे गल्ले की रखवाली का काम नहीं सौंपा जा सकता।''

पवित्र आत्मा के हाथ रखने के नाप को पाने का उद्धार से कोई सम्बन्ध नहीं था, परन्तु प्रभु के कुछ लोगों को इन दानों को दिए जाने के लिए चुना गया था ताकि उस समय में वे प्रभु के काम के लिए अपनी बेहतर सेवा दे सकें। आज हमें ऐसी चमत्कारी बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम पर परमेश्वर की इच्छा को प्रगट करने और खोए संसार में इसे पहुंचाने और सारी मनुष्यजाति में ले जाने के लिए हमारे पास नया नियम है।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. सामरिया में फिलिप्पुस ने जब लोगों को मसीह में परिवर्तित किया, तो उनके बपतिस्मा लेने से क्या हुआ? (प्रेरितों 2:38) 1) उन्हें पापों की .... मिली; 2) उन्हें .... का दान मिला।
2. क्या उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था?
3. क्या फिलिप्पुस ने कुछ लोगों को आश्चर्यकर्म करने के दान देने के लिए उन के ऊपर हाथ रखे थे?
4. प्रेरितों 8 के अनुसार, सामरिया में कौन–कौन और क्या करने के लिए आया था?
5. फिलिप्पुस नये विश्वासियों को आश्चर्यकर्म करने की शक्ति क्यों नहीं दे पाया था?
6. शमौन जादूगर किस विशेष दान को प्राप्त करना चाहता था?
7. क्या शमौन सचमुच में परिवर्तित हुआ था? पतरस की डांट सुनकर उसका क्या जवाब था?
8. हमें कैसे मालूम कि सामरिया में विश्वास करने वाले हर व्यक्ति को आश्यर्चकर्म करने की सामर्थ नहीं दी गई थी?
9. शमौन की पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए तर्कसंगत कारण क्या हैं कि उसे आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देने के लिए नहीं चुना गया?
10. आज हमें आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता क्यों नहीं है?

पाठ 5

पवित्र आत्मा का दान

हम पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और हाथ रखने के नाप का अध्ययन कर चुके हैं और अब हम पवित्र आत्मा के दान पर आ गए हैं जिसका वायदा सब मसीही लोगों से किया गया है।

एक ओर जहां प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था और कुछ चुने हुए चेलों को हाथ रखने का नाप मिला था जो कि प्रेरितों के द्वारा दिया गया था, वहीं अन्य सब लोगों को जिन्होंने प्रभु की आज्ञा को माना है यानी हम सब को और प्रभु के लौटने तक के सब लोगों को ''पवित्र आत्मा का दान'' मिलता है।

जब हम प्रेरितों के काम के अध्याय 2 में देखते हैं तो पाते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरित कैसे यरूशलेम में ठहरे हुए थे। यह यहूदियों का एक पर्व था जिस कारण दुनिया भर से यहूदी लोग वहां आए हुए थे। इसी दौरान परमेश्वर का पवित्र आत्मा प्रेरितों पर उतरा और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने पर वे अन्य–अन्य भाषा बोलने लगे और लोग अपनी–अपनी भाषा में उनके प्रचार को सुन रहे थे। प्रेरित पतरस तथा अन्य प्रेरित वहां प्रभु यीशु का प्रचार कर रहे थे। हम इस घटना के विषय में इस प्रकार से पढ़ते हैं, **''तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, 'हे भाइयो, हम क्या करें?' पतरस ने उनसे कहा, 'मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे' ''** (प्रेरितों 2:37, 38)।

इन वचनों में हम देखते हैं कि जो लोग विश्वासी बने थे, उन्होंने अपने पापों से मन फिराया, अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया और उन्हें पवित्र आत्मा का दान दिया गया। पवित्र आत्मा का दान पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा दिए जाने वाले पवित्र आत्मा के

नाप से अलग था। इनके बारे में वचन में पढ़ने पर इन में से हर किसी को जिस भी संदर्भ में यह मिलता है उसमें दूसरे से अलग देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए हम प्रेरितों 2:1–4 में साफ देख सकते हैं कि प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था। प्रेरितों 6 तथा 8 अध्यायों में हम देखते हैं कि प्रेरितों ने कुछ चेलों के ऊपर हाथ रखे थे ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की चमत्कार करने की सामर्थ मिल सके। फिर प्रेरितों 2:38 में हमने देखा था कि पवित्र आत्मा का दान दिए जाने का वायदा उन सब लोगों के लिए दिया गया था जिन्होंने अपने अपने पापों की क्षमा के लिए और परमेश्वर की संतान के रूप में उसके साथ सहभागिता करने के लिए प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना था।

प्रेरितों 6 अध्याय में हम फिर देखते हैं कि चेलों के बीच में चुने गए सात जनों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला था। क्योंकि अगर मिला होता तो उनके लिए प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा उन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दिए जाने की कोई आवश्यकता नहीं होनी थी। हां बेशक उनके लिए कहा गया है कि वे सुनाम पुरुष थे और पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण थे। तो फिर इसका क्या अर्थ हुआ कि वे **''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण''** थे? एक बात तो पक्की है कि इसका अर्थ यह नहीं था कि उनके पास आश्चर्यकर्म करने, अन्य भाषाओं में बोलने जैसी कोई सामर्थ थी। इसके बजाय इसका अर्थ यह था कि उन्हें आत्मा का गैर चमत्कारी दान मिला हुआ था। उन्हें यह दान कब मिला था? जब उन्होंने प्रेरितों 2:38 के अनुसार प्रभु की आज्ञा को मान कर अपने अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया था। यह आत्मा का वही गैर चमत्कारी दान है जो हर उस व्यक्ति को मिलता था जिसने अपने पापों की क्षमा के लिए प्रभु की आज्ञा को माना है। या यूं कहें कि यह आत्मा का वह नाप है, जो प्रभु लोगों को उसकी आज्ञा मानने के समय देता है।

जब पतरस तथा दूसरे प्रेरितों को महासभा के सामने लाया गया यह पूछने के लिए कि वे मना करने के बावजूद भी यीशु का प्रचार क्यों कर रहे हैं? परन्तु उन्होंने महायाजक तथा जो लोग उसके साथ थे, उन्हें इस प्रकार से समझाया कि **''मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है। हमारे बापदादों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुम ने क्रूस पर लटकाकर मार डाला था। उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारकर्ता ठहराकर, अपने दाहिने हाथ पर ऊंचा कर दिया कि वह इस्राएलियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे। हम इन बातों के गवाह हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने**

उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा मानते हैं'' (प्रेरितों 5:29–32)।

एक ओर जहां कहा जा सकता है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और पवित्र आत्मा का हाथ रखने का नाप परमेश्वर की आज्ञा मानने वालों में से चुनिंदा लोगों को दिया जाता था, **वहीं पवित्र आत्मा का दान यानी पवित्र आत्मा का गैर चमत्कारी दान भी परमेश्वर की आज्ञा को मानने वालों को दिया जाता था, और आज भी दिया जाता है।** आप देख सकते हैं आज्ञा मानने वालों को पवित्र आत्मा ही दिया जाता है और अगर उन्हें पवित्र आत्मा दिया जाता है तो इसका अर्थ यह हुआ कि पवित्र आत्मा उन में वास करता है।

पौलुस ने थिस्सलुनीके के मसीही लोगों को लिखा, **''इसलिए हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ। क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन–कौन सी आज्ञा पहुंचाई। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनोः अर्थात व्यभिचार से बचे रहो, और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने, और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों के समान, जो परमेश्वर को नहीं जानतीं कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे, और न उस पर दांव चलाए, क्योंकि प्रभु इन सब बातों का पलटा लेने वाला है; जैसा कि हम ने पहले ही तुम से कहा और चिताया भी था। क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिए नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिए बुलाया है। इस कारण जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है (किन्तु भाईचारे की प्रीति के विषय में यह आवश्यक नहीं कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूं, क्योंकि आपस में प्रेम रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है''** (1 थिस्सलुनीकियों 4:1–9)।

इन वचनों में पौलुस मसीही लोगों को अपने आप को शुद्ध तथा पवित्र रखने, और एक–दूसरे के लिए उचित आदर प्रेम दिखाने को प्रोत्साहित कर रहा है, क्योंकि वे परमेश्वर के लोग थे और उन्हें पवित्र आत्मा दिया गया था। संदर्भ में देखें तो पता चलता है कि पौलुस सब मसीहियों से बात करते हुए कह रहा है और वह कहता है कि ऐसा करके परमेश्वर ने उन्हें पवित्र आत्मा दिया था।

पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीहियों से कहा, **''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास**

करता है? यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो'' (1 कुरिन्थियों 3:16, 17)।

उसने फिर कहा, **''क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो''** (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)।

पौलुस यह स्पष्ट कह रहा था कि हमारी देहें आत्मा का मन्दिर हैं, पर वह एक मसीही के अंदर गैर चमत्कारी ढंग से कैसे रह सकता है? इसी प्रकार जैसे मसीह हम में वास करता है (कुलुस्सियों 1:27) और परमेश्वर हम में वास करता है (इफिसियों 4:6) और हम मसीह में और परमेश्वर में वास करते हैं (रोमियों 6:3, 4; गलातियों 3:26, 27)।

> **'' ... कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ''** (इफिसियों 3:16)।
>
> **''और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है''** (इफिसियों 4:6)।
>
> **''परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं''** (रोमियों 8:9)।

ऐसे लोग होते हैं जो यह कहते हुए कि मसीही लोगों में पवित्र शास्त्र के द्वारा प्रतीकात्मक रूप में वास करता है इस बात का इनकार करते हैं कि आत्मा सचमुच में ''वास करता'' है। उनका तर्क यह है कि बाइबल आत्मा की प्रेरणा से दी गई है इसलिए **वह वचन के द्वारा हमारे अंदर वास करता है।**

- इस तथ्य के कि रोमियों 8:11 जैसी आयतें पढ़ने पर जो बताती हैं कि आत्मा हमारे अंदर वास करता है, इस शिक्षा से कई समस्याएं हैं, बहुत से लोगों को इसे अपने विश्वास के अनुसार पढ़ने के लिए ''वचन के द्वारा'' को कोष्ठक में डालना पड़ता है: **''यदि उसी का आत्मा जिसने**

यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है [वचन के द्वारा]; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा [वचन के द्वारा] हुआ है, जिलाएगा'' (रोमियों 8:11)।

क्या प्रकाशितवाक्य 22:18 में ''वचन में जोड़ने'' के बारे में कुछ कहा गया है?

''मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा।''

- इस समस्या के बाद यह तथ्य है कि जिस समय पतरस ने यह कहते हुए प्रचार किया था कि मन फिराकर बपतिस्मा लेने वालों को पवित्र आत्मा का दान दिया जाएगा उस समय तक नया नियम अभी लिखा नहीं गया था! यदि वास का यह **''दान'' स्वयं आत्मा न होकर पवित्र शास्त्र था,** तो उस दिन तीन हज़ार लोगों को किस प्रकार वह मिल गया होगा जो कई दशक बाद तक पूरा नहीं हुआ?
- और फिर यह समस्या है कि पवित्र शास्त्र के पुराने नियम वाले भाग के अधीन रहने वाले लोगों को कभी **''पवित्र आत्मा का दान''** दिए जाने की बात कभी नहीं की गई। परमेश्वर का वचन उन में वास करता था। तो यह कभी क्यों नहीं कहा गया कि पवित्र आत्मा इस्राएल जाति के अंदर ''वास करता'' था?
- और अंत में कुछ मनुष्य अपने जीवन में पवित्र शास्त्र की अलग अलग मात्रा आत्मसात करते हैं। यदि उनके मनों में केवल पवित्र शास्त्र ही ''वास'' करता है तो क्या कुछ लोगों में 20 प्रतिशत जबकि अन्यों में 35 प्रतिशत आत्मा होगा? और उनका क्या होगा जिन्होंने पवित्र शास्त्र के अधिकतर भाग को याद किया हुआ है और प्रेरितों 2:38 में दिए गए निर्देशों के अनुसार कभी वचन के अनुसार सही बपतिस्मा नहीं लिया? उनके दिमाग में तो पवित्र शास्त्र वास्तव में उनसे कहीं अधिक होगा जो परमेश्वर के परिवार का भाग हैं, इसका अर्थ यह हुआ कि चाहे उन्होंने उसे कभी नहीं माना जो परमेश्वर ने चाहा जो सबसे पहले **''पवित्र आत्मा का दान''** पाने से पहले व्यक्ति को क्या करना आवश्यक है, उनमें आत्मा का अधिक वास है?

क्या ''पवित्र आत्मा का दान'' चमत्कारी था?

पवित्र शास्त्र के सावधानीपूर्वक अध्ययन न होने के कारण बहुत से लोग यह मान लेते हैं कि पवित्र आत्मा से जुड़ी कोई भी बात चमत्कारी ही होती है? उदाहरण के लिए उन्हें लगता है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और पवित्र आत्मा का हाथ रखने का नाप उन्हें पाने वालों को ''चमत्कारी काम'' करने के योग्य बना देता है और वे सही हैं। जैसा कि अब तक अपने अध्ययन में हमने पाया है कि प्रेरितों और जिनके ऊपर उन्होंने हाथ रखे उनके पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ थी। बेशक ईमानदारी से आज ऐसी सामर्थ होने का दावा कोई नहीं कर सकता क्योंकि वचन साफ़ बताता है कि पवित्र आत्मा का वह नाप केवल प्रेरितों और कुरनेलियुस और उसके घराने को ही मिला था और उन्हें मरे हुए सैकड़ों साल हो चुके हैं।

आज बहुत से लोग हैं जिनका मानना है कि प्रेरितों 2:38 में बताया गया पवित्र आत्मा का दान भी आत्मा का चमत्कारी नाप था। यह सच है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को भी दान बताया गया है जैसा कि हम कुरनेलियुस और उसके घराने के मामले में देखते हैं। फिर भी ध्यान दें कि पतरस ने केवल कुरनेलियुस और उसके घराने को मिलने वाले पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को ही नहीं, बल्कि प्रेरितों को वही बपतिस्मा दिए जाने को भी पवित्र आत्मा का दान कहा। उसने कहा, **''अतः जब परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?''** (प्रेरितों 11:17)। पतरस यह समझा रहा था कि कुरनेलियुस और उसके घराने को आत्मा का बपतिस्मा देकर प्रभु उन्हें समझा रहा था कि परमेश्वर ने यहूदियों के साथ साथ अन्यजातियों को भी ग्रहण कर लिया था।

हां पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक दान था और आत्मा का प्रेरितों के हाथ रखने का नाप भी दान ही था, परन्तु प्रेरितों 2:38 में बताया गया ''दान'' अलग दान था। उस में यह गैर चमत्कारी था। हमें कैसे मालूम कि ऐसा ही है? यह देखने के लिए कि इस दान को पाने वाले आश्चर्यकर्म कर सकते नहीं और अन्य भाषाएं बोल सकते थे या नहीं संदर्भ को पढ़ कर।

याद रखें कि हमारे प्रेरितों 6 अध्याय में आने तक हज़ारों लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा मानी थी और उन्हें पवित्र आत्मा का दान दिया गया था, जहां प्रेरितों ने सात चुने हुए चेलों पर हाथ रखे थे ताकि उन्हें आत्मा की

आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल सके। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि प्रेरितों 2:38 वाला ''पवित्र आत्मा का दान'' चमत्कारी यानी आश्चर्यकर्म करने वाला दान था जिससे इसके पाने वालों को चमत्कार करने की शक्ति मिली होती, तो फिर बाद में प्रेरितों द्वारा विशेष शक्तियां दिए जाने के लिए उन सात जनों को क्यों चुना गया?

कृपया यह भी ध्यान दें कि प्रेरितों ने यह भी शर्त रखी थी कि सात पुरुषों का चयन चेलों के बीच में से किया जाए और एक खास शर्त यह थी कि वे ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण'' हों। यदि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का यह अर्थ था कि उनके पास चमत्कार करने की सामर्थ पहले से थी तो प्रेरितों के लिए उन पर हाथ रखकर उन्हें कोई विशेष दान देने की कोई आवश्यकता नहीं होनी थी। साफ़ है कि ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण'' होने का अर्थ आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ होना नहीं था। तो फिर इस अभिव्यक्ति का क्या अर्थ था? इसका अर्थ केवल इतना था कि उन्हें पवित्र आत्मा इसलिए दिया गया था क्योंकि वे उन तीन हज़ार लोगों में से थे जिन्होंने बपतिस्मा लेकर प्रभु की आज्ञा को माना था।

वचन में बहुत से हवाले हैं जो हमें बताते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा मानने वालों को पवित्र आत्मा मिलता है, यानी पवित्र आत्मा हमारी देह में जोकि परमेश्वर का मन्दिर है, वास करता है। परमेश्वर हमारे अंदर वास करता है और मसीह हमारे अंदर वास करता है आदि। अब इस वास में कोई अलौकिक बात नहीं है यानी इसमें कोई चमत्कार वाली बात नहीं है। नये सिरे से जन्म कैसे होता है? मसीह का लहू हमारे पापों को किस प्रकार धोता है? परमेश्वर का अनुग्रह उद्धार कैसे करता है? विश्वास हमारे मनों में कैसे काम करता है? कुछ लोगों को इन सब बातों में चमत्कार दिखाई देता है, पर वे चमत्कार नहीं बल्कि परमेश्वर के ठहराए आत्मिक नियमों के अनुसार होते हैं।

वही लोग बच्चे के जन्म, या कार दुर्घटना में मरने से बच जाने, सफल आप्रेशन होने या भयानक बीमारी से उबरने को चमत्कार ही कहेंगे। इनमें से किसी भी बात में कोई चमत्कार नहीं है। परमेश्वर ने शारीरिक और आत्मिक नियम ठहराए हैं और सब कुछ उन्हीं नियमों के अनुसार होता है। इसलिए बच्चों का जन्म चमत्कार से नहीं, बल्कि प्रकृति के नियम के द्वारा होता है और यही बात अन्य सब शारीरिक बातों के लिए भी सच है।

आत्मिक क्षेत्र में, यह साबित करने के लिए कि बोलने वाला व्यक्ति और उसका संदेश परमेश्वर की ओर से था, इसमें कोई शक नहीं कि मसीह ने आश्चर्यकर्म किए, और प्रेरितों ने व चुनिंदा चेलों ने भी जिन्हें पवित्र आत्मा की

आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी गई थी एक विशेष समय तक और विशेष उद्देश्य के लिए आश्चर्यकर्म किए। परन्तु परमेश्वर के वचन के प्रकाशन के पूरा हो जाने से आश्चर्यकर्मों का युग समाप्त हो गया।

दूसरी हद इस बात में हो जाती है कि कुछ लोग परमेश्वर की इस संसार की घटनाओं को प्रभावित करने के विचार का यहां तक विरोध करते हैं कि वे इस बात को मानने से इस हद तक इनकार कर देते हैं कि पवित्र आत्मा आज कोई काम करता है। या यूं कहें कि इस विचार पर ही कि वह मसीही व्यक्ति के अंदर वास करता है या यह कि परमेश्वर और मसीह मसीही व्यक्ति में वास करते हैं, वे त्योरियां चढ़ाते हैं। वे प्रार्थना को और परमेश्वर के प्रबन्ध को केवल अलंकार तक सीमित कर इसे सचमुच का वायदा नहीं मानते। वे किसी भी व्यक्ति को जो यह मानता हो कि आत्मा मसीही व्यक्ति में वास करता है करिश्माई या पैंटिकास्टल का नाम दे देते हैं। वे लोग गलतफहमी में हैं और बाइबल में दिए परमेश्वर के वचन का स्पष्ट इनकार करते हैं। उनके मत सच्चाई के आधार पर नहीं बल्कि झूठी शिक्षा की प्रतिक्रिया के कारण हैं और वह प्रतिक्रिया वैसी ही झूठी शिक्षा के जैसी है! उनके सम्बन्ध में ''भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना'' कहा जा सकता है (2 तीमुथियुस 3:5)।

पवित्र आत्मा का दान बेशक चमत्कारी दान नहीं है पर पवित्र आत्मा परमेश्वर की आज्ञा मानने वाले हर व्यक्ति को दिया जाता है। इसलिए मसीही व्यक्ति को आत्मा उसके उद्धार के बयाने या पेशगी या सबूत के रूप में दिया जाता है।

> **''और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिस ने हमारा अभिषेक किया वही परमेश्वर है। जिस ने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया''**
>
> (2 कुरिन्थियों 1:21, 22)।

> **''जिस ने हमें इसी बात के लिए तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है''**
>
> (2 कुरिन्थियों 5:5)।

> **''वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो''**
>
> (इफिसियों 1:14)।

इस लिए हमारा विश्वास है कि हम प्रभु में हैं और प्रभु हम में है। हमारा विश्वास है कि परमेश्वर प्रार्थनाओं को सुनता और उनका उत्तर देता है और वह अपने ईश्वरीय प्रबंध के द्वारा सामर्थपूर्ण ढंग से काम करता है। इसके साथ ही हमारा यह भी विश्वास है कि प्रार्थना के उत्तर में ईश्वरीय प्रबंध के द्वारा आज आत्मा का काम नये नियम में दिए गए आत्मा के वचन यानी परमेश्वर के वचन के साथ मेल खाते हुए किया जाता है और यह पवित्र है और ईश्वरीय है। अपने जीवनों में और जो हम सिखाते हैं उसमें से एक भी बात बाइबल में लिखी गई बात के उलट नहीं हो सकती। परमेश्वर आज काम करता है और आत्मा हम में वास करता है पर यह सब उसी रूपरेखा के अनुसार है जो उसके वचन में कहा गया है।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. हर मसीही को क्या प्रतिज्ञा दी गई है?
2. पिछले पाठों से, पवित्र आत्मा के ''नापों'' में अंतरों को समझाएं।
3. प्रेरितों 6 पढ़ते हुए, प्रेरितों ने मसीही लोगों से कलीसिया की देखभाल में सहायता के लिए .... में से .... और .... परिपूर्ण पुरुषों को चुन लेने को कहा।
4. क्या इन सातों पुरुषों को ''पवित्र आत्मा'' मिला हुआ था?
5. प्रेरितों के प्रार्थना करके उन पर हाथ रखने के बाद क्या हुआ? (प्रेरितों 6:8)
6. 1 थिस्सलुनीकियों 4:1–9 मसीही लोगों से पवित्र बनने को कहता है क्योंकि परमेश्वर तुम्हें '' ....।''
7. हमारी देहों को .... का .... (यूनानी: Naos) कहा गया है, क्योंकि '' .... का .... तुम में .... करता है'' (1 कुरिन्थियों 3:16, 17)।
8. इफिसियों 3:16; रोमियों 8:9 ज़बानी बताएं; ये आयतें पवित्र आत्मा के बारे में क्या कहती हैं?
9. यदि हम आत्मा के ''वास'' को केवल ''वचन के द्वारा'' तक सीमित कर देते हैं तो हमें पवित्र शास्त्र में कोष्ठक में क्या जोड़ना पड़ेगा?
10. 2 कुरिन्थियों 1:21, 22 पवित्र आत्मा के विषय में क्या कहता है?

आत्मिक वरदान

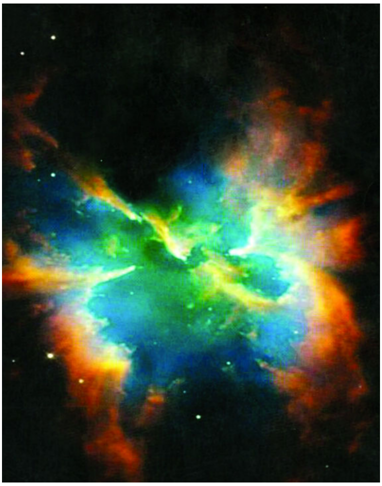

हमने पवित्र आत्मा के बपतिस्मा और पवित्र आत्मा के हाथ रखने के नाप के पाठों का अध्ययन किया है। हमने पवित्र आत्मा के दान के गैर–चमत्कारी नाप की भी बात की है। आत्मा के दानों की चर्चा करते हुए हम गैर चमत्कारी दानों की बात कर रहे हैं जो पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म करने वाली परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा मिलते थे।

असल में प्रेरितों को और उन्हीं को, जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, आत्मिक वरदान दिए गए थे और दूसरों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ आगे देने का अधिकार केवल प्रेरितों को था। प्रेरित होने के कारण पौलुस ने रोम के मसीही भाइयों को लिखा, **''क्योंकि मैं तुमसे मिलने की लालसा करता हूं कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं जिससे तुम स्थिर हो जाओ''** (रोमियों 1:11)। या यूं कहें कि वह चाहता था कि उनके पास जाकर उन पर हाथ रखे ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल सके। इससे मसीह का काम आगे बढ़ना था और उसे मजबूती मिलनी थी, क्योंकि उस समय तक नया नियम अभी पूर्ण रूप में लिखा नहीं गया था, जिस कारण रोम की नई नई कलीसिया को आत्मिक अगुआई के लिए उन लोगों की आवश्यकता थी जो आत्मा की प्रेरणा के द्वारा वचन को सुना और सिखा सकते थे।

अलग–अलग दानों का अलग–अलग काम था। पौलुस ने कहा, **''प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो,** विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी [इस शब्द का अर्थ आवश्यक नहीं कि ''भविष्य की घटनाएं पहले से बताना'' हो; यहां पर इसमें आत्मा की अगुआई में परमेश्वर के वचन का प्रचार करना और सिखाना था] करो। **क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए**

कि उस की बातें कोई नहीं समझता, क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है। परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश, और शान्ति की बातें कहता है। जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है। मैं चाहता हूं कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो, परन्तु इससे अधिक यह चाहता हूं कि भविष्यद्वाणी करो: क्योंकि यदि अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिए अनुवाद न करे तो भविष्यद्वाणी करने वाला उस से बढ़कर है'' (1 कुरिन्थियों 14:1–5)।

पौलुस यहां पर समझा रहा था कि भविष्यद्वाणी करने का दान अन्य दानों से बढ़कर था, क्योंकि इसके द्वारा लोगों पर परमेश्वर की इच्छा प्रगट की जा रही थी। अन्य भाषा का महत्व तो था परन्तु भविष्यवाणी या शिक्षा जो दी जा रही थी, उसे सुनने वालों को प्रकट करने के लिए इसकी आवश्यकता थी। इस वचन से हम देख सकते हैं कि पहली सदी की कलीसिया में कई बार ऐसे लोग होते थे जिनके पास कोई दान होता था, शायद किसी की मातृ भाषा अरामी थी पर उसे बिना सीखे यूनानी भाषा का ज्ञान दिया जाता था। यूनानी भाषी संसार में यह दान अमूल्य होना था। परन्तु सताव से भागते भागते अगर वह फारस में चला जाता तो फारसी भाषा में समझाने के लिए उसे अनुवादक की आवश्यकता होनी थी। यदि फारसी बोलने वाला वहां न मिलता उनके बीच में उसे यूनानी भाषा में सरमन देना आरम्भ नहीं करना था, जो किसी को समझ नहीं आती।

पौलुस ने इस समस्या पर बात की, **''अत: यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सब के सब अन्य भाषाएं बोलें** [कलीसिया के अलग–अलग लोग जिन्हें अलग–अलग भाषाएं बोलने के लिए आश्चर्यकर्म के द्वारा या चमत्कारी दान मिले थे, और सभी उन्हें दी गई भाषा में कोई आत्मिक सबक दें], **और अनपढ़ या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएं तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे? परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने [सुसमाचार सुनाने] लगें, और कोई अविश्वासी या अनपढ़ मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे; और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और मान लेगा, कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में हैं। इसलिए हे भाइयो, क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन या उपदेश या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है। सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए। यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों** [उस

इलाके के लोगों को समझ में न आने वाली बोली] **तो दो या बहुत हो तो तीन जन बारी-बारी बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलने वाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करे।** [पैंटिकॉस्टल कलीसियाओं में आज दावा किया जाता है कि ''भाषाओं'' का अर्थ स्वर्गीय भाषा है जिसे केवल परमेश्वर ही समझ सकता है; यह वचन कहता है कि यदि वहां पर अर्थ समझाने वाला कोई नहीं है–जिसका अर्थ यह हुआ कि उस भाषा को समझा जा सकता था–तो बोलने वाला खामोश हो जाए। **पैंटिकॉस्टल लोगों की ऐसी जबर्दस्ती पवित्र शास्त्र की स्पष्ट शिक्षा का उल्लंघन है।**] **भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन** [जिन्हें इल्हाम यानी आत्मा की प्रेरणा से उपदेश की बात मिली हो] **बोलें, और शेष लोग उन के वचन को परखें। परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश, हो, तो पहला चुप हो जाए। क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो, ताकि सब सीखें और सब शान्ति पाएं। और भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में हैं। क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है। जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है''** (1 कुरिन्थियों 14:23–33)।

आत्मा ने कलीसिया की सभा में सच्चाई का संदेश देकर कुछ लोगों को प्रेरणा क्यों दी? ताकि मण्डलियां किसी एक या दो लोगों के कब्ज़े में न पड़ जाएं। बहुत से लोगों को सिखाए जाने वाले सबकों में योगदान देने के लिए प्रेरणा दी गई ताकि मसीही लोग एक दूसरे पर निर्भर हों और सब लोग कलीसिया के सिखाने और काम में योगदान दें।

कुरिन्थुस के मसीही लोगों से पौलुस ने कहा: **''हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अनजान रहो। तुम जानते हो कि जब तुम अन्यजातीय थे, तो गूंगी मूरतों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे। इसलिए मैं तुम्हें चितौनी देता हूं कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु स्त्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है। वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है; और सेवा भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है; और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।**

किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; *और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। और किसी को उसी आत्मा*

से विश्वास, और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ के काम करने की श ित, और किसी को भविष्यवाणी की, और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। परन्तु ये सब **प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है''** (1 कुरिन्थियों 12:1–11)।

ऊपर दी गई आयतों से हम साफ़ देख सकते हैं कि पौलुस **आत्मा के चमत्कारी दानों** की बात कर रहा है। वह बुद्धि, ज्ञान, विश्वास, चंगाई, आश्चर्यकर्मों, भविष्यवाणी, आत्माओं को परखना, विभिन्न प्रकार की भाषाएं बोलना और भाषाओं का अर्थ बताने के दानों की बात करता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि व्यक्तिगत रूप में मसीही लोगों को व्यक्तिगत दान मिलते थे, पाने वालों के मनों को आत्मा के जांचने और उनकी योग्यता के अनुसार जैसा कि हम ने पहले सीखा था कि शमौन जादूगर चाहे वह बपतिस्मा पाया हुआ विश्वासी था पर यह साफ़ हो जाता है कि **हर मसीही को यह विशेष दान नहीं दिए गए थे।**

इन आयतों को ध्यान से विश्लेषण करने पर पता चलता है:

- आत्मा के ''हाथ रखने'' के नाप के द्वारा आत्मा पाने वाले को ऐसा नहीं है कि जो भी आवश्यकता हो वह आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल जाती हो। इसके बजाय एक व्यक्ति को किसी विशेष भाषा में बोलने की चमत्कारी योग्यता मिलती थी जबकि किसी दूसरे को उस भाषा का अर्थ बताने की योग्यता दी जाती थी; किसी दूसरे को परमेश्वर का संदेश सुनाने की योग्यता दी जाती थी जबकि किसी और को परमेश्वर की प्रेरणा से बुद्धि, किसी को परमेश्वर की प्रेरणा से विश्वास, किसी को चंगाई देने की सामर्थ, जबकि किसी और को अन्य चमत्कार करने की।
- इस सब में पौलुस अलग–अलग दान पाए हुए अलग–अलग चेलों की समस्या से निपट रहा था और उन्हें समझा रहा था कि वे उनका इस्तेमाल ऐसे करें ताकि उन्हें और दूसरों को इसका लाभ मिल सके। अन्य शब्दों में यदि किसी सभा में कोई व्यक्ति किसी अज्ञात भाषा में बोल रहा हो जिसे मण्डली के लोग न जानते हों, और उसका अर्थ बताने के लिए वहां पर आत्मिक दान प्राप्त कोई व्यक्ति न हो, तो उस व्यक्ति के लिए खामोश रहना बेहतर होना था। आत्मिक दानों का इस्तेमाल शिक्षा

और उन्नति के लिए किया जाना था न कि उलझन पैदा करने के लिए।

- इन वरदानों का उद्देश्य वचन को दृढ करना था तथा कलीसिया की उन्नति के लिए था। हमें यह बात समझनी चाहिए कि उस समय नया नियम लिखित रूप में नहीं था और इसलिए उस समय कलीसिया में इन वरदानों का होना आवश्यक था। यीशु ने भी जो सामर्थ के काम किए थे वे भी वचन को दृढ़ करने के लिए थे। इसके विषय में हम इस प्रकार से पढ़ते हैं, **''यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ''** (यूहन्ना 20:30–31)। यीशु की मृत्यु गाड़े जाने तथा जी उठने के पश्चात वह अपने पिता के पास स्वर्ग में चला गया तथा हम पढ़ते हैं कि प्रेरित लोग प्रचार करने लगे। लिखा है, **''और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिह्नों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन''** (मरकुस 16:20)।

इब्रानियों की पुस्तक का लेखक कहता है, **''इस कारण चाहिए कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं, और भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि बहक कर उनसे दूर चले जाएं। क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला, तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते हैं? जिस की चर्चा पहले-पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुनने वालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ। और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्‌भुत कामों और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा''** (इब्रानियों 2:1–4)।

अंत में, पौलुस ने इफिसुस के मसीही लोगों को लिखा, प्रेरित पौलुस लिखते हुए कहता है, **''पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है''** (इफिसियों 4:7)। फिर आगे आत्मिक दानों के बारे में कहता है, **''उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यवक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए और मसीह की**

देह उन्नति पाए, जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएं, ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों। वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं। जिस से सारी देह, हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार, जो हर एक अंग के ठीक-ठीक काम करने के द्वारा उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए'' (इफिसियों 4:11–16)।

आत्मा के ये विशेष दान नया नियम लिखित रूप में दिए जाने से पहले कलीसिया के बढ़ने और फैलने में सहायता के लिए अस्थाई तौर पर दिए गए थे। नया नियम मिल जाने के बाद ये चमत्कारी दान बंद हो गए।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. ''आत्मा के दान'' पर चर्चा करते हुए हम उन .... पर विचार कर रहे हैं जो प्रेरितों के हाथ रखने से मिले।
2. स्पष्टीकरण: प्रेरितों 2:38 में बपतिस्मा पाए हुए विश्वासियों को ''पवित्र आत्मा का दान'' या दान के रूप में आत्मा दिए जाने का वायदा किया गया था। 1 कुरिन्थियों 14:1–5 में बताए गए आत्मिक दान (आत्मा के दान) केवल प्रेरितों के प्रार्थना करने और हाथ रखने के द्वारा दिए गए चमत्कारी दान थे।
3. इन चमत्कारी दानों में से आठ बताएं (1 कुरिन्थियों 12:1–11)।
4. पौलुस ने रोम की कलीसिया से कहा कि वह उन्हें मिलने के लिए आना चाहता था ताकि वह उन्हें कुछ आत्मिक दान दे सके। यह इस बात का पता देता है कि वहां कलीसिया के आरम्भ में कोई .... नहीं था।
5. पौलुस ने क्या बताया कि दानों का उद्देश्य क्या था?
   ''..'' (रोमियों 1:11)।
6. मण्डली के कुछ चुनिंदा लोगों को चमत्कारी दान दिया जाता था। हर मसीही को विशेष दान नहीं दिया जाना था।   सही या गलत।

7. मण्डली के सदस्यों को अलग–अलग दानों से मण्डली की उन्नति और स्थिरता कैसे होती थी?
8. दान आवश्यक क्यों थे? कलीसियाओं की अगुआई के लिए क्या उपलब्ध नहीं था?
9. इफिसियों 4:11–16 के अनुसार दान तब तक रहने थे जब तक ''हम सब के सब .... और परमेश्वर के पुत्र की .... में एक न हो जाएं।''
10. चमत्कारी दान कब बंद हुए?

पाठ 7

चमत्कारी चिह्न: पहली सदी या आज?
दुष्ट आत्माओं को निकालना

आज संसार में बहुत से लोग हैं जो यह मानते हैं कि लोगों में शैतान, दुष्टात्माएं या बदरूहें होती हैं। वह यह भी मानते हैं कि लोगों की अनुमति के बिना उन में घुस जाती हैं और उनके जीवनों को काबू में कर लेती हैं। अंत में उनका मानना होता है कि केवल मसीह में विश्वासी व्यक्ति की सहायता से ही जो आश्चर्यकर्म कर सकता हो इन बाहरी आत्माओं को निकाला जा सकता है। क्या बाइबल यह शिक्षा देती है?

हम जानते हैं कि मसीह और प्रेरितों के समय में लोगों में दुष्टात्माएं पाई जाती थीं। कई मौकों पर मसीह ने स्वयं दुष्टात्माओं को निकाला। हम यीशु के ऐसी ही एक आत्मा को निकालने की यह कहानी पढ़ते हैं:

"वे झील के पार गिरासेनियों के देश में पहुंचे, जब वह नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिस में अशुद्ध आत्मा थी, कब्रों से निकलकर उसे मिला। वह कब्रों में रहा करता था और कोई उसे सांकलों से भी न बान्ध सकता था, क्योंकि वह बार बार बेड़ियों और सांकलों से बान्धा गया था, पर उसने सांकलों को तोड़ दिया, और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे वश में नहीं कर सकता था। वह लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ो में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों से घायल करता था।

वह यीशु को दूर ही से देखकर दौड़ा, उसे प्रणाम किया, और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कहा, 'हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूं कि मुझे पीड़ा न दे।' क्योंकि उसने उससे कहा था, 'हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ!' उसने उससे पूछा, 'तेरा क्या नाम है?' उसने उससे कहा, 'मेरा नाम सेना है; क्योंकि

हम बहुत हैं।' और उसने उससे बहुत विनती की, 'हमें इस देश से बाहर न भेज।' वहां पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। उन्होंने उससे विनती करके कहा, 'हमें उन सूअरों में भेज दे कि हम उनके भीतर जाए।' अतः उसने उन्हें आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के भीतर पैठ गई और झुण्ड, जो कोई दो हजार का था, कड़ाडे पर से झपटकर झील में जा पड़ा और डूब मरा।

उनके चरवाहों ने भागकर नगर और गांवों में समाचार सुनाया, और जो हुआ था, लोग उसे देखने आए। यीशु के पास आकर वे उसको जिसमें दुष्टात्माएं थीं, अर्थात् सेना समाई थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखकर डर गए। देखनेवालों ने उसका, जिस में दुष्टात्माएं थीं, और सूअरों का पूरा हाल उन को कह सुनाया। तब वे उससे विनती करके कहने लगे कि हमारी सीमा से चला जा।

जब वह नाव पर चढ़ने लगा तो वह जिस में पहले दुष्टात्माएं थीं, उससे विनती करने लगा, 'मुझे अपने साथ रहने दे।' परन्तु उसने उसे आज्ञा न दी, और उससे कहा, 'अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं।' वह जाकर दिकापुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किए; और सब लोग अचम्भा करते थे'' (मरकुस 5:1–20)।

बेशक यह केवल एक अवसर था जिसमें यीशु ने दुष्टात्माओं को निकाला था। प्रेरितों के पास भी जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था, दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ मिली थी (मरकुस 16:17)। वे लोग भी जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, उन्हें पवित्र आत्मा की आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिली और वे दुष्ट आत्माओं को निकाल सकते थे। उदाहरण के लिए जब फिलिप्पुस लोगों में प्रचार करने के लिए सामरिया के इलाके में गया था तो वहां पर वचन कहता है, **''जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिह्न वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के रोगी और लंगड़े भी अच्छे किए गए''** (प्रेरितों 8:6, 7)। ऐसा लगता है कि मसीह और प्रेरितों के समय में परमेश्वर ने मसीह, प्रेरितों या जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे कि लोगों के दुष्टात्माओं के निकालने तक परमेश्वर ने शैतान को कुछ लोगों में प्रवेश करने की विशेष छूट दी थी। यह इस बात का सबूत था कि प्रभु के पास शैतान के ऊपर शक्ति है।

परन्तु ऐसे भी लोग थे जो मसीह पर बालजबूल यानी शैतान की सामर्थ

के साथ दुष्टात्माओं का निकालने का आरोप लगाते थे। वचन कहता है, **''तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उसने उसे अच्छा किया, और वह बोलने और देखने लगा। इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, 'यह क्या दाऊद की सन्तान है!' परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, 'यह तो दुष्टात्माओं के सरदार बालज़बूल की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।'**

उसने उनके मन की बात जानकर उनसे कहा, 'जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है; और कोई नगर या घराना जिसमें फूट होती है, बना न रहेगा। और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य कैसे बना रहेगा? भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय करेंगे। पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। या कैसे कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक पहले उस बलवन्त को न बान्ध ले? तब वह उसका घर लूट लेगा। जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता वह बिखेरता है' '' (मत्ती 12:22–30)।

सच्चाई यह है कि यीशु परमेश्वर की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालता था और प्रेरित और जिनके ऊपर उन्होंने हाथ रखे थे वे भी ऐसा ही करते थे। यदि वे शैतान की सामर्थ के द्वारा काम कर रहे होते तो स्वाभाविक ही था कि उन्होंने उसे नहीं निकालना था। कृपया हमारे अपने समय में इन घटनाओं पर विचार करते हुए इन बातों को ध्यान में रखें।

अब जबकि प्रेरितों और जिनके ऊपर उन्होंने हाथ रखे थे उनकी मृत्यु हो जाने से चमत्कारी युग खत्म हो गया, तो शैतान को लोगों में उनकी इच्छा के विरुद्ध प्रवेश की अनुमति नहीं रही। परमेश्वर ने जो कि धर्मी है, लोगों के उसकी सेवा करना न चुनने पर, और बचाव के लिए किसी भी प्रकार के आश्चर्यकर्म न होने पर, बचावहीन लोगों को शैतान के वश में नहीं होने दे सकता था, यदि शैतान के पास वह सामर्थ होती।

इसका अर्थ यह हुआ कि आज लोगों में वैसे ही भूत, दुष्टात्माएं या बदरूहें नहीं होतीं जैसे मसीह और प्रेरितों के समय में होते थे। ऐसे लोग हैं जो दावा करते हैं कि आज लोगों में भूत होते हैं और ऐसे लोग हैं जो कहते हैं उनमें दुष्टात्माओं को निकालने की शक्ति है। परन्तु वे लोग कौन हैं? क्या ये

परमेश्वर के लोग हैं? चैक करें तो आप पाएंगे कि वे उन शिक्षाओं को मानने वाले लोग हैं जो बाइबल में नहीं मिलतीं। वे ऐसे प्रचारक हैं जो अपने आप को प्रभु की कलीसिया के लोग नहीं मानते, उन्होंने प्रभु का नाम नहीं पहना होता और वे बाइबल के उलट शिक्षा दे रहे होते हैं। अन्य शब्दों में, उनकी पहचान का हर निशान यह दिखाता है कि वे अपने आपको शैतान के लोग दिखाते हैं! जैसा कि यीशु ने कहा था, शैतान शैतान ही को कैसे निकाल सकता है?

नहीं, आज लोग दुष्टात्माओं से वैसे नहीं जकड़े होते जैसे मसीह और प्रेरितों के समय में होते थे। शैतान ज़्यादातर लोगों में पाया जाता है, चमत्कारी ढंग से नहीं बल्कि इसलिए क्योंकि उन्होंने उसे अंदर आने दिया है, अपने अंदर रहने दिया है और बुराई के लिए उन्हें प्रभावित करने दिया है पर वह उनमें उनकी मर्जी के बिना नहीं है। इसके अलावा वे किसी भी समय जब चाहें अपने पापों से मन फिराकर परमेश्वर की आज्ञा मानकर शैतान से पीछा छुड़ा सकते हैं।

परमेश्वर के वचन से अनजान और झूठे गुरुओं द्वारा भरमाए जाने वाले लोगों को आम तौर पर धार्मिक अगुओं द्वारा यह बताया जाता है कि आज शैतान उनकी इच्छा के विरुद्ध उन पर कब्जा कर सकता है। कई बार शारीरिक रूप में अपंग या किसी बीमारी के होने पर या मानसिक रूप में बीमार लोगों को कहा जाता है कि उन में दुष्टात्मा है, पर यह सच नहीं है। ये प्रचारक और ''जादू टोना करने वाले'' लोग ही अज्ञानी और अंधविश्वासी लोगों को अपने जाल में फंसाते हैं। उनका उद्देश्य सुनने वालों को यह विश्वास दिलाना होता है कि आज लोगों में भूत होते हैं और वे कीमत लेकर उन्हें निकाल सकते हैं। अंदाजा लगाएं कि वह ''कीमत'' किसे मिलती है! जाहिर है कि इन आत्मिक झूठों के पीछे मकसद बल और धन है।

हमें शैतान से और उसकी दुष्ट चालों और प्रभावों से डरना चाहिए। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि वह हमारे जीवनों में तब तक दाखिल नहीं हो सकता जब तक हम उसे आने नहीं देते। फिर से, **हम जब चाहें केवल प्रभु में विश्वास करके, अपने पापों से मन फिराकर, मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानकर और जैसा कि प्रेरितों 2:38 में साफ़ साफ़ कहा गया है, अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेकर, कभी भी उससे छुटकारा पा सकते हैं।** आज्ञा मानने के द्वारा हम अपने जीवनों में प्रभु के रूप में शैतान की जगह मसीह को बिठा देते हैं।

चमत्कारी चंगाई

मसीह में विश्वास करने वाले अधिकतर लोगों में यह आम मान्यता है कि आश्चर्यकर्म आज भी होते हैं। प्रचारक तथा ऐसी बातों को बढ़ावा देने वाले आम तौर पर मसीह के किए हुए आश्चर्यकर्मों को गिनाते हुए और पवित्र शास्त्र के कई वचनों को दिखाते हुए जो आश्चर्यकर्मों के बारे में कुछ कहती है, आम तौर पर बडे भावुक हो जाते हैं। वे इब्रानियों 13:8 जैसी आयतें भी बताते हैं जो कहती हैं, **''यीशु मसीह कल और आज और युगानयुग एक सा है।''** यह सच है पर इन शब्दों का अपने आप में यह अर्थ नहीं है कि यीशु आज भी चमत्कार करता है। पहले पुरुष और पहली स्त्री को आश्चर्यकर्म के द्वारा बनाया गया और उत्पत्ति 1:26, 27 के अुनसार उनकी सृष्टि में मसीह का योगदान है, पर आज वह भूमि की मिट्टी से नए लोग नहीं बना रहा। पवित्र शास्त्र की किसी आयत को संदर्भ से बाहर दोहराकर यह संकेत देने की कोशिश करना कि यह कोई बात सिखा रहा है केवल इसलिए काफ़ी नहीं है कि हम उसे सिखाना चाहते हैं बल्कि हमें आश्चर्यकर्मों को देखकर यह देखना आवश्यक है कि उन्हें किसने किया, वे क्यों किए गए और क्या प्रभु का इरादा और वायदा उन्हें आज भी किए जाने का है।

फिर जो लोग सिखाते हैं कि आश्चर्यकर्म हमारे समय के लोगों के लिए हैं, उनके पास बीमारों, अपंग लोगों, मर रहे लोगों और यह विश्वास करने वाले अन्य लोगों को जीने या सहायता के लिए शायद 'आश्चर्यकम' ही एक तरीका है। बहुत से प्रचारक प्रसिद्धि और पैसा पाने के लिए इस ढंग का इस्तेमाल करते हैं। उनका प्रचार तकरीबन पवित्र आत्मा पर और उन आश्चर्यकर्मों पर होता है, जो यीशु ने किए। फिर वे वायदा करते हैं कि सभी बीमार और पीड़ित लोग केवल यीशु में विश्वास करें तो उसमें भी आश्चर्यकर्म हो सकता है, लेकिन अस्पताल बीमारों से भरे रहते हैं, ऑपरेशन होते जा रहे हैं और आदमी की बीमारियों से निजात पाने के लिए दवाइयों पर करोड़ों रुपये खर्च किए जा रहे हैं पर लोग फिर भी मर रहे हैं। यदि आज भी चमत्कार वैसे ही हो रहे हों जैसे यीशु के समय में हो रहे थे, तो यह संसार तो बिल्कुल बदल जाए।

यह एक तथ्य है कि यीशु के समय में उसके द्वारा किए जाने वाले आश्चर्यकर्मों से हर बीमारी, तकलीफ़, रोग और मौत बंद नहीं हो गई। हमें याद रखना होगा कि वह संसार में से हर प्रकार की बीमारी को मिटाने के लिए नहीं आया था। वह सब अपंगों को चंगा करने के लिए, सब अंधों को

आंखें देने के लिए, सब बहरों को कान देने के लिए या सब मुर्दों को जिलाने के लिए नहीं आया था। उसने आश्चर्यकर्म किए, **केवल लोगों को चंगा करने के लिए नहीं बल्कि उन्हें यह यकीन दिलाने के लिए कि उसे परमेश्वर की ओर से भेजा गया था और सचमुच में परमेश्वर का पुत्र था।** वह खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए यानी लोगों की आत्माओं को बचाने के लिए आया (लूका 19:10)।

यदि आप मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना की पुस्तकों को पढ़ें तो आपको बार बार यह मिलेगा कि लोगों के उसके किए आश्चर्यकर्मों को देखने के बाद उस पर विश्वास करने पर जोर दिया गया है। उदाहरण के लिए हम पढ़ते हैं, **''जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्व में था, तो बहुतों ने उन चिह्नों को, जो वह दिखाता था, देखकर उसके नाम पर विश्वास किया''** (यूहन्ना 2:23)। बाद में यूहन्ना ने लिखा, **''यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ''** (यूहन्ना 20:30, 31)।

सो यीशु ने आश्चर्यकर्म विश्वासी बनाने के लिए किए। जिन लोगों को चंगाई आदि मिली थी वे शारीरिक रूप में लाभान्वित हुए थे यह सच है, पर चंगाई का मुख्य उद्देश्य यह नहीं था। फिर, असली उद्देश्य आश्चर्यकर्मों को देखने वालों को विश्वासी बनाना था। आज के विश्वास से चंगाई देने वाले लोग यह प्रभाव छोड़ते हैं कि प्रभु के लोगों को चंगाई देने का उद्देश्य केवल उन्हें चंगा करना था। जिन बातों की वे दलील देते हैं उसके अनुसार तो किसी को भी बीमार नहीं होना चाहिए और न ही किसी को मरना चाहिए और यदि वह मर भी जाएं तो उसे फिर से जिला दिया जाना चाहिए। परन्तु अजीब बात यह है कि उनके दावे गलत साबित होते हैं और सब कुछ वैसा ही रहता है।

मैं आपको दिखाना चाहता हूं कि यह कथित चंगाई देने वाले कहां पर शानदार मौके खो देते हैं। उदाहरण के लिए जब भारत की प्रधानमंत्री की हत्या हुई तो इन चंगाई देने वालों में से किसी के पास यह अद्भुत अवसर नहीं था कि वह उसे मुर्दों में से जिला दें? बहुत साल पहले जब अमरीका के राष्ट्रपति जॉन एफ़ कैनेडी की हत्या हुई तो कोरल रॉबर्ट जैसे किसी ने जाकर उसकी लाश पर प्रार्थना क्यों नहीं की कि उसे मुर्दों में से जिला दे?

बेशक ऐसे बहुत से और मौके हैं जो ''विश्वास से चंगाई देने वालों'' ने खो दिए हैं। परन्तु हम संसार की इन बड़ी हस्तियों की बात क्यों कर रहे हैं? क्योंकि यदि वे उन्हें जिला पाते तो आप कल्पना करें कि उन्हें इन चमत्कारों

से कितनी प्रसिद्ध मिल जाती है। हर जगह ऐसे चमत्कारों से लोग मसीह में विश्वास करने लगते। पर आप जानते हैं कि उन्होंने इन लोगों को मुर्दों में से जिलाने का प्रयास क्यों नहीं किया? **क्योंकि वे उन्हें जिला नहीं सकते थे।** बेशक वे हर प्रकार के बहाने बनाएंगे। वे कहेंगे कि ये चमत्कार वे नहीं बल्कि मसीह करता है। वे कहेंगे कि किसी खास व्यक्ति को मुर्दों में से जिलाने के लिए प्रभु से कहना उसकी परीक्षा लेना होगा। पर यदि प्रभु उनके द्वारा काम कर रहा है और यदि सारे संसार को विश्वासी बनाने का यह एक अच्छा साधन है तो वे प्रभु की परीक्षा क्यों कर रहे हैं और यह प्रसिद्ध ''विश्वास से चंगाई देने वाले'' अपने खुद के परिवार के लोगों को मुर्दों में से क्यों नहीं जिला पाते, वे बुढ़ापे और बीमारी के कारण खुद क्यों मर जाते हैं? उनके खोखले दावे तब और साफ़ हो जाते हैं जब हम उनके अपने जीवनों में बीमारी और मौत को देखते हैं।

अरे हां वे पीठ दर्द, सिर दर्द, सीने में दर्द, बुखार और ऐसी कई दिखाई न देने वाली बातों को ठीक करने का दावा करेंगे पर डॉक्टर आपको बताएंगे कि आदमी की ज़्यादातर बीमारियां ''उसके दिमाग में'' होती हैं और अगर लोगों को कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो यकीन दिला सके कि वे चंगा कर सकते हैं, तो वे ''चंगे'' हो सकते हैं। परन्तु हम इन लोगों के किसी की टांग, बांह, अंधापन ठीक करने और ऐसे ऐसे काम करने की इंतजार में हैं। जब वे ये काम करने लगेंगे तो बेशक अधिकतर लोगों का ध्यान उनकी बातों पर जाएगा। पर यह अचम्भे काम उनकी ढोंगी शक्तियों के बस की बात नहीं हैं।

चमत्कार क्या होता है? किसी ने इसकी परिभाषा कुछ भी न होने पर उसमें से कुछ बनाने या किसी की टांग या बांह न हो तो उसे ठीक करने या मुर्दों को जिलाने और ऐसे ऐसे बहुत से प्रकृति के नियम के उलट होने वाले काम के रूप में दी। चमत्कार कोई ऐसी पहेली नहीं है जो हमें समझ में न आती हो। हमें बहुत सी बातों की समझ नहीं होती है कि वे कैसे काम करती हैं पर वे प्रकृति के नियम के अनुसार या किसी स्कीम या पैटर्न के अनुसार होती हैं, जिसे मनुष्य बना सकता है।

नये नियम में केवल मसीह और प्रेरित और जिन पर उन्होंने हाथ रखे थे, भी आश्चर्यकर्म कर सकते थे। जैसा कि हमने देखा है कि उन्होंने ऐसा लोगों को विश्वासी बनाने के लिए किया। यह नये नियम के लिखित रूप में दिए जाने से पहले की बात है। इसके पूरा होने और मनुष्य को दे दिए जाने के बाद चमत्कारी युग खत्म हो गया। आज हमें अपने मनों में विश्वास लाने के लिए आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं है। पौलुस ने कहा है, **''अतः विश्वास**

सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)। यदि आप प्रभु की बात पर जो उसने अपने वचन में कही है विश्वास नहीं करते तो फिर आप कोई चमत्कार भी देख लेंगे तो भी विश्वास नहीं करेंगे।

ऐसा नहीं है कि प्रभु अब आश्चर्यकर्म कर नहीं *सकता* यानी ऐसा नहीं है कि अब वह शक्तिहीन हो गया है और उसके लोग बिना सामर्थ के हैं। सच तो यह है कि उसके पास और उसके लोगों के पास पहले की तरह ही सामर्थ है, पर परमेश्वर ने केवल काम करने का एक अलग तरीका चुन लिया है जो कि असल में **बेहतर तरीका** है।

आप पूछ सकते हैं कि बेहतर तरीका क्या हो सकता है। मैं बताता हूं: हिंदुओं में ''महात्मा'' होते हैं जो चमत्कार करने का दावा करते हैं; ''तांत्रिक'' होते हैं जो भूत निकालने का दावा करते हैं; पैंटिकास्टल सम्प्रदाय के प्रचारक भी हैं जो चमत्कार करने का दावा करते हैं। सवाल यह है कि क्या ये सब दावे सही हैं? यदि आपको शक है तो आप उनके सही या गलत होने को साबित कर सकते हैं? क्या आप किसी हिंदू स्वामी के चरणों में बैठने के लिए जा सकते हैं? क्या आप प्रचारक के दावों की जांचने के लिए ''पर्दे के पीछे'' देखने जा सकते हैं? नहीं, हम सच्चाई का पता लगाने या झूठ की पोल खोलने के लिए दुनिया भर में नहीं घूम सकते। हमें कैसे पता चल सकता है कि किसी सिखाने वाले पर यकीन करें या न? **उसकी बातों को सुनकर और फिर उन्हें बाइबल के साथ मिलाकर।** यह देखने पर कि जो कुछ ये लोग सिखाते हैं वह परमेश्वर के वचन के उलट हैं तो हमें पता चल सकता है कि वे हमारे प्रभु की सामर्थ के द्वारा चमत्कार नहीं कर रहे हैं! **सच्चाई पर यकीन करवाने का परमेश्वर का ''उत्तम ढंग'' उसकी प्रेरणा से संसार को दिए गए लिखित वचन के द्वारा है!**

आश्चर्यकर्म या चमत्कार, चिह्न या अचम्भे काम केवल थोडी देर के लिए थे। आज हमें उन पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आज हमारे पास पढ़ने, अध्ययन करने, विश्वास करने और आज्ञा मानने के लिए परमेश्वर का वचन है। जब हम ऐसा करते हैं तो प्रभु हमारा उद्धार करता है और हमें आशीष देता है। इससे बढ़कर हम क्या मान सकते हैं?

अन्य-भाषाओं में बातें करना

पैंटिकॉस्टल और करिश्माई गुटों में तो खासकर, परन्तु कुछ अन्य धार्मिक समूहों के लोगों में भी यह धारणा पाई जाती है कि आज लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता है, और उसके निशान के तौर पर इसे प्राप्त करने वाले लोग ''अन्य भाषाओं में'' बोलते हैं। उनका अन्य भाषाओं में बातें करना मुंह से अजीब–अजीब आवाजें निकालना होता है, जिन्हें वे सफाई देते हुए कहते हैं कि वह स्वर्गीय भाषा है जिसे केवल परमेश्वर ही समझता है। कई बार किसी के, जिसके लिए कहा जाता है कि उसे पवित्र आत्मा मिला हुआ है, ये आवाज़ें ''न निकाल पाने'' पर वे मान लेते हैं कि लोगों को यकीन दिलाने के लिए कि उन्हें पवित्र आत्मा मिला हुआ है, वे वैसा ही करने की कोशिश करते हैं, जो वे दूसरों को करते देखते हैं। मैं यह सब इन लोगों की नुक्ताचीनी के लिए नहीं कह रहा, बल्कि वही बता रहा हूं जो हमने उनसे सुना है जिन्होंने यह देखकर कि यह सब गलत है, उन्हें छोड़ दिया।

आइए अब हम वचन में से देखते हैं कि बाइबल इस विषय पर क्या कहती है। मसीह ने वायदा किया था कि अपने जाने के बाद उसने प्रेरितों के साथ होने के लिए पवित्र आत्मा को भेजना था (यूहन्ना 14:26)। जब प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला तो उसका एक चिह्न यह था कि जैसे ''**आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी**'' थी, वे अन्य अन्य भाषाओं में बातें करने लगे थे (प्रेरितों 2:1–4)। वचन में हम आगे पढ़ते हैं, **''आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रह रहे थे। जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं''** (प्रेरितों 2:5–6)।

कहानी में आगे हम देखते हैं कि कई देशों से लोग वहां आए हुए थे, जो हैरान और परेशान हो गए थे। उन्होंने यह निचोड़ निकाल लिया कि ये गलीली, जो कि गरीब और अनपढ़ हैं, इन्होंने शराब पी रखी है [उनकी यह व्याख्या कितनी मूर्खता भरी थी!]। परन्तु पतरस ने समझाया था कि जैसा लोगों को लग रहा था, ऐसा कुछ नहीं था। यानी उन्होंने कोई नशा नहीं किया हुआ था क्योंकि अभी तो सुबह ही हुई थी, और दुनिया भर से धार्मिक पर्व मनाने के लिए आए यहूदियों के लिए सुबह–सुबह मदिरा पीने का सवाल ही नहीं था, बल्कि यह सब तो उस वचन के अनुसार हो रहा था जो सदियों पहले योएल भविष्यद्वक्ता की भविष्यद्वाणी के द्वारा कहा गया था कि परमेश्वर

अन्त के दिनों में मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलेगा (प्रेरितों 2:7–17)।

जैसा कि ध्यान दिलाया गया है, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए होने के कारण प्रेरित अन्य भाषाओं में बोल सकते थे। प्रभु को मालूम था कि आने वाले दशकों में उन्होंने संसार के विभिन्न भागों में कई विभिन्न भाषाओं के लोगों में सुसमाचार को सुनाने के लिए जाना था। इसलिए उसने उन्हें जहां भी उन्होंने जाना था वहां बिना सीखे या बिना अनुवादक की मदद के हर जगह के लोगों की भाषा बोल पानी थी। इससे लोगों को यह यकीन भी हो जाना था कि उन्हें परमेश्वर की ओर से भेजा गया था और इससे प्रेरितों के लिए सुसमाचार को शीघ्रता से फैला पाना था।

परन्तु यह ''अन्य'' भाषा है क्या? यह एक भाषा थी! सताव के कारण, मसीही लोग इधर से उधर और उधर से इधर भारी संख्या में जाते रहते थे। किसी ने जिसे आश्चर्यकर्म के द्वारा किसी विशेष भाषा को जिसे उसने सीखा न हो बोलने का दान मिला होने के बावजूद यदि वह कलीसिया में किसी ऐसी जगह संगति करता जहां किसी को वह भाषा न आती हो तो उसे अपने उस दान को ''दिखाने'' की मनाही थी क्योंकि इससे सुनने वालों को कोई लाभ नहीं होना था। यदि वहां कोई अनुवादक होता जो उस भाषा को बोल सकता और उसका अनुवाद कर सकता तब उस व्यक्ति को बोलने की छूट थी; नहीं तो उसे खामोश रहने के लिए कहा जाता था।

पौलुस ने कहा, **''मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि मैं तुम सब से अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूं। परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है कि दूसरों को सिखाने के लिए बुद्धि से पांच ही बातें कहूं''** (1 कुरिन्थियों 14:18)। हम पहले ही समझा चुके हैं कि प्रेरितों और जिनके ऊपर उन्होंने इसलिए हाथ रखे थे कि अन्य भाषाएं दूसरों को यह यकीन दिलाने के लिए कि उन्हें परमेश्वर की ओर से ही भेजा गया था, बोल सकते थे। परन्तु जब आप किसी आधुनिक आराधना में जाएं जहां कहा जाता है कि ''अन्य भाषाएं'' बोली जाती हैं, ये उन लोगों के द्वारा बोली जा रही होती हैं, जो पहले से ही ''विश्वासी'' होते हैं। इसमें भी ये लोग वचन में बताए तरीके को नहीं मान रहे होते हैं।

परन्तु उनका क्या जिन्हें पवित्र आत्मा का सामान्य या वह नाप मिला है जिसके विषय में हम प्रेरितों 2:38 में पढ़ते हैं? क्या ये लोग अन्य भाषा बोल सकते थे? नहीं! नए नियम में और कहीं पर भी कोई उदाहरण नहीं मिलता कि इन लोगों ने कभी अन्य भाषा बोली हो। इसके अलावा, आज जब हमारे बीच में प्रेरित नहीं हैं, और जिन लोगों के ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, वे

भी मर चुके हैं, जो चमत्कारी ढंग से वैसे अन्य भाषाएं बोल सकते थे, जैसे प्रेरित बोल सकते थे। आज कुछ लोग दावा करते हैं कि वे बोल सकते हैं, परन्तु वे केवल मुंह से ऐसी ऐसी आवाज़ें ही निकालते हैं जिनका न कोई अर्थ होता और न किसी को उनकी समझ आती है। जब वे संसार के किसी और भाग में जाते हैं जहां दूसरी भाषा बोली जाती है तो उन्हें वहां की भाषा सीखनी पड़ती है ताकि वहां पर बात कर सकें या किसी को उनके लिए अनुवाद करना पड़ता है। यह इस बात का सबूत होना चाहिए कि उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला है और इस कारण वे प्रेरितों की तरह अन्य भाषाओं में बात नहीं कर सकते।

अंत में, पौलुस ने कहा कि एक दिन आना था जब अन्य भाषाएं समाप्त हो जानी थीं। यानी वह दिन आना था जब आश्चर्यकर्मों के द्वारा अन्य भाषाएं बोलना बंद हो जाना था। यह कब होना था? नया नियम मुकम्मल रूप में मनुष्य को दे दिया जाने पर। पौलुस ने कहा, **"प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी। परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा"** (1 कुरिन्थियों 13:8–10)। यहां वह "सर्वसिद्ध" किसे कहता है? याकूब इसे **स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था** कहता है, जो कि नया नियम ही है (याकूब 1:25), क्योंकि **इस वर्तमान संसार में और कोई भी वस्तु सिद्ध (परफैक्ट, या मुक्कमल) नहीं हैं।** जब तक नया नियम नहीं दिया गया था तब तक आश्चर्यकर्म, अन्य भाषाएं वगैरा, मनुष्य की सहायता के लिए टेक थीं। परन्तु जब नया नियम मिल गया तो इन दूसरी चीज़ों की आवश्यकता नहीं रही।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. किसी में "भूत होने" पर आज कुछ लोगों का क्या मानना है? क्या मसीह और प्रेरितों के समय में लोगों में "भूत होने" की बातें मिलती हैं?
2. दुष्टात्माओं को निकालने की मसीह और प्रेरितों की सामर्थ से क्या साबित हुआ?
3. संदेहवादियों ने प्रभु पर .... की सहायता से .... को निकालने का .... आरोप लगाया (मत्ती 12:22–30)।
4. क्या धर्मी परमेश्वर ने उस समय जब आश्चर्यकर्म नहीं होने थे, बेबस

लोगों पर उनकी इच्छा के विरुद्ध शैतान को हावी होने देना था?

5. जो लोग यह दावा करते हैं कि आज लोगों में भूत होते हैं, वे वही लोग हैं जो क्या करने के योग्य होने का दावा करते हैं?
6. हम कैसे जान सकते हैं कि ये लोग परमेश्वर की सामर्थ से कुछ नहीं कर रहे हैं?
7. हमें शैतान और उसके .... चाहिए पर हमें हमेशा क्या याद रखना चाहिए?
8. यदि आज के ''विश्वास से चंगाई देने वाले'' लोग संसार के किसी प्रसिद्ध व्यक्ति को मुर्दों में से जिला देंगे तो उस चमत्कार का संसार पर क्या प्रभाव पड़ेगा? वे मुर्दों को जिलाने के योग्य होने का दावा करते हैं तो फिर वे जिलाते क्यों नहीं हैं?
9. ''विश्वास से चंगाई देने वाला'' जब किसी ऐसे देश में जाता है जहां कोई और भाषा बोली जाती हो तो क्या वह चमत्कारी ढंग से उस भाषा को बोल सकता है?
10. 1 कुरिन्थियों 13:8–10 के अनुसार वह समय आना था जब चमत्कार बंद हो जाने थे। यह कब हुआ? आज संसार में केवल ''सिद्ध'' वस्तु क्या है।

पाठ 8

आज परमेश्वर मनुष्य के साथ किस प्रकार बातचीत करता है?

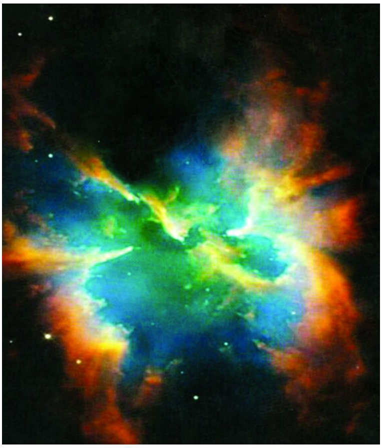

बहुत से लोगों का मानना है कि परमेश्वर आज मनुष्य के साथ, अपने लिखित वचन से अलहिदा, अलग तरीके से सीधे बातचीत करता है। उनका कहना होता है कि परमेश्वर ने उनके साथ बात करके उन्हें फलां–फलां बात बताई है या यह कि प्रभु ने उन पर प्रगट किया है कि फलां–फलां बात होने वाली है। परमेश्वर ने मेरे साथ तो कभी इस प्रकार से बात नहीं की। आप से की है? अगर वह एक व्यक्ति पर किसी सच्चाई को प्रगट करने के लिए उससे सीधे बात करता है और दूसरों के साथ बात नहीं करता है तो क्या इसका अर्थ यह नहीं होगा कि परमेश्वर पक्षपात करने वाला परमेश्वर है? आइए देखते हैं कि बाइबल इस बारे में क्या कहती है।

यह सच है कि परमेश्वर अलग–अलग समयों पर लोगों से अलग–अलग तरीकों से बातें किया करता था। शुरू में वह पुरखाओं से या घर के मुखियों से सीधे बातचीत करता था और मुखिया उन बातों को जो परमेश्वर ने उससे कहा होता था, अपने परिवार के लोगों को बता दिया करता था। बाद में हम देखते हैं कि परमेश्वर नबियों के द्वारा भी बातें किया करता था और वे लोग परमेश्वर की बात को अपने लोगों तक पहुंचा दिया करते थे। अन्त में, परमेश्वर ने अपने पुत्र अर्थात मसीह यीशु के द्वारा बातें कीं। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने यह लिखने के समय यही बातें कही थीं, **''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप–दादों से थोड़ा–थोड़ा करके और भांति–भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि की रचना की है''** (इब्रानियों 1:1, 2)।

पतरस ने घोषणा की, **''क्योंकि जब हमने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का, और आगमन का समाचार दिया था तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं था वरन हमने आप ही उसके प्रताप को देखा था। क्योंकि जब उसने परमेश्वर पिता से आदर, और महिमा पाई और उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं।'' तब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे और स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी। हमारे पास जो भविष्यवक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे''** (2 पतरस 1:16–21)।

सबसे पहले ध्यान देने वाली बात यह है कि पतरस उस समय की बात कर रहा है जब प्रभु का रूपांतर हुआ था और उन्हें आकाश से यह आवाज सुनाई दी थी कि **''यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं। इस की सुनो''** (मत्ती 17:5)। यूहन्ना ने मसीह को वह वचन बताया जो परमेश्वर का संदेश लेकर आया था। हम पढ़ते हैं, **''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही, आदि में परमेश्वर के साथ था''** (यूहन्ना 1:1, 2)। बाद में उसने कहा, **''यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उस के नाम से जीवन पाओ''** (यूहन्ना 20: 30, 31)।

फिर, 2 पतरस 1:21 में बताया गया है कि भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। पौलुस हमें बताता है, **''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए''** (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। पवित्र शास्त्र के परमेश्वर की प्रेरणा से रचा होने की बात कहते हुए पौलुस पवित्र आत्मा के इसे लिखने के लिए कुछ लोगों को निर्देश देने की बात कर रहा था। उन्होंने जो भी लिखा उसके लिए उन्हें उसी

ने गाइड किया, या दिशा दी। इसकी मौखिक प्रेरणा दी गई। यह मनुष्य का नहीं बल्कि परमेश्वर का वचन है। इसीलिए यह मनुष्य को हर भले काम के लिए तत्पर करता है। परमेश्वर को मालूम था कि वह मनुष्य को क्या बताना चाहता है और उसने उसे वही बता दिया और पवित्र आत्मा ने उसे लिखवाने की प्रेरणा या निर्देश दिया। पतरस ने फिर लिखा, **''... उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्‌गुण के अनुसार बुलाया है''** (2 पतरस 1:3)। ध्यान दें कि प्रभु ने हमें जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखने वाली सब बातें दी हैं। उसने यह सब कैसे किया है? अपने वचन के द्वारा।

प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था, और उन्होंने कुछ चुने हुए चेलों के ऊपर हाथ रखे थे ताकि उन्हें पवित्र आत्मा की आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल सके। यह सब सारी सच्चाई में उनकी अगुआई करने और दिशा देने के लिए किया गया था, क्योंकि तब तक मनुष्य को देने के लिए नया नियम अभी पूरा तैयार नहीं हुआ था। पौलुस ने कहा कि जब वह जो सर्वसिद्ध है, यानी नया नियम, आएगा, तब आश्चर्यकर्मों की सहायता बंद हो जाएगी। अन्त में जब नया नियम पूर्ण रूप में मनुष्य को सौंप दिया गया, तो याकूब ने घोषणा की, **''पर जो व्यक्ति स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता है''** (याकूब 1:25)। उसने यह भी कहा, ''परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं'' (याकूब 1:22)।

मसीह ने कहा था कि उसका वचन कभी टलेगा नहीं। सुनें कि उसने क्या कहा था, **''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी''** (मत्ती 24:35)। फिर पतरस ने कहा, **''परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है। और यही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था''** (1 पतरस 1:25)। यूहन्ना ने लिखा, **''मैं हर एक को, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं: यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को, जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा''** (प्रकाशितवाक्य 22:18–19)।

सुसमाचार के सम्बन्ध में प्रचार करते हुए पौलुस ने कहा, **''मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह में बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो श्रापित हो। जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो श्रापित हो''** (गलातियों 1: 6–9)।

इन सब वचनों से हमें यह ज्ञात होता है कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की ओर दिया उसका वचन है, और यह मनुष्य को सम्पूर्ण रूप में दिया गया है और हमारे आत्मिक जीवन को चलाने के लिए उसी की आवश्यकता है। पौलुस हमें बताता है कि **''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है''** (रोमियों 10:17)। वह ''मसीह का वचन'' किसे कहता है? परमेश्वर के उसी लिखित वचन को जो आज हमारे पास है, और जो नये नियम में प्रगट किया गया है।

क्या परमेश्वर लोगों को आज नये–नये प्रकाशन देता है? यानी क्या वह हम में से कुछ लोगों को कुछ ऐसा बताता है जो उसने दूसरे लोगों को नहीं बताया? बिल्कुल नहीं। यदि हमारे पास परमेश्वर का सम्पूर्ण प्रकाशन नहीं है और वह आज भी मनुष्य पर अपनी इच्छा को प्रकट किए जा रहा है, तो फिर बाइबल का क्या काम है? यदि वह आज भी लोगों से सीधे बात किए जा रहा है तो हमारे पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि वह हम से क्या चाहता है, या कौन सच बोल रहा होगा और कौन बातें बना रहा होगा कि उसे नया ''प्रकाशन'' मिला है। परमेश्वर के लिए किसी एक व्यक्ति को एक बात जबकि किसी दूसरे को कोई और बात बताना बड़ा ही उलझाने वाला होगा। अगर प्रभु हम से उसके वचन में जोड़ने या उसमें से निकालने की मनाही करता है तो हम यह कैसे सोच सकते हैं कि किसी को प्रेरणा का नया संदेश देकर वह अपनी ही दी हुई आज्ञा को तोड़ सकता है?

इससे हमें यकीन हो जाना चाहिए कि परमेश्वर अपने वचन से अलहिदा या उससे अलग किसी से बात नहीं करता है। ''चमत्कारों'' या ''भाषाएं'' बोलने की तरह ही जो लोग दावा करते हैं कि परमेश्वर उनके साथ बात करता है, वे दूसरों पर यह आरोप लगाते हुए कि वे परमेश्वर के जन नहीं

हैं, एक–दूसरे का विरोध करते हैं। और तो और, वे मनुष्यों की बनाई हुई कलीसियाओं के सदस्य होते हैं, जिनके नाम मनुष्यों के दिए होते हैं और जिनकी आराधना के तरीके परमेश्वर द्वारा अधिकृत नहीं होते। यकीनन, अगर परमेश्वर इन लोगों के साथ बात करता होता तो उसने उन्हें वे सब बातें करने को न कहनी थीं जो नये नियम की उसकी पहले से दी गई शिक्षा के विपरीत हो।

प्रचार करने के लिए बुलाए गए

प्रचार करने के लिए बुलाहट के बारे में कुछ लोगों के दावों की अलग–अलग कहानियां होती हैं। एक आदमी का कहना था कि उसे आकाश में अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर G-P-C दिखाई दिए थे। इसका अर्थ उस ने Go *Preach Christ* (गो–प्रीच–क्राइस्ट) यानी ''जाकर मसीह का प्रचार कर'' निकाला। उसे ऐसा उपदेश देते हुए सुनने के बाद जिसका बाइबल से कोई सम्बन्ध नहीं है, किसी ने टिप्पणी की कि वह एक किसान है इसलिए उसके लिए इन अक्षरों का अर्थ बेशक ''*Go Plow Corn*'' (गो प्लोअ कॉर्न) यानी ''जाकर मक्की में हल चला'' है। ऐसे भी लोग हैं जो यह दावा करते हैं कि प्रभु ने उनके साथ बात की है और उन्हें जाकर प्रचार करने की आज्ञा दी है। कोई ''स्वप्न'' और कोई ''दर्शन'' मिलने का दावा होता है और दावा किया जाता है कि ये सब चमत्कारी घटनाएं हैं। परन्तु क्या परमेश्वर लोगों को अपने वचन का प्रचार करने के लिए बुलाता है? यदि हां तो क्या वह ऐसे तरीकों से उन्हें बुलाता है?

स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस जाने से पहले प्रभु ने अपने चेलों को यह बड़ी आज्ञा दी थी जिसे हम ग्रेट कमीशन कहते हैं, **''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा''** (मरकुस 16:15–16)। इसी बात को उस ने फिर से कहा, **''इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं''** (मत्ती 28:19–20)। ध्यान दें कि उसकी आज्ञा है: **''जाकर ... सुसमाचार प्रचार करो।''** किसे प्रचार करो? **सारे जगत को, यानी सारी सृष्टि के लोगों को।** जाए कौन? **प्रेरित और वे लोग जिन्होंने**

बपतिस्मा लिया है और मसीह में आ गए हैं। हमने भी प्रभु को ग्रहण किया है इसलिए हमें भी जाकर लोगों को यीशु के सुसमाचार का प्रचार करना है।

कृपया ध्यान दें कि नये नियम में आपको कहीं पर भी पढ़ने को नहीं मिलता कि परमेश्वर के लोगों को आकाश में कोई निशान दिखाई दिया हो या दर्शन मिला हो या उसे कोई आवाज़ आई हो जिसने उनसे कहा हो कि जाकर परमेश्वर के वचन का प्रचार करो। न ही प्रभु आज किसी को इस प्रकार से बुलाता है। जाकर प्रचार करने की आज्ञा उसने पहले ही अपने लोगों को दे दी थी। उसे किसी के पास व्यक्तिगत रूप से जाकर उन्हें अपने सुसमाचार का प्रचार करने की आज्ञा देने, या उन पर दबाव डालने की आवश्यकता क्यों होगी?

जब हम पाप में थे, यानी संसार में थे, तो प्रभु ने हमें आकर आज्ञा मानने के लिए बुलाया था, तो उसने हमें कैसे बुलाया था? स्वप्न से या चुपचाप या फिर धीमी सी आवाज़ के द्वारा? नहीं! थिस्सलुनीके के मसीहियों से पौलुस ने कहा कि **"... उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो"** (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। वह हमें उसी प्रकार से बुलाता है, सुसमाचार के प्रचार के द्वारा। जैसा कि उसके वचन में लिखा हुआ है कि वह लिखित वचन के द्वारा लोगों को बुलाता है। मसीह ने कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे" (मत्ती 11:28–30)।

इसलिए सुसमाचार मिट्टी के बर्तनों में रखा हुआ है यानी इसे संसार तक पहुचांने के लिए उन मनुष्यों को सौंपा गया है जो प्रभु के हैं (2 कुरिन्थियों 4:7)। पौलुस ने कहा था कि यदि कोई स्वर्गदूत भी आए और उस सुसमाचार से हट कर कोई और सुसमाचार सुनाए जो उसने न सुनाया था तो परमेश्वर का श्राप उस पर पड़ेगा (गलातियों 1:6–9)। कहने का अर्थ यह हुआ कि प्रभु ने पवित्र शास्त्र में अपने सुसमाचार को प्रकट कर दिया है। जो लोग इसकी आज्ञा मानते हैं उन्हें दूसरों तक पहुंचाने का काम किया गया है और जब हमें भी इसे ढूंढ़ने और इसकी आज्ञा मानने पर, "सुसमाचार के द्वारा बुलाया" जाता है। जिससे उन पर भी यीशु मसीह के संदेश को सुनाने की ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है।

अब हमें इस बात को इस तरह से नहीं समझना चाहिए कि सब लोगों को खड़े होकर सभा में प्रचार करना है। स्त्रियों को पुरुषों और स्त्रियों की मिली

–जुली सभा में प्रचार करके पुरुषों पर हुकुम चलाने की मनाही है। कलीसिया की महिलाएं अकेले में पुरुषों और महिलाओं को सिखा सकती हैं, वे स्त्रियों की सभा में और बच्चों को सिखा सकती हैं, परन्तु कलीसिया में जहां पुरुष भी हों वहां उन्हें चुप रहने को कहा गया है (1 कुरिन्थियों 14:34; 1 तीमुथियुस 2:11–12)। डिनोमिनेशनों में आजकल स्त्रियां प्रचारक होती है। जब–जब वे पुरुषों और स्त्रियों की मिली जुली सभा में पुलपिट पर खड़ी होती हैं, तब–तब वे निजी तौर पर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर रही होती हैं। जहां तक मुझे मालूम है उनमें से 100 फीसदी महिलाएं साधारण लोगों के बीच प्रचार करके परमेश्वर की आज्ञा तो तोड़ती ही हैं, गलत शिक्षा देकर वे परमेश्वर और मनुष्य का अपकार भी करती हैं।

परन्तु पुरुषों को क्या करना चाहिए? सब पुरुष सभा में खड़े होकर प्रचार नहीं करना चाहते, या उनके पास योग्यता या प्रशिक्षण नहीं होता। यदि नहीं कर सकते तो उन्हें सभा में खड़े होकर प्रचार नहीं करना चाहिए। परन्तु फिर भी जब कोई परमेश्वर की आज्ञा मानकर बपतिस्मा ले लेता है तब उसकी यह जिम्मेदारी है कि वह दूसरों को प्रचार करे तथा उन्हें यीशु और उसके उद्धार के विषय में बताएं।

आज ऐसे, भी लोग हैं जिन्हें कुछ आता नहीं है और न ही उन्हें बाइबल का ज्ञान है, लेकिन वे कहते हैं कि हमें प्रचार के लिए परमेश्वर की बुलाहट आई है तथा परमेश्वर उन्हें बताएगा कि उन्हें क्या प्रचार करना है। ऐसा कहकर वे गलत बोल रहे हैं तथा वे झूठ का प्रचार करते हैं और परमेश्वर कभी भी झूठ का प्रचार करने में उसकी अगुआई नहीं करेगा। ये लोग ऐसी बातों का प्रचार करते हैं जिनके विषय में हम बाइबल में कहीं नहीं पढ़ते। वे ऐसी कलीसियाओं में हैं, जिनके विषय में हम बाइबल में कहीं नहीं पढ़ते। वे शायद अपने को प्रचारक तो कहते हैं परन्तु वे झूठ का प्रचार करते हैं।

हमें यूहन्ना की चेतावनी पर ध्यान देना चाहिए, **''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: वरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं''** (1 यूहन्ना 4:1)। यूहन्ना ने कहा कि बहुत से झूठे नबी, शिक्षक या प्रचारक संसार में निकल पड़े थे और आज भी बिल्कुल वैसा ही है, जैसा तब था जब उसने कहा कि हमें इन लोगों को परखना चाहिए यानी हमें परमेश्वर के वचन के साथ उनके प्रचार को मिलाना चाहिए। यदि वे बातें जो कहते हैं पवित्र शासत्र में नहीं बताई गईं, यदि उनकी शिक्षाएं जो प्रभु ने कहा है उससे मेल नहीं खाती तो वे चाहे कितने भी दावे करें, वे झूठे प्रचारक हैं।

यूहन्ना ने कहा, **''जो कोई मसीह की शिक्षा से आगे बढ़ जाता है, और उसमें बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं; जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी। यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उस के बुरे कामों में साझी होता है''** (2 यूहन्ना 9–11)।

हां, आज हमें प्रचारकों की आवश्यकता है, और ऐसे प्रचारक जिन्हें अच्छा ज्ञान है जो केवल सत्य का प्रचार करते हैं। हमें ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो प्रभु से प्रेम करते है। हमें ऐसे प्रचारकों की आवश्यकता नहीं है जो पैसे के लिए काम करते हैं। जवान प्रचारक तीमुथियुस को प्रेरित पौलुस इस प्रकार से लिखता है, **''परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, उसे और उसके प्रगट होने, और राज्य की सुधि दिलाकर मैं तुझे आदेश देता हूं कि तू वचन का प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा। क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएंगे। पर तू सब बातों में सावधान रह, दुख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर और अपनी सेवा को पूरा कर''** (2 तीमुथियुस 4:1–5)। हम यहां पर पौलुस की कही बात पर गम्भीरता से विचार करें तो बेहतर होगा। जो लोग दूसरों के लिए जीवन की रोटी तोड़ने का साहस करते हैं एक दिन उन्हें उस सबका जो उन्होंने बताया है, हिसाब देना होगा। यह सुनिश्चित करें कि हम **केवल सुसमाचार का ही प्रचार** करेंगे, परन्तु हम साफ–साफ और प्यार से केवल सुसमाचार को सुनाएंगे, लोगों को अच्छा लगे या न।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. इब्रानियों 1:1, 2 बताता है कि परमेश्वर ने कितने तरीके से मनुष्य के साथ बात की है?
2. 2 पतरस 1:21 के अनुसार पुराने नियम के नबियों और भविष्यवक्ताओं ने .... की प्रेरणा से बातें करते थे।
3. आज लोगों को अगुआई कैसे मिलती है? परमेश्वर की ओर से मिले सीधे संदेश से या फिर उसके लिखित वचन से? (याकूब 1:22)।
4. वचन में जोड़ने या इसमें से निकालने के सम्बन्ध में प्रकाशितवाक्य 22:18, 19 में क्या चेतावनी दी गई है?
5. ''परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस .... को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और .... तुम्हें सुनाए, तो .... हो'' (गलातियों 1:6–9)।
6. ये आयतें कौन सी तीन बातें बताती हैं?
7. ऐसे लोग हैं जो आज दावा करते हैं कि परमेश्वर उन्हें विशेष प्रकाशन दे रहा है। क्या उनमें एक दूसरे के साथ उलट बातें करते हैं? क्या वे वचन के उलट बात करते हैं? क्या वे मनुष्यों की बनाई हुई कलीसियाओं के सदस्य हैं? क्या वे उन आराधना वैसे करते हैं जैसे परमेश्वर ने अधिकृत नहीं किया है? क्या परमेश्वर ने उन्हें एक दूसरे के उलट शिक्षाएं देनी थीं?
8. क्या परमेश्वर आज लोगों को जाकर प्रचार करने के लिए चमत्कारी ढंग से बुलाता है? ऐसा दावा करने वाले लोग पवित्र शास्त्र के उलट बातें सिखाते हैं। क्या परमेश्वर ने ऐसा करना था?
9. हमें चेतावनी दी गई है कि .... परमेश्वर उन लोगों का न्याय कैसे करता है जो मसीह की शिक्षा के उलट शिक्षा देते हैं?
10. परमेश्वर उनका न्याय कैसे करेगा जो मसीह की शिक्षा के उलट बातें सिखाते हैं? परमेश्वर उनका न्याय कैसे करेगा जो ऐसे झूठी शिक्षा देने वालों को समर्थन देते हैं? (2 यूहन्ना 9–11)।

पाठ 9

मन परिवर्तन में पवित्र आत्मा

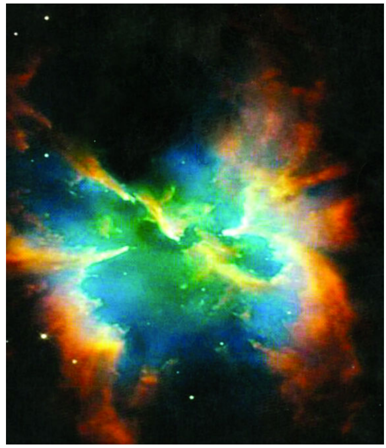

हमें यह पता होना आवश्यक है कि पवित्र आत्मा कौन है, वह कैसे काम करता है, और क्या आज वह हमारे जीवनों में काम करता है। इसके लिए मनपरिवर्तन में पवित्र आत्मा के योगदान को जानना बेहतर रहेगा।

बेशक मनपरिवर्तन का सम्बन्ध व्यक्ति के जीवन में बदलाव आने से है। वचन के अनुसार किसी का मनपरिवर्तन तब होता है जब वह परमेश्वर में विश्वास करते हुए, अपने पापों से मन फिराकर, अपने मुंह से मसीह को परमेश्वर का पुत्र होना अंगीकार करता है और अपने पापों को धो डालने के लिए बपतिस्मा ले लेता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में मनपरिवर्तन के लगभग ग्यारह मामले हैं जिनमें दिखाया गया है कि प्रभु की आज्ञा को सब लोगों ने एक ही प्रकार से माना था। परन्तु इस सब में पवित्र आत्मा का क्या योगदान है?

मेरे साथ यूहन्ना 3 अध्याय खोलें और नये जन्म पर यीशु द्वारा दी गई शिक्षा पर विचार करें। वचन कहता है, ''**फरीसियों में नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था। उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, 'हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आया है, क्योंकि कोई इन चिह्नों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता।' यीशु ने उस को उत्तर दिया, 'मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।' नीकुदेमुस ने उस से कहा, 'मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?'**

यीशु ने उत्तर दिया, **'मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं**

कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा, 'तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।' हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।' ''नीकुदेमुस ने उसको उत्तर दिया, 'ये बातें कैसे हो सकती हैं?' यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, 'तू इस्राएलियों का गुरु हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता? मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि हम जो जानते हैं वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते। जब मैंने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूं तो फिर कैसे विश्वास करोगे? कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में हैं''' (यूहन्ना 3:1–13)।

कृपया यीशु की नीकुदेमुस नामक व्यक्ति के साथ हुई बातचीत पर ध्यान दें। इस बातचीत में एक फरीसी व्यक्ति है जो बड़ा ही धार्मिक है, पर यीशु में भी उसका बड़ा विश्वास था। साफ है कि यहूदियों के डर से और यह सोचकर कि लोग क्या कहेंगे, वह यीशु को मिलने के लिए रात को आया था। इस व्यक्ति के बारे में दो और जगहों पर हम पढ़ते हैं, जिसमें एक बार तब जब अरिमतिया के यूसुफ ने यीशु का पक्ष लिया था और दूसरी बार जब नीकुदेमुस गंधरस और एलवा लेकर गया था और वह और यूसुफ यीशु के दफ़नाए जाने के लिए मसाले और मलमल के कपड़े लेकर आए थे और उन्होंने उनमें उसे लपेटा था। परन्तु नीकुदेमुस ने यीशु में अपने विश्वास को यह कहकर दिखाया, **''हे रब्बी हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिह्नों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।''**

जैसा कि वचन आगे बताता है कि यीशु ने नीकुदेमुस को यह कहते हुए उत्तर दिया कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए नये सिरे से जन्म लेना होगा। राज्य या कलीसिया की उस समय तक स्थापना नहीं हुई थी, परन्तु शीघ्र ही इसने अस्तित्व में आ जाना था और राज्य में प्रवेश करने का केवल एक ही तरीका होना था कि आत्मिक रूप से जन्म लिया जाए।

स्वाभाविक ही है कि नीकुदेमुस को लगा कि मसीह शारीरिक जन्म की बात कर रहा है, तभी तो उसने जानना चाहा कि आदमी बूढ़ा होने पर दोबारा जन्म कैसे ले सकता है? **पहली बात जो यीशु ने उसे समझाई वह यह थी**

कि जिस जन्म की वह बात कर रहा था वह शारीरिक जन्म नहीं था। यहूदी जाति में, जिसमें से नीकुदेमुस था, जन्म लेने के उलट, इस नये राज्य में लोगों ने शारीरिक जन्म के द्वारा नहीं आना था। आत्मिक जन्म शारीरिक कार्य यानी **जल में जन्म लेने से मिलना था। वचन में आज्ञा मानने का एक कार्य है जिसके साथ जल जुड़ा हुआ है और वह है बपतिस्मा लेना।** हमें बताया गया है कि यूहन्ना लोगों को वहां बपतिस्मा देता था जहां जल बहुत अधिक था (यूहन्ना 3:23)। मसीह ने पानी में बपतिस्मा लिया था (मत्ती 3:13–17)। शाऊल से अपने पापों को धो डालने के लिए उठकर बपतिस्मा लेने को कहा गया था (प्रेरितों 22:16)। इसके अलावा पौलुस ने कहा कि बपतिस्मे के द्वारा हम यीशु में प्रवेश करते हैं (रोमियों 6:3, 4) और मसीह में आने से हम नई सृष्टि बन जाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। यानी जल में जन्म लेने का यह अर्थ है ।

दूसरी बात हम देखते हैं कि जिस जन्म की बात यीशु कर रहा था उसमें आत्मा का कार्य शामिल था। उसने कहा, **''जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता''** (यूहन्ना 3:5)। जैसा कि हम देख चुके हैं जल से जन्म लेने का अर्थ है बपतिस्मा लेना, परन्तु इसमें आत्मा का योगदान क्या है? वास्तव में **''जल और आत्मा से जन्म''** आपस में जुड़ी हुई ऐसी क्रिया है। एक बात को दूसरी के बिना नहीं किया जा सकता। इसमें आत्मा की भागीदारी को समझने के लिए हम 1 पतरस 1:22, 23 को पढ़ेंगे जहां मसीहियों से बात करते हुए पतरस कहता है, **''अतः जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन–मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। क्योंकि तुमने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।''** इसका अर्थ यह हुआ कि दोबारा जन्म लेने के लिए नाशवान या शारीरिक बीज के द्वारा नहीं बल्कि अविनाशी बीज या परेमश्वर के वचन के द्वारा जन्म लेना आवश्यक है। सवाल यह है कि यह वचन हमें किसने दिया है? बेशक आत्मा ने। मसीह ने कहा, **''आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं''** (यूहन्ना 6:63)। फिर यीशु ने अपने चेलों को यह आज्ञा दी कि सुसमाचार अर्थात सत्य का प्रचार सारे संसार में किया जाए (मरकुस 16:15)। जब कोई इस वचन को सुनता है और इस पर विश्वास करता है (रोमियों 10:17) और वचन के इस ज्ञान पर फिर वह कार्य करता है तथा वचन को

मानकर वह बपतिस्मा लेता है तो प्रभु उस व्यक्ति का उद्धार करता है। मसीह ने कहा, **''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा''** (मरकुस 16:16)।

जल और आत्मा से जन्म लेने का क्या अर्थ है? इसका सीधा सा उत्तर है कि आत्मा, वचन के द्वारा व्यक्ति को मसीह में विश्वास लाने, अपने पापों से मन फिराने, मसीह को अपने मुंह से परमेश्वर का पुत्र मानने और बपतिस्मे में पानी रूपी कब्र में प्रभु के साथ दफनाए जाने में अगुआई करता है। **इस आज्ञा को मानने के द्वारा वह ''जल और आत्मा से जन्म'' लेता या ''सुसमाचार का आज्ञा पालन करता'' या ''मसीह का आज्ञा पालन'' करता है, यानी आत्मा के द्वारा आत्मा उसकी अगुआई करता है।** ऐसा करने में जल और आत्मा दोनों ही शामिल होते हैं। क्या इसका अर्थ वह हुआ कि आत्मा किसी की आश्चर्यकर्म के द्वारा उद्धार दिलाता है या किसी का जल और आत्मा से जन्म वचन से अलहिदा और अलग होता है? इसका उत्तर नहीं में है। यहां उद्धार किसी आश्चर्यकर्म से नहीं बल्कि परमेश्वर के आत्मिक नियम के अनुसार होता है। जब कोई प्रभु की आज्ञा को सुनता है तथा उसे मान लेता है तो उसका उद्धार होता है। दूसरी ओर जो लोग उसकी आज्ञा को नहीं मानते उनका उद्धार नहीं हो सकता।

मानवीय स्थिति को देखें। शारीरिक जन्म के समय व्यक्ति निर्बोद्ध था, उसे परमेश्वर द्वारा ग्रहण किया गया था और यदि वह मर जाता तो वह उन लोगों में शामिल होता जो अनन्त स्वर्ग के सुख का आनन्द लेंगे। परन्तु यदि वह सही गलत की पहचान करने की उम्र तक पहुंच जाए तो वह अपनी गलत पसन्द के कारण पापी बन जाएगा। रोमियों 3:23 कहता है, **''... सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।''** पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है जिससे आत्मा आत्मिक रूप में पाप में मर जाती है। **उसे आत्मिक रूप में परमेश्वर के लिए जिलाने के लिए क्या किया जाना आवश्यक है?** नया जन्म लेना! 2 कुरिन्थियों 3:6 कहता है कि **आत्मा जिलाता है!** कैसे? हम पाप में मरे हुए थे पर बपतिस्मे में पानी से जन्म लेकर हम ने परमेश्वर के परिवार अर्थात कलीसिया में नये बच्चों की तरह आत्मा से जन्म लिया! अब उस नये आत्मिक जीवन को बनाकर और हमें परमेश्वर की संतान के रूप में पहचान देकर परमेश्वर का आत्मा हम में वास करता है। ध्यान दें कि रोमियों 8:13–17 में क्या समझाया गया है।

''क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। इसलिये कि जितने लोग

परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं; और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब हम उसके साथ दु:ख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं।''

वचन कहता है कि जो शरीर से जन्मा वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा वह आत्मा है। प्रभु ने नीकुदेमुस को समझाया कि हमें हमेशा यह समझ नहीं होती है कि आत्मिक बातों का क्या अर्थ है। हम हवा को देख नहीं सकते परन्तु उसके परिणामों को देख सकते हैं। न ही हम आत्मा को ***सुसमाचार के संदेश के द्वारा*** विश्वास लाकर आज्ञा मानने वाले और जीवन दिलाने के कार्य को देख सकते हैं। पर हम उस कार्य के परिणामों को देख सकते हैं जिसमें व्यक्ति यकीन करके प्रभु की आज्ञा मानता है उद्धार पाता है, प्रभु के राज्य यानी कलीसिया में प्रवेश करता है, को देख सकते हैं। यही नया जन्म है और मनपरिवर्तन में आत्मा का यही योगदान होता है।

हर शारीरिक जन्म एक ही प्रकार से होता है जो प्रजनन के प्राकृतिक नियम के अनुसार होता है। परमेश्वर एक व्यक्ति का उद्धार एक तरीके से और दूसरे का किसी और तरीके से नहीं करता है। वह सबका उद्धार एक ही तरीके से करता है, यानी उस नियम के अनुसार जो पवित्रशास्त्र में बताया गया है और फिर नये मसीही के लिए दूसरों को परमेश्वर के ज्ञान तक लाकर फल लाना आवश्यक है।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. ऐसे लोग हैं जो दावा करते हैं कि परमेश्वर की बात को सुनने के लिए किसी के मन को खुलने का एकमात्र ढंग ''पवित्र आत्मा का सीधा कार्य'' है। क्या नया नियम यह सिखाता है?
2. मनपरिवर्तन क्या है?
3. यीशु ने नीकुदेमुस को क्या बताया कि व्यक्ति के लिए परमेश्वर के राज्य (कलीसिया) को देख सकने से पहले क्या करना आवश्यक है?
4. एकमात्र तरीका कौन सा है जिससे आत्मा कलीसिया में प्रवेश कर

सकती है?

5. नीकुदेमुस ने गलत समझा कि यीशु ने शारीरिक जन्म की बात की है। अपने शब्दों में समझाएं कि ''नये सिरे से जन्म'' का क्या अर्थ है?
6. जल से जन्म लेने का क्या अर्थ है?
   आत्मा से जन्म लेने का क्या अर्थ है?
7. शारीरिक जन्म में क्या होता है? [नया जीवन] आत्मिक जन्म में क्या होता है? जो आत्माएं पाप में मरी हुई होती हैं उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा उन में जान डालकर उन्हें जिलाया जाता है (यूहन्ना 6:63)]
8. अविनाशी बीज क्या है जो हमारे हृदयों में बढ़ता है ताकि हमें मसीह में बपतिस्मे के द्वारा नये जन्म का अनुभव मिल सके?
9. 2 कुरिन्थियों 3:6 क्या कहता है?
10. रोमियों 8:13–17 के अनुसार नया आत्मिक जन्म पा लेने पर हमारा आत्मिक जीवन कैसा होना आवश्यक है?

पाठ 10

''विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे''

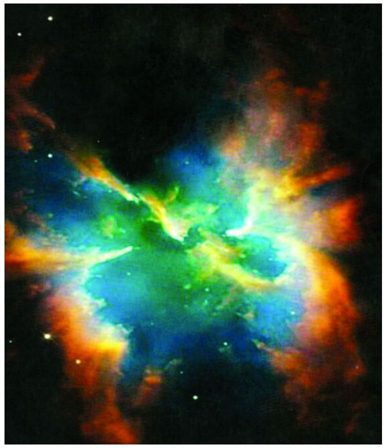

अपनी मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने, व स्वर्ग में पिता के पास लौटने से थोड़ा पहले मसीह ने अपने प्रेरितों को अपने पास इकट्ठा किया, **''और उस ने उन से कहा, 'तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा; विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राण नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।' प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया। और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिह्नों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन''** (मरकुस 16:15–20)।

यह मानने वाले लोग कहते हैं कि आज सब मसीही लोग या कम से कम उनमें से कुछ, दुष्ट आत्माओं को निकाल सकते हैं, ''स्वर्गीय'' भाषाएं बोल सकते हैं, ज़हरीले सांपों को बिना किसी हानि के उठा सकते हैं, ज़हर पीकर भी ज़िंदा रह सकते हैं और बीमारों को चंगा कर सकते हैं। अपनी इस मान्यता को सही ठहराने का आधार वे मरकुस 16:17, 18 को बताते हैं। परन्तु क्या वचन यह बताता है कि साधारण मसीही लोगों के पास, और आज ये सब करने की सामर्थ होनी थी?

''विश्वास करने वालों में चमत्कारी चिह्नों'' की बात करते समय हमें बहुत सी बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

- **सबसे पहले याद रखें कि यीशु ने सहायक, या पवित्र आत्मा के**

बपतिस्मे का वायदा केवल प्रेरितों के साथ किया था (यूहन्ना 14:26; लूका 24:49; प्रेरितों 1:8)। बदले में उन्हें कुछ चुने हुए लोगों पर हाथ रखने की सामर्थ दी गई कि वे कुछ चुने हुए मसीहियों पर हाथ रखें ताकि उन्हें भी पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म करने के दान मिल सकें (प्रेरितों 6; प्रेरितों 19)। इन दानों का उद्देश्य क्या था? रोम की कलीसिया के नाम पत्र में पौलुस ने लिखा, **''क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूं कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं *जिससे तुम स्थिर हो जाओ''*** (रोमियों 1:11)। जिन लोगों को वह लिख रहा था, वे मसीही ही थे, पर जाहिर है कि उनके पास कोई विशेष दान नहीं थे। प्रेरित होने के नाते पौलुस रोम में आना चाहता था, क्योंकि उसके पास परमेश्वर की प्रेरणा से शिक्षा, विश्वास, बुद्धि, चंगाई के दान, आत्माओं को परखने आदि के महत्वपूर्ण दान देकर रिक्त स्थान को भरने की सामर्थ थी, जो कि नया नियम लिखे जाने के दशकों के दौरान कलीसिया के मार्गदर्शन के लिए डिज़ाइन किए गए थे।

परन्तु बाइबल में कहीं पर भी आपको यह नहीं मिलता कि हर मसीही को पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म करने के दान मिले थे और यह भी स्पष्ट है कि केवल प्रभु के प्रेरित ही उन दानों को आगे और किसी को दे सकते थे। सब के सब प्रेरितों की मृत्यु 1900 साल पहले हो गई थी! इसका अर्थ यह हुआ कि आज कोई मसीही ऐसा नहीं है जो आश्चर्यकर्म कर सकता हो! मसीह के पीछे चलने का दावा करने वाले कुछ लोग उनके पास यही सामर्थ होने का दावा करते हैं, परन्तु पवित्र आत्मा की सामर्थ से वास्तव में उन्होंने अभी तक पहला आश्चर्यकर्म भी नहीं किया है। ऐसे लोग गुमराह हैं और वे अपने पीछे चलने वालों को भी गुमराह करते हैं।

- **दूसरा, अगर यीशु की बात कि ''विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे'' हर मसीही से की गई प्रतिज्ञा है, तो फिर प्रेरितों को कुछ चेलों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देने के लिए उन पर हाथ क्यों रखने पड़ते थे?** सही ढंग से बपतिस्मा पाए हर व्यक्ति के पास चमत्कार करने की शक्ति होनी चाहिए थी! परन्तु प्रेरितों के उन पर हाथ रखने से पहले उनमें से किसी को यह सामर्थ नहीं मिलती थी। उदाहरण के तौर पर, फिलिप्पुस सामरिया नगर में गया और वहां उसने उनके बीच मसीह का प्रचार किया। हमें यह भी बताया गया है कि वहां के लोगों ने उन बातों को जिन्हें वह सिखाता था, ध्यान से सुना।'' **... लोगों ने सुनकर और जो चिह्न वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के रोगी और**

लंगड़े भी अच्छे किए गए'' (प्रेरितों 8:6, 7)। फिलिप्पुस को यह सामर्थ कब मिली थी? जब प्रेरितों ने छह अन्य मसीहियों के साथ–साथ उसके ऊपर भी हाथ रखे थे। उससे पहले इन्हें पवित्र आत्मा का दान मिला हुआ था (प्रेरितों 2:38) और वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे (प्रेरितों 6:3), पर उनके पास आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं थी!

• **तीसरा, यदि यीशु की बात कि ''विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे'' हर विश्वासी के लिए है तो इसका अर्थ यह हुआ कि उस समय के मसीही लोगों से लेकर हमारे समय तक के हर मसीही के पास अन्य-भाषाओं में बोलने, बिना नुकसान के जहरीले सांपों को उठा सकने, ज़हर भी पी लेने पर ज़िंदा रह सकने, दुष्टात्माओं को निकाल सकने और चमत्कारी ढंग से बीमारों को चंगा करने की सामर्थ होनी चाहिए।** परन्तु सब मसीही ये काम नहीं कर सकते, बल्कि वे भी जो यह दलील देते हैं कि यह प्रतिज्ञा हर मसीही के लिए थी, मानेंगे कि सब लोग आश्चर्यकर्म नहीं कर सकते। बेशक वे ''उनका विश्वास कमज़ोर है,'' या ''मैं कर सकता हूं या नहीं, यह तो सवाल ही नहीं है। करने वाला तो केवल प्रभु है,'' या यह कि वे ''प्रभु से ये चीज़ें नहीं मांगना चाहते, कहीं ऐसा न हो कि प्रभु को परखने वाले ठहरें'' जैसी बातें कहकर बहाने बनाएंगे, परन्तु बाइबल इनमें से कोई बात कहां बताती है? यदि परमेश्वर ने सब मसीही लोगों को सदा के लिए ये चमत्कार करने की सामर्थ दी है तो कोई भी और हर मसीही आज ये आश्चर्यकर्म कर सकता है। हां, प्रेरितों के पास और उनके पास भी जिनके ऊपर उन्होंने हाथ रखे थे, आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ थी। बीमारों को चंगा करने, अन्य–भाषाओं में बातें करने, दुष्टात्माओं को निकालने आदि के अलावा वचन हमें बताता है कि एक बार प्रेरित पौलुस को एक ज़हरीले सांप ने काट लिया था। जिन लोगों ने इस घटना को देखा था, उन्हें लगा था कि वह मरा ही मरा। पर वह नहीं मरा था। उसने यूं ही झटक कर उस सांप को आग में फेंक दिया और निकल गया था (प्रेरितों 28:1–10)। आज के समय में कुछ लोगों ने उन पर अपनी शक्ति को साबित करने के लिए ज़हरीले सांपों को उठाने की कोशिश की परन्तु उनमें से बहुत से लोग सांप के डसने से मर गए। ऐसे भी हैं जिन्होंने ज़हर पीने की कोशिश की थी परन्तु वे मर गए। हाल ही की एक ताज़ा घटना के लिए snake handling preacher dies-of snakebite को google करें।

• **चौथा, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए यदि आप मरकुस 16 अध्याय को पढ़ें तो संदर्भ में आप पाएंगे कि यीशु यहां अपने प्रेरितों से उनके कर्तव्यों की और उसके बाद होने वाली बातों पर बात कर रहा था।** सर्वनाम

शब्द ''वे'' बार–बार आता है और हर जगह यह प्रेरितों के लिए ही है। मसीह ने जब कहा कि ''विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे'' तो वह ''विश्वास करने वाले'' प्रेरितों के लिए ही इस्तेमाल कर रहा था न कि हर मसीही के लिए। यदि वह साधारण मसीहियों के लिए कह रहा था तो साधारण मसीही वे काम क्यों नहीं कर पाते जो उसने कहा कि विश्वास करने वालों की पहचान होंगे? क्या प्रभु ने झूठ बोला था? नहीं! यह प्रतिज्ञा केवल प्रेरितों से की गई थी, और प्रेरित यह सब कुछ कर सकते थे। जिन्हें सुसमाचार सुनाया जाना था उनमें से आज्ञा मानने या न मानने वाले के विषय में मसीह ने कहा कि **''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा''** (मरकुस 16:16)। चमत्कारी चिह्नों से सम्बन्धित प्रतिज्ञा यह थी कि ये प्रेरितों के और उनके साथ–साथ होने थे जिन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी गई थी, न कि उनके साथ–साथ जिन्होंने उनके द्वारा सुनाए गए सुसमाचार को सुनकर उसे मानना था। परन्तु फिर, यह सुनिश्चित करने के लिए कि ऐसा ही था, वचन को फिर से पढ़ें और उनको देखें जो ये चिह्न दिखा सकते थे और उन्हें भी जो नहीं दिखा सकते थे। इससे हर किसी को यह यकीन हो जाना चाहिए कि यह प्रतिज्ञा केवल कुछ चुनिंदा विश्वासियों यानी प्रेरितों और उनके लिए थी जिन्हें यह साबित करने के लिए कि **वे परमेश्वर के लोग ही थे और कलीसिया के सुधार के लिए, आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देनी थी।**

नहीं, आज कोई ऐसा विश्वासी या मसीही नहीं है जो इन भाषाओं को बिना सीखे बोल सके। न ही आज कोई ऐसा मसीही है जो दुष्टात्माओं को निकालता हो, चमत्कारी ढंग से बीमारों को चंगाई दे सकता हो और वे सब आश्चर्यकर्म कर सकता हो जो प्रेरितों ने अपने समय में किए थे। यदि किसी के पास प्रेरितों वाली सामर्थ है तो वह अस्पतालों में जाकर रोगियों को चंगाई क्यों नहीं देता, और कब्रों में से मुर्दे क्यों नहीं जिलाता, सब अंधों को आंखें क्यों नहीं देता, टुण्डों को हाथ और लंगड़ों को टांगें आदि क्यों नहीं देता? आप जानते हैं कि इनमें से कोई भी ये काम क्यों नहीं कर पाता? सीधी सी बात है, क्योंकि उनके पास ऐसी सामर्थ नहीं है।

''विश्वास से चंगाई देने वालों'' (यानी फेथ हीलर्स) से सम्बन्धित हाल ही की इन खबरों पर ध्यान दें: **''नाइजीरिया का चंगाई देने वाला चर्च गिर गया, जिसमें 67 दक्षिण अफ्रीकी मारे गए।'' ''1963 में जन्मा, टी डी जोशुआ, फेथ हीलर (यानी विश्वास से चंगाई देने वाला व्यक्ति) है जिसके चर्च की ब्रांच घाना में है और वह लोगोस–बेस्ड टैलिविज़न चैनल, इम्मैनुअल**

टीवी चलाता है। इस ग्रुप ने अपनी वैबसाइट पर कहा है, जोशुआ द्वारा चलाए जाने वाले पिछले तीन चर्च नष्ट हो गए थे। पहले चर्च की छत तूफ़ान में उड़ गई, दूसरा बाढ़ में बह गया और तीसरा बेहद खराब मौसम के कारण गिर गया' इसमें कहा गया है।''

इंटरनेट पर ख्यात ''फेथ हीलर'' बैनी हिन्न के क्रूसेड की रिपोर्ट [google: "Benny Hinn Healing Crusade Ends in Controversy"] का हिंदी अनुवादः

''इवैंजलिस्ट बैनी हिन्न अपने खूब प्रचारित हीलिंग क्रूसेड के लिए नाइजीरिया में पहुंचा। वह बॉडीगार्डों के ठाठ-बाठ वाला अपना Gulfstream III Jet लेकर पहुंचा। परन्तु कुछ दिनों बाद नाराजगी और निराशा के बाद नाइजीरिया से चला गया। वह कम भीड़ के कारण खीझ गया थाः क्रूसेड में 3,00,000 के करीब लोग ही पहुंचे थे जबकि उम्मीद 60,00,000 लोगों के आने की, की गई थी।

''जाहिर तौर पर हिन्न इसलिए नाराज़ था क्योंकि उसने क्रूसेड में इतनी बड़ी राशि का निवेश किया था। कार्यक्रम के अंतिम दिन उसे चिल्लाते हुए सुना गया 'चार मिलियन डॉलर (लगभग 25 करोड़ 60 लाख रुपए) पानी में बह गए।' बैनी हिन्न मिनिस्टरीज़ के वाइस प्रैज़िडेंट जॉन विल्सन ने खर्च का ब्यौरा दिया। उसने कहा कि 3 मिलियन डॉलर होटल में रहने और तकनीकी साजो सामान में खर्च हो गए जबकि 1 और मिलियन डॉलर स्थानीय प्रबंधक कमेटी के अन्य खर्चों में इस्तेमाल हो गए।

''इस प्रकार अफ्रीका में पैंटिकास्टलवाद एक फलता-फूलता कारोबार है। असल में इस महाद्वीप में बेकार युवकों की बढ़ती आबादी के लिए अमीर बनने का यह सब से आसान तरीका है। लोकल पास्टर (विदेशी मित्रों के साथ-साथ) भोले-भाले लोगों से पैसा ऐंठने की सब तरकीबें और जुगाड़ लगाते हैं। वे इस पैसे का इस्तेमाल बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें बनवाने, महंगे घर बनाने, बड़ी-बड़ी गाड़ियां और जहाज़ खरीदने और शान-ओ-शौकत से रहने में खर्च कर देते हैं जबकि उनकी कलीसिया के लोग गरीबी, मुसीबत और गंदगी में रहते हैं।

''अधिकतर मामलों में पास्टर विश्वासियों से परमेश्वर को यह पैसा देने को कहते हैं ताकि बदले में परमेश्वर उन्हें आशीष दे सके। वे लोगों को दशमांश देने वालों और भेंटें लाते रहने वालों पर परमेश्वर की कृपा होने की बात बताते हैं।

''अफ्रीकी लोगों का जादू-टोनों, चमत्कारों और असाधारण दावों में

बड़ा यकीन होता है। अफ्रीकी लोगों में अलौकिक शक्तियों में गहरी आस्था पाई जाती है जो भला या बुरा करने के लिए लोगों के भाग्य में दखल देकर उसे बदल देते हैं। इन आध्यात्मिक शक्तियों को उन चिह्नों के द्वारा जो मानवीय सोच को चकरा दें, जादुई और चमत्कारी ढंगों से काम करने वाली माना जाता है। और इवैंजलिकल चर्च अपनी असाधारण सेवाओं को चलाने और बढ़ाने के लिए अफ्रीकी विचार और संस्कृति में पाए जाने वाले इस अलौकिक तत्व से लाभ उठाते हैं। वे ईश्वरीय चंगाई और परेशानियों और बीमारियों से तुरन्त समाधान का वायदा करते हैं। पैंटिकास्टल पास्टर दावा करते हैं कि उनके पास बहरों को चंगा करने की शक्ति है जिससे बहरे सुन सकते हैं, अंधे देख सकते हैं, लंगड़े चल सकते हैं और बांझ जन्म दे सकते हैं ...।''

परमेश्वर की ओर से चंगाई या चमत्कारी चंगाई

लोगों में चमत्कारी चंगाई के विचार का भूत सवार रहता है। जब कोई यह मानने से इनकार कर दे कि परमेश्वर आज ऐसा करता है तो पूछा जाता है कि ''पर क्या मानते हैं कि परमेश्वर चंगाई देता है?'' मेरा उत्तर यह होगा कि ''हां मैं परमेश्वर की ओर से मानता हूं कि परमेश्वर चंगाई देता है परन्तु चमत्कारी चंगाई को नहीं।'' ''लेकिन इसमें फर्क क्या है?'' आप पूछ सकते हैं। मेरा उत्तर है, ''हर प्रकार की चंगाई परमेश्वर की ओर से ही होती है परन्तु आज कोई चमत्कारी चंगाई नहीं होती।''

यदि हमें लगता है कि परमेश्वर केवल चमत्कार करके ही काम करता है तो हम गलत हैं। हां बीते समयों में उसने अलौकिक ढंगों से काम किया है, परन्तु उस युग में चमत्कार बहुत कम और कभी कभार ही होते थे। प्रेरित और जिनके ऊपर उन्होंने हाथ रखे होते थे वे बहुत सी जगहों पर जा सकते थे। अन्य सब मसीही आश्चर्यकर्म नहीं कर सकते थे जिसका अर्थ यह हुआ कि आम लोगों को परमेश्वर की ओर से चंगाई और प्रकृति के नियम पर निर्भर होना पड़ता था।

परमेश्वर की ओर से चंगाई का अर्थ है कि चंगाई तो परमेश्वर देता है, परन्तु यह चंगाई प्राकृतिक साधनों के द्वारा होती है। परमेश्वर ने इस संसार

को तथा इसमें की सब वस्तुओं को बनाया है। उसने पेड़ पौधों को और जड़ी बूटियों को बनाया और बेशक बिल्कुल वैसे ही जैसे उनके अंदर हमारे शरीरों के लिए आवश्यक भोजन तथा अन्य चीजें होती हैं, उनमें वे सब चीजें हैं जो शरीर को चंगाई के लिए चाहिए होती हैं। उसी की आशिषों से पुरुषों और महिलाओं ने शारीरिक देह और इसकी आवश्यकताओं का अध्ययन करके सीखा है, उन्होंने पौधों के औषधिय गुणों को जाना है, और बीमारों के लिए उन्होंने अस्पताल बनाए हैं जहां हम अपना इलाज करा सकते हैं। मनुष्य ने अपने अध्ययन और प्रशिक्षण के द्वारा शरीर के विभिन्न भागों को मरम्मत करने के लिए बड़े बड़े ऑपरेशन करने की महारत पा ली है। तो क्या हम कह सकते हैं कि मनुष्य की चंगाई में परमेश्वर का दखल होता है? बिल्कुल।

यीशु ने समझाया कि डॉक्टर की जरूरत तंदुरुस्तों को नहीं, बल्कि बीमारों को होती है (मत्ती 9:12)। लूका, जिसने प्रेरितों के काम के साथ–साथ लूका नामक पुस्तक भी लिखी थी, प्रिय वैद्य कहलाता था (कुलुस्सियों 4:14)। यीशु ने एक यहूदी के बारे में बताया था जो यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था, और डाकुओं ने उसे अधमरा छोड़ दिया था। उधर से गुज़र रहे दो धार्मिक लोग उसे देखकर कतराकर चले गए। परन्तु एक सामरी व्यक्ति गुज़र रहा था, उसने उस पर तरस खाया। उसने उसके घावों पर तेल मला और दाखरस लगाकर पट्टियां बांधी और उसे एक सराय में ले गया ताकि वहां उसकी देखभाल हो सके। उसने उसके घावों पर तेल और दाखरस क्यों लगाया? क्योंकि इनसे उसके घाव ठीक हो सकते थे। क्या आपको लगता है कि उसके घावों के ठीक होने में प्रभु का कोई दखल था?

अंत में पौलुस ने तीमुथियुस को सलाह दी कि **''भविष्य में केवल जल ही का पीने वाला न रह, पर अपने पेट के और अपने बार–बार बीमार होने के कारण थोड़ा–थोड़ा दाखरस भी काम में लाया कर''** (1 तीमुथियुस 5:23)। इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि पौलुस ने यह सलाह तब दी थी जिस ज़माने में आश्चर्यकर्म होते थे! उसने तीमुथियुस को आश्चर्यकर्म के द्वारा चंगा क्यों नहीं किया? क्योंकि तीमुथियुस पहले ही विश्वासी था और जैसा कि हम प्रेरितों 8 में पढ़ते है, चमत्कार विश्वासी बनाने और वचन को पक्का करने के लिए किए जाते थे (मरकुस 16:20)। वे कभी भी लोगों को चंगाई दिए जाने के उद्देश्य से नहीं दिए गए थे! अब जबकि नये नियम की पुष्टि हो चुकी है और लोगों को विश्वास प्रभु का वचन सुनकर होता है (रोमियों 10:17) तो आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं रही। आज उनका क्या उद्देश्य होता?

इस तस्वीर में प्रार्थना कैसे फिट बैठती है? क्या हम बीमारों के लिए या

अपनी आवश्यकताओं के लिए इसलिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि हमें चमत्कार की उम्मीद होती है? यदि आज आश्चर्यकर्म नहीं होते हैं तो फिर प्रार्थना करने का क्या तुक है? अच्छा पिता और बच्चों के साथ क्या करता है? जब बच्चे उससे कुछ मांगते हैं तो क्या वह उन्हें चमत्कार से उत्तर देता है? हम जानते हैं कि वह ऐसे उत्तर नहीं देता। तो फिर वह उन्हें कैसे उत्तर देता है? प्राकृतिक ढंगों से जैसे वह दे सकता है। इसके अलावा वह उन विनतियों को मान लेता है जो बच्चों की भलाई के लिए हों। अगर वे उससे कुछ ऐसा मांग लेते हैं जिसे वह पूरा न कर सकता हो या जो उनके लिए अच्छा न हो तो उसका उत्तर ''नहीं'' में होगा। परमेश्वर भी ऐसा ही करता है। वह हमारा पिता है और हम उसकी संतान हैं। वह हमसे प्रेम करता है और हमें वे चीज़ें देना चाहता है जो हम उससे मांगते हैं। इसके साथ ही वह यह भी जानता है कि हमें किस चीज की आवश्यकता नहीं है। अगर हमने कुछ ऐसा मांग लिया जो हमारे लिए अच्छा नहीं है तो वह हमें वह चीज नहीं देगा। पर अगर वह ईश्वरीय प्रबन्ध के द्वारा हमें वह चीज दे सकता हो, और अगर वह हमारे लिए अच्छी है तो वह प्राकृतिक साधनों के द्वारा अवश्य हमारी सहायता करेगा।

यीशु ने कहा, **''मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उस का पुत्र उससे रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे? या मछली मांगे, तो उसे सांप दे? अतः जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?''** (मत्ती 7:7–11)। अब क्या प्रभु को अपने बच्चों को प्रार्थनाओं का जवाब देने के लिए हर बार क्या कोई आश्चर्यकर्म करने की आवश्यकता है? बिल्कुल नहीं।

हम प्रार्थना तो रोटी के लिए करते हैं पर परमेश्वर हमें अच्छी सेहत और समझ दे देता है ताकि हम पैसा कमा सकें जिससे हमें रोटी मिल सके। परमेश्वर रोटी बनाकर हमारे हाथ में रख सकता था, पर उसने ऐसा करना नहीं चुना है, न उसने ऐसा करने का कोई वायदा किया है, और न ही वह ऐसा करेगा। अगर हम या हमारा कोई दोस्त बीमार पड़ जाए, तो हम परमेश्वर से हमें चंगा करने को कह सकते हैं। वह हमें चमत्कार से चंगाई दे सकता है, पर उसने चमत्कार करने का कोई वायदा नहीं किया है, और न ही वह चमत्कार करने के लिए प्रकृति के बनाए अपने नियमों को तोड़ेगा। उसने हमें समझ दी है कि हम डॉक्टर के पास जाएं, दवाई लें और डॉक्टर के बताए अनुसार

उन्हें लें, और वह हमें बताएगा कि हमें कितना आराम करना आवश्यक है और क्या खाना है, जैसी कुछ सलाह देगा। हमारे डॉक्टर की बात मानकर ठीक हो जाने पर हमें चंगा किसने किया? परमेश्वर ने हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया या नहीं? या हम यूं ही संयोग से ठीक हो गए? या हम अपने आप ही चंगाा हो गए?

मसीह हमें बताता है कि परमेश्वर हमारे मांगने से पहले जानता है कि हमें किस वस्तु की आवश्यकता है (मत्ती 6:8)। यूहन्ना कहता है, **''और हमें उस के सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। और जब हम जानते हैं कि जो कुछ मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया है''** (1 यूहन्ना 5:14–15)।

हां परमेश्वर आज चंगाई देता है। परन्तु चमत्कारिक ढंग से नहीं। उसे अपनी सामर्थ को साबित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह वह कई बार दिखा चुका है। परन्तु आज वह हमें प्राकृतिक और अपने वचन में प्रकट किए आत्मिक नियमों के द्वारा चंगाई देता है। प्राकृतिक नियम मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओं के लिए हैं और आत्मिक नियम सुसमाचार की आज्ञा मानने, पापों की क्षमा पाने और अनन्त जीवन की आशा पाने के लिए हैं।

प्रभु में परमेश्वर हमारी इतनी सहायता करे कि इतने कमजोर होने के बजाय कि हम परमेश्वर से अपनी मनवाने को कहें, हमें इतना विश्वास हो कि हम परमेश्वर को अपने तरीके से काम करने दें। सच तो यह है कि परमेश्वर पर हम अपनी इच्छा को थोप नहीं सकते बल्कि हमें चाहिए कि उसके सामने दीन हो जाएं और उसे अपनी इच्छा पूरी करने दें।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. स्वर्ग में अपने लौट जाने से थोड़ा पहले यीशु ने प्रेरितों से क्या कहा? (मरकुस 16:15–20)। परिवर्तित होने वालों में क्या चिह्न होने थे?
2. आज कुछ लोगों का मानना है कि वे ''स्वर्गीय भाषाएं बोल सकते हैं, जहर पी सकते हैं, सांपों को उठा सकते हैं, आदि, परन्तु पवित्र आत्मा उनकी रक्षा करेगा। क्या मरकुस 16 में यीशु की प्रतिज्ञा हर युग के सब लोगों पर लागू होती है? वह किनसे बात कर रहा था?''
3. समीक्षा के लिए, पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और साथ में आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ का वायदा किस से किया गया था? (यूहन्ना 14:26)।
4. यदि यीशु का वायदा कि ''विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे'' हर युग के सब लोगों के लिए है तो जैसा कि प्रेरितों 5:12 में लिखा गया है, केवल प्रेरित ही क्यों आश्चर्यकर्म कर सकते थे?
5. यदि यीशु का वायदा कि ''विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे'' हर युग के सब लोगों के लिए है तो क्या जिस कलीसिया के आप सदस्य हैं उसमें उसके सब लोग ये काम करते हैं? क्या उनमें से कोई एक कर सकता है?
6. हाल ही में एक पैंटिकास्टल प्रचारक जो एक टीवी प्रोग्राम चलाता था जहरीले सांप के डंसने से मर गया। क्या यह अपना वायदा निभाने की परमेश्वर की नाकामी थी या फिर पवित्र शास्त्र का दुरुपयोग था?
7. नाइजीरिया के ''हीलर'' की चर्च बिल्डिंग और उसकी मीटिंग में भाग लेने वालों का क्या हुआ? क्या उसने उन्हें मुर्दों में से जिला दिया?
8. पैंटिकास्टल प्रचारक अफ्रीकी लोगों के जादू और दुष्ट आत्माओं में अंधविश्वास और विश्वास का लाभ कैसे उठाते हैं?
9. चमत्कारी चंगाई और परमेश्वर की ओर से चंगाई में क्या अंतर है?
10. परमेश्वर आश्चर्यकर्मों का इस्तेमाल किए बिना प्रार्थनाओं का उत्तर कैसे दे सकता है?

पाठ 11

आत्मा की एकता

प्रेरित पौलुस ने इफिसुस में मसीहियों को यह शब्द लिखे थे, **''सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से विनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है''** (इफिसियों 4:1–6)।

यहां पर पौलुस आत्मा की एकता की बात कर रहा है। वह कहता है कि एक ही आत्मा है। वह परमेश्वरत्व का एक सदस्य यानी परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र से जुड़ा व्यक्ति है (रोमियों 1:20)।

परमेश्वरत्व में इन तीनों की अपनी भूमिका थी (है) अर्थात प्रत्येक का अपना एक कार्य है। पवित्र आत्मा ने पुराने और नये दोनों नियमों के पवित्रशास्त्र को लिखने में, लिखने वालों को इसे लिखने में अगुवाई और निर्देश दिया। पवित्र शास्त्र में हमारे पास परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा लिखवाया गया वचन है (2 पतरस 1:20, 21; 2 तीमुथियुस 3:16–17)।

पवित्रशास्त्र को बार–बार आत्मा का वचन, सत्य का आत्मा भी कहा गया है (यूहन्ना 14:17; 15:26; 16:13)। पौलुस ने इसे आत्मा की तलवार कहा (इफिसियों 6:17)। इब्रानियों का लेखक कहता है, **''क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ–गांठ, और गूदे–गूदे को अलग करके, आर–पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता**

है'' (इब्रानियों 4:12)।

आत्मा का वचन जो कि परमेश्वर का वचन है पूरी तरह से एक है। यह मुकम्मल और पूरा है। इसी के द्वारा परमेश्वर ने जो कुछ हमसे कहना चाहा था, वह कहा। यह अपने आप में उलझता नहीं है। यह एक व्यक्ति को कुछ दूसरे को कुछ और करने को नहीं कहेगा। इसमें न तो कुछ जोड़ा जाए और न इसमें से कुछ घटाया जाए (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19; 2 यूहन्ना 9–11)। पौलुस ने कहा कि उसने एक सच्चे सुसमाचार का प्रचार किया है, जो कि बेशक पवित्र आत्मा की अगुआई से है, और यदि कोई आकर किसी दूसरे सुसमाचार का प्रचार करे तो उस पर परमेश्वर का श्राप पड़े, वह चाहे स्वर्ग से कोई स्वर्गदूत ही क्यों न हो (गलातियों 1:6–9)।

आत्मा ने इस वचन में जीवन फूंका है जिस कारण जब कोई अपने मन में इसे ग्रहण करता है, अर्थात इस पर विश्वास करके इसकी आज्ञाओं को मान लेता है तो उसका उद्धार होता है। पतरस ने घोषणा की, **''अतः जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन–मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। क्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है''** (1 पतरस 1:22–23)। यीशु ने बीज बोने वालों का दृष्टांत देकर कहा था कि किस प्रकार से बीज जो कि परमेश्वर का वचन है अलग–अलग प्रकार की भूमि पर गिरा। अच्छी भूमि पर गिरा कुछ बीज, अच्छे मन वाले लोगों द्वारा ग्रहण किया गया, जिससे यह बढ़कर बहुत फल लाया (मत्ती 13)। बेशक बीज में जीवन था, और बीज में जो कि परमेश्वर का वचन है, जीवन को आत्मा ने ही डाला।

प्रेरित पौलुस ने कहा, ''क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया'' (1 कुरिन्थियों 12:13)। पौलुस यहां पर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की नहीं, बल्कि वह इस तथ्य की बात कर रहा है कि आत्मा अपनी शिक्षा के द्वारा, या परमेश्वर के वचन के द्वारा प्रभु की आज्ञा को मानने के लिए हमारी अगुआई करता है। और इस आज्ञा का एक भाग एक देह अर्थात प्रभु की कलीसिया में बपतिस्मा लेना है।

आत्मा से जुड़ी बहुत सी बातें बताई जाती हैं, जिनका आत्मा ने (नये नियम में, जिसे लिखने की प्रेरणा उसी ने दी) कभी अधिकार नहीं दिया। उदाहरण के तौर पर, आत्मा अपने वचन की शिक्षा के द्वारा कलीसिया में प्रवेश के लिए एक को पानी में डुबकी का और दूसरे को छिड़काव का बपतिस्मा लेने में

अगुआई नहीं करेगा। और तो और वह एक को एक डिनोमिनेशन का ''मैंबर'' बनने और दूसरे को किसी और गुट का ''मैंबर'' बनने को नहीं कहेगा। आत्मा एक ही बपतिस्मे यानी पानी में डुबकी के द्वारा हमें उस एक कलीसिया में जिसे मसीह ने बनाया बिल्कुल वैसे ही मिलाता है जैसे कुलुस्सियों 2:12 में बताया गया है कि वह मिलाता है, **'' ... उसी के साथ बपतिस्मे में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया।''** प्रेरितों 2:47 में हम पढ़ते हैं, **''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन (कलीसिया) में मिला देता था।''**

पौलुस कहता है कि हमारे एक देह यानी मसीह की कलीसिया में प्रवेश पर हमें ''एक ही आत्मा पिलाया'' जाता है (1 कुरिन्थियों 12:13)। यानी हम आत्मा में से पीते रहते हैं अर्थात आत्मा के वचन के चलाए चलते हैं। मसीह ने कहा था कि जीवन के जल और जीवन की रोटी में से लें ताकि हम आगे को भूखे या प्यासे न रहें।

आत्मा द्वारा अपने वचन को मनुष्य को देने के काम के पूरा होने तक प्रेरितों को और जिन के ऊपर उन्होंने अपने हाथ रखे थे, लोगों को यह यकीन दिलाने के लिए कि वे परमेश्वर की ओर से थे और परमेश्वर ने ही लोगों तक अपना संदेश पहुंचाने के लिए उन्हें भेजा था, उन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी। आत्मा जब अलग–अलग लोगों को परमेश्वर के वचन को लिखने की प्रेरणा दे चुका, और नया नियम पूरी तरह से तैयार होकर मनुष्य को दे दिया गया तो आश्चर्यकर्म जैसी बातों की कोई आवश्यकता नहीं रही जिस कारण वे होने बंद हो गए। 1 कुरिन्थियों 13 में पौलुस इसे बिल्कुल साफ कर देता है।

ध्यान दें कि इसका अर्थ यह हुआ कि आत्मा की एकता, आत्मा द्वारा सत्य को प्रकट करने के ढंग से पूर्ण एकता का पता चलता है। परमेश्वर बंटा हुआ नहीं है, मसीह बंटा हुआ नहीं है और न ही आत्मा बंटा हुआ है। बल्कि वे एक हैं, यानी इकट्ठे हैं, मिलकर काम करते हैं और इसी प्रकार से उन्होंने वे बातें कही हैं जो हमें एक करती हैं, और इकट्ठा रखती हैं।

आत्मा वचन में हम पर प्रकट करता है कि केवल एक ही सुसमाचार है और उद्धार पाने का एक ही ढंग है। मसीह ने कहा, **''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा''** (मरकुस 16:15–16)। यदि सब लोग इस सुसमाचार को सुनकर, इस पर विश्वास करते और इसे मान कर बपतिस्मा लें तो सब

का उद्धार एक ही तरह से होगा। उद्धार के लिए कोई और तरीका नहीं है।

आत्मा वचन में हमें बताता है कि केवल **एक ही बपतिस्मा** है (इफिसियों 4:5)। संसार बेशक कहे कि बहुत से अलग–अलग प्रकार के बपतिस्मे हैं, परन्तु आत्मा कहता है कि एक ही बपतिस्मा है और वह **गाड़े जाने** के द्वारा है (रोमियों 6:3, 4; कुलुस्सियों 2:12) और यह है **पापों की क्षमा के लिए है** (प्रेरितों 2:38)।

लिखित वचन के द्वारा आत्मा हमें यह भी बताता है कि **केवल एक ही देह** या **एक ही कलीसिया है** (इफिसियों 4:4)। फिर लोगों से हम सुनते रहते हैं कि बहुत सारी कलीसियाएं हैं। पवित्र आत्मा की चमत्कारी अगुआई से चलने का दावा करने वाले लोग भी वे ऐसी कलीसियाओं में हैं जिनके विषय में हम पवित्रशास्त्र में नहीं पढ़ते। क्या आत्मा ने वचन में यह बात प्रकट की है कि केवल एक कलीसिया है जिसे यीशु ने बनाया था (मत्ती 16:18) और कुछ ऐसे लोगों की अगुआई करेगा जो ऐसी कलीसियाओं में हैं जिसके विषय में हम बाइबल में नहीं पढ़ते? आत्मा बंटा हुआ नहीं है और वह कुछ लोगों से ऐसा कुछ नहीं करवाएगा जो अपने वचन में कही उसी की बात के उलट हो।

पौलुस ने लिखा, **"धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा"** (गलातियों 6:7, 8)।

आत्मा का फल

शरीर के कुछ कामों की सूची देने के बाद अब प्रेरित पौलुस आत्मा के फल की बात करता है। उसने कहा, **"पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें"** (गलातियों 5:22–26)। इफिसुस में मसीहियों से पौलुस ने कहा, **"क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो। (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है)। और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है?"** (इफिसियों 5:8–10)।

आत्मा पाने का भला क्या अर्थ है? पतरस ने कहा कि प्रभु की आज्ञा मानने पर हमें *पवित्र आत्मा का दान* मिलता है (प्रेरितों 2:38)। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे अंदर वास करने, हमें फिर से परमेश्वर के लिए जिलाने हेतु पवित्र आत्मा दिया जाता है: **''हम इन बातों के गवाह हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं''** (प्रेरितों 5:32)। प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा विशेष आश्चर्यकर्म करने की विशेष सामर्थ के लिए चुने गए सात चेले पवित्र आत्मा से परिपूर्ण लोग थे: ''इसलिए, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें'' (प्रेरितों 6:3)।

पौलुस हमें बताता है, **''अतः जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें। जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें। केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है; और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है'' (रोमियों 5:1-5)। उसने फिर कहा, ''क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं; परन्तु धर्म और मेल मिलाप और वह आनन्द है''** (रोमियों 14:17)।

पौलुस आगे कहता है, **''अतः अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। [क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं।] क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया। क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पापबलि होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिये कि व्यवस्था की विधि हममें जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए। क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। ...**

परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं। यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है। **यदि उसी का आत्मा जिसने**

यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा।

इसलिए हे भाइयो, हम शरीर के कर्ज़दार नहीं कि शरीर के अनुसार दिन काटें, क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं; और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब हम उसके साथ दु:ख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं'' (रोमियों 8:1–17)।

यह समझाते हुए कि आत्मा मसीही लोागें में कैसे काम करता है, पौलुस कहता है, **''इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है: क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिये विनती करता है; और मनों का जांचने वाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है'' (रोमियों 8:26, 27)।**

प्रेरित पौलुस ने तीतुस के नाम पत्र में लिखा, **''क्योंकि हम भी पहिले, निर्बुद्धि, और आज्ञा न मानने वाले, और भ्रम में पड़े हुए, और विभिन्न प्रकार की अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे, और बैरभाव और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे; और घृणित थे, और एक-दूसरे से बैर रखते थे। पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा, और मनुष्यों पर उसकी प्रीति प्रकट हुई। तो उस ने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म से स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला। जिससे हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें''** (तीतुस 3:3–7)।

फिर से, हम यह देखना चाहेंगे कि आत्मा हमारे अन्दर होने का क्या अर्थ है? पिछली आयतों में हमने देखा था और परमेश्वर की आज्ञा मानने वाले

सब को पवित्र आत्मा का दान यानी आत्मा का वास मिलता है। आत्मा मसीही के अन्दर वैसे ही वास करता है जैसे परमेश्वर और यीशु वास करते हैं (1 कुरिन्थियों 8:6)। पौलुस ने बताया कि **शारीरिक देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है** (1 कुरिन्थियों 3:16–17; 1 कुरिन्थियों 6:19, 20)।

आत्मा हमारी निर्बलताओं में हमारी सहायता करता है और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हमारे लिए निवेदन करता है। यह जानते हुए कि हमने पवित्र शास्त्र में प्रकट की गई आत्मा की बात यानी आत्मा के वचनों को माना है, हमारी आत्मा से सहमत है कि हमने परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया है और इस कारण हम परमेश्वर की संतान हैं।

आत्मा पाने और आत्मा के वचन को मानकर हम आत्मा का फल लाते हैं। पौलुस बताता है कि प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम आत्मा का फल है। इनका अर्थ समझाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हम सब इनका अर्थ जानते हैं। ये सब अच्छी बातें हैं जिनकी कोई कानून मनाही नहीं करता। न ही इन्हें ऐसा फल पाने के लिए वचन से अलहिदा और अलग, किसी आश्चर्यकर्म या पवित्र आत्मा की अगुआई की आवश्यकता है। यह फल हमारे अन्दर आता है जब हम परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं और आत्मा के वचन के अनुसार चलते रहते हैं।

पवित्र शास्त्र मसीही होने और मसीही व्यक्ति के जीवन में आत्मा की भूमिका के बारे में बहुत कुछ बताता है। दुखद पहलू यह है कि बहुत से लोग आत्मा को केवल चमत्कार करने के सम्बन्ध में ही देखते हैं। बहुत से लोग आत्मा से जुड़ी किसी भी बात का अध्ययन करने या उस पर बात करने से कतराते हैं ताकि कहीं ऐसा न हो कि उन पर आज मसीही लोगों के जीवन में चमत्कारी ढंग से काम करने में विश्वास करने का आरोप लग जाए। एक गलती को नकारकर हमें दूसरे चरम पर जाकर अपनी एक और गलती नहीं बनाना चाहिए। **''भक्ति का भेष तो धरेंगे, परन्तु उसकी शक्ति को न मानेंगे''** (2 तीमुथियुस 3:5)। इसके बजाय हम आत्मा के काम को आश्चर्यकर्म के सम्बन्ध में प्रेरितों के समय के रूप में देखें पर हमें आज मसीही लोगों के सम्बन्ध में आत्मा के काम को देखना भी आवश्यक है। हम यह नहीं सिखाना चाहते कि आत्मा आज वे काम कर रहा है जो वह करता नहीं है परन्तु हमें आज मसीही लोगों के जीवनों में उसकी भूमिका को नकारना भी नहीं चाहिए। यदि हम जीवित हैं तो इस कारण क्योंकि वह हमारे अंदर रहता है, और हमें परमेश्वर की संतान बनाता है।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. क्या उनमें फूट है जो विश्वास करने का दावा करते हैं?
2. जिस एकता को परमेश्वर चाहता है उसका आधार क्या है? (इफिसियों 4:1–6)
3. पवित्र आत्मा के द्वारा कौन सा विशेष काम किया गया?
4. पवित्र शास्त्र में हमारे पास ज़बानी ...., ... का वचन है (2 पतरस 1:20, 21; 2 तीमुथियुस 3:16, 17)। जब हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते, उस पर विश्वास करते और उसे मानते हैं तो पवित्र शास्त्र हमें अपने पापों से .... करने का माध्यम बन जाता है (1 पतरस 1:22, 23)। मसीही लोगों के रूप में इसका क्या अर्थ है कि हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया है? (1 कुरिन्थियों 12:13)।
5. परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पवित्र शास्त्र के द्वारा आत्मा हमें बताता है कि एक ही .... है एक ही .... है (इफिसियों 4:4)। यह आज की हज़ारों साम्प्रदायिक कलीसियाओं वाले धार्मिक जगत की फूट के बारे में क्या कहता है?
6. आत्मा से जन्मे होने के कारण मसीही लोगों के रूप में हमें कौन सा फल लाना आवश्यक है? (गलातियों 5:22–26)।
7. विश्वास के द्वारा हमारी .... हुई है और यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ .... हुआ है। परमेश्वर का प्रेम हमारे मनों में कैसे डाला गया (रोमियों 5:1–5)।
8. यदि मसीही लोगों के रूप में परमेश्वर का आत्मा हम में वास करता है तो रोमियों 8:11 के अनुसार हमें क्या वचन दिया गया है?
9. हमारी देह पवित्र आत्मा का .... है (1 कुरिन्थियों 3:16, 17; 6:19, 20)। वह सहायता कैसे करता है? (रोमियों 8:26; इफिसियों 3:16–29)।
10. जब लोग पवित्र आत्मा को चमत्कारों के साथ मिला देते हैं तो वे पवित्र शास्त्र के उन वचनों के अर्थ को गलत समझ रहे होते हैं जो मसीही लोगों के रूप में हमारे जीवनों में शामिल होने को दिखाते हैं। प्रेरितों के समय वे पवित्र आत्मा के काम पर विचार करें। उन वचनों पर विचार करें जिनका हमने अध्ययन किया है जिनसे आज मसीही लोगों के जीवनों में उसके काम का पता चला है।

पाठ 12

पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप

बाइबल बताती है कि **''सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं''** (रोमियों 3:23)। यह, यह भी बताती है कि जो लोग परमेश्वर में विश्वास करके, अपने पापों से मन फिराते हैं और यीशु का अंगीकार करके कि वह परमेश्वर का पुत्र है, पानी में बपतिस्मा लेते हैं उनका उद्धार हो सकता है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। स्वाभाविक है कि जो लोग आज्ञा नहीं मानेंगे उनके पाप क्षमा नहीं हो सकते। पवित्र शास्त्र पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा दिया गया था, इसलिए आत्मा के वचन को इस्तेमाल करते समय हमें बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि यह मनुष्य का या प्रेरितों का नहीं बल्कि मनुष्य को दिया गया परमेश्वर का अन्तिम प्रकाशन है।

पवित्र शास्त्र ''पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप'' के विषय में बताता है और कहता है कि जो लोग यह पाप करते हैं उन्हें न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा मिलेगी। मसीह ने कहा, **''इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा''** (मत्ती 12:31–32)। मरकुस भी मरकुस 3:28, 29 में यही बताता है।

परमेश्वर के वचन में ऐसे और भी कई वचन हैं। उदाहरण के लिए, यूहन्ना एक पाप की बात करता है जिसका फल मृत्यु है। उसने कहा, **''यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिसका फल मृत्यु न हो, तो विनती करे, और परमेश्वर, उसे, उनके लिए, जिन्होंने ऐसा पाप किया है**

जिसका फल मृत्यु न हो, जीवन देगाः पाप ऐसा भी होता है, जिसका फल मृत्यु हैः इसके विषय में मैं विनती करने के लिए नहीं कहता। सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है, जिसका फल मृत्यु नहीं'' (1 यूहन्ना 5:16–17)।

पौलुस ने इसे यूं कहा, **''आत्मा को न बुझाओ''** (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)। इब्रानियों के लेखक ने घोषणा की, **''जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं। और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आने वाले युग की सामर्थ का स्वाद चख चुके हैं। यदि वे भटक जाएं; तो उन्हें मन फिराव के लिए फिर नया बनाना अनहोना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिए फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं''** (इब्रानियों 6:4–6)।

इब्रानियों का लेखक फिर कहता है, **''क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान-बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हां, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। जब कि मूसा की व्यवस्था का न मानने वाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है। तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया। क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने कहा, पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगाः और फिर यह, कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है''** (इब्रानियों 10:26–31)।

पतरस ने लिखा, **''जब वे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और फिर उनमें फंसकर हार गए, तो उनकी पिछली दशा पहिली से भी बुरी हो गई है। क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिए इससे भला होता, कि उसे जानकर, उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई थी। उन पर यह कहावत ठीक बैठती है। कि कुत्ता अपनी छांट की ओर और नहलाई हुई सूअरनी कीचड़ में लौटने के लिए फिर चली जाती है''** (2 पतरस 2:20–22)।

मुझे लगता है कि इन सभी आयतों में हमें कुछ समानताएं मिल सकती हैं। हमने ''पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप,'' ''पाप जिसका फल मृत्यु है,'' ''आत्मा को बुझाना,'' ''अपने लिए परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाना,'' ''जानबूझकर पाप

करना'' और ''संसार में रहने के लिए फिर से वापस जाने'' के बारे में पढ़ा है। अन्य शब्दों में **हम इसे यूं भी कहते हैं कि पवित्र आत्मा की निंदा करना तथा पवित्र आत्मा के विरोध में पाप करना, पवित्र आत्मा का तिरस्कार करना है।** हनन्याह और सफीरा के पवित्र आत्मा के साथ झूठ बोलने पर उन्हें तुरंत दण्ड मिला और वे दोनों मर गए, यह इस बात को दिखाने के लिए एक बहुत ही अच्छा उदाहरण है (प्रेरितों 5)।

पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन को प्रगट करने के लिए आया था। उसने मसीह को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी थी जिससे यह साबित हुआ कि वह परमेश्वर का पुत्र है। जब यीशु ने मत्ती 12 में ''पवित्र आत्मा की निंदा'' की बात की तो उस समय दृश्य क्या था? यीशु को मालूम था कि पहले ही झूठे मसीह आ चुके थे। उसे मालूम था कि वह एक साधारण गलीली की तरह दिखता था; उसे मालूम था कि वह लोगों के मन में उसके वह होने पर सवाल होने या संदेह हो सकते थे जो उसने होने का दावा किया, ताकि उन्हें सच्चाई पता चल सके और क्षमा किया जा सके। परन्तु उसके दावों की सच्चाई के प्रमाण के रूप में पवित्र आत्मा की सामर्थ से उसने जो आश्चर्यकर्म किए उन से इनकार नहीं किया जा सकता था। वे वास्तविक थे और वे अंतिम स्वरूप थे। परन्तु यदि देखने वाले उन आश्चर्यकर्मों को देख सकते थे और फिर भी यह निष्कर्ष निकालते कि वे बालजबूल यानी शैतान की शक्ति से किए गए थे तो उन्हें विश्वास दिलाने का कोई और सबूत नहीं था। उन्होंने आत्मा को नकारा था और बेशक जब कोई आत्मा के वचन और उस बलिदान के ज्ञान को नकारता है जिसे मसीह ने इसलिए दिया ताकि लोगों का उद्धार हो सके, तो फिर और तरीका नहीं बचता जिससे उनका उद्धार हो सके। उस तक पहुंचने का कोई तरीका नहीं है। बहुत से लोग ऐसे ही खोए हुए हैं और यह संसार की सबसे बड़ी अफ़सोसजनक बात है। आप और मैं चाहे जो भी करें पर इतना दूर कभी न जाएं कि हम पवित्र आत्मा और मसीह और उस उद्धार के उस प्रकाशन, जो हमें उसके द्वारा मिला है, नकार दें।

कोई भी पाप जो मनुष्य करता है वह बुरा और गलत होता है और अंत में न्याय में उसके दोषी ठहरने का कारण होता है। हो सकता है कि उसका इरादा परमेश्वर की आज्ञा माने बिना इस संसार से जाने का न हो, पर उद्धार को टालने और मन फिराकर मसीह की देह में जन्म लेने की बात को टालते रहने से ऐसा हो सकता है। दूसरे लोग जो मसीही बन गए हैं हो सकता है कि वह संसार में लौट जाने की बात सोचते हों, प्रभु का इनकार करके पाप भरा जीवन जीना चाहते हों। कई मामलों में उन्होंने अपने हृदयों को इतना कठोर

कर दिया है कि कोई उन्हें परमेश्वर की ओर लौटने के लिए समझाने की लाख कोशिश करे वे नहीं मानेंगे। वे इब्रानियों 6:4–6 में बताई गई वे मुरझाई हुई आत्माएं होंगी: **''क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं। और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थों का स्वाद चख चुके हैं। यदि वे भटक जाएं; तो उन्हें मन फिराव के लिए फिर नया बनाना अनहोना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिए फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं।''**

''पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप'' के सम्बन्ध में कई प्रकार की सम्भावनाएं बताई जाती हैं। कुछ लोगों का मत है कि यदि कोई यह पाप करता है तो चाहे वह मन भी फिराना चाहे तो भी परमेश्वर उसे क्षमा नहीं करेगा। बेशक ऐसा नहीं है। पिन्तेकुस्त के दिन आज्ञा मानकर उद्धार पाने और कलीसिया में मिलाए जाने वालों में से कुछ वही लोग थे जिन्होंने मसीह को क्रूस पर चढ़ाने में भाग लिया था। अगर उनका उद्धार हो सकता है तो किसी का भी उद्धार हो सकता है, शर्त यह है कि वह मन फिराकर आज्ञा मान ले।

पौलुस ने उस समय को याद किया जब वह कलीसिया को सताया करता था। यह बात उसे खाए जाती थी जिस कारण वह अपने को सबसे बड़ा पापी बताता था, चाहे प्रभु की आज्ञा को मानने से उसके पाप धो दिए गए थे और वह प्रभु के लिए एक बहुत बड़ा कार्यकर्ता बन गया था (प्रेरितों 8, 9, 22; 1 तीमुथियुस 1:15)। बेशक यदि मसीह का इतना विरोध करने के बाद भी पौलुस को उसके पाप क्षमा किए जा सकते थे तो आज प्रभु को अपने आपको सौंप देने वाले किसी भी व्यक्ति का उद्धार हो सकता है।

जिनके पाप क्षमा नहीं हो सकते थे और न हो सकते हैं, ये वे लोग हैं जो सचमुच में मानते हैं कि नये नियम में बताए गए पवित्र आत्मा के काम *शैतान के काम* थे। उन्हें क्षमा क्यों नहीं किया जाएगा? क्योंकि उन्हें विश्वास दिलाने का कोई तरीका नहीं बचा है जिनसे वे मन फिराएं। उनके कट्टर अविश्वास के कारण उनका पाप ''अक्षम्य'' है।

और जिन्होंने सुसमाचार की आज्ञा मान ली और उन्हें पवित्र शास्त्र के सम्पूर्ण होने का पता था पर वे उस विश्वास से फिर गए, उनकी स्थिति भी खराब है। क्यों? क्योंकि उन्हें परमेश्वर की ओर वापस लाने को बताने के लिए और शब्द नहीं हैं। जब तक वे खुद मुड़ने [जिसकी सम्भावना बहुत कम है] का निर्णय नहीं लेते, तब तक बाहर से कोई आवाज उन्हें नये विश्वास में वापस नहीं ला सकती।

किसी ने चाहे जो भी पाप किया हो, यदि वह अपने पापों के साथ मर जाता है तो वह खोया हुआ होगा। बाइबल कहीं भी यह नहीं बताती कि दूसरा अवसर मिलेगा या परिवार के लोग और सज्जन मित्र उसे खोए हुओं की स्थिति में से निकालने के लिए प्रार्थना कर सकते हैं जिससे अंत में उसका उद्धार हो जाए। ''परगेटरी'' (यानी मरे हुओं के लिए प्रार्थना करने) की रोमन कैथोलिक लोगों की शिक्षा और खोए हुए होने की उस अवस्था से निकालने के लिए पैसे लिए जा सकने की बात वचन में कहीं नहीं मिलती। इसके उलट बाइबल बताती है कि हमारे पास परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार होने का समय *अभी* है (2 कुरिन्थियों 6:2; इब्रानियों 9:27)।

''तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो''

''यीशु यरूशलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त में ले गया, और मार्ग में उनसे कहने लगा, 'देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं; और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे। और उस को अन्यजातियों के हाथ सौंपेंगे कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाएं, और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।'

तब जब्दी के पुत्रों की माता ने अपने पुत्रों के साथ यीशु के पास आकर प्रणाम किया, और उससे कुछ मांगने लगी। उसने उससे कहा, 'तू क्या चाहती है?'' वह उससे बोली, ''यह वचन दे कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दाहिने और एक तेरे बाएं बैठें।' यीशु ने उत्तर दिया, 'तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो?' उन्होंने उससे कहा, 'पी सकते है।' उसने उनसे कहा, 'तुम मेरा कटोरा तो पीओगे, पर अपने दाहिने बाएं किसी को बैठाना मेरा काम नहीं, पर जिनके लिये मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया, उन्हीं के लिए है।' यह सुनकर दसों चेले उन दोनों भाइयों पर क्रुद्ध हुए। यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, 'तुम जानते हो कि अन्य जातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा नहीं होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने; और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने; जैसे कि मनुष्य का पुत्र; वह इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे,

और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे।' जब वे यरीहो से निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली'' (मत्ती 20:17–29)।

मरकुस 10:35 के अनुसार जबदी के पुत्र थे याकूब और यूहन्ना और उसकी माता ने विनती की कि उसके पुत्रों को यीशु के साथ ऊंची पदवियां मिलें और उसके राज्य उसकी कलीसिया में उनका विशेष दर्जा हो। यीशु ने शीघ्र ही उसकी बात का उत्तर देते हुए कहा कि वह नहीं जानती कि क्या मांग रही हैं? वह इस बात को समझ नहीं पाई थी कि यीशु क्रूस पर दुख उठाकर अपने प्राणों का बलिदान देगा। यीशु ने पूछा कि क्या वे मेरे साथ उन दुखों को उठा सकेंगे जो मैं उठाऊंगा। और उसने उत्तर देते हुए कहा कि यदि वे दुखों को उठा भी लें तो भी यह उसके हाथ में नहीं है कि वह उनकी इस विनती को पूरा करे। ऐसा लगता है कि इन दो चेलों की मां अपने बेटों को ऊंची पदवियों दिलाने में अधिक शौक रखती थी और शायद ऐसा प्रतीत होता है कि या तो वह स्वार्थी थी या एक मां होते हुए ऐसा कर रही थी। परन्तु यीशु ने कहा कि मेरे राज्य में यदि लोग बड़ा बनना चाहते हैं तो उन्हें दूसरों की सेवा करनी पड़ेगी।

यहां जो मैं विशेष बात बताना चाहता हूं वह यह है कि कई लोग यह नहीं जानते कि वे प्रभु से क्या मांग रहे हैं अर्थात ऐसी वस्तुओं को मांगने की विनती करते हैं जिसका उसने वायदा नहीं किया है। मैं इस समय विशेषकर उन बातों के विषय में विचार कर रहा हूं जिनका सम्बन्ध पवित्र आत्मा से है।

उदाहरण के लिए हम देखते हैं कि बहुत से लोग पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के लिए विनती करते हैं। प्रभु ऐसे लोगों से कहेगा, ''**क्या तुम जानते हो कि क्या मांग रहे हो?''** इस बपतिस्मे की प्रतिज्ञा आम लोगों से नहीं की गई थी। सहायक या पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा केवल प्रेरितों से की गई थी (यूहन्ना 16:26; लूका 24:49; प्रेरितों 1:8)। कुरनेलियुस और उसके परिवार को भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्रेरितों को यह यकीन दिलाने के लिए था कि परमेश्वर ने यहूदियों के अन्यजातियों को भी स्वीकार कर लिया है। प्रेरितों के काम 10 तथा 11 अध्यायों में इसे बड़ी ही स्पष्टता से दिखाया गया है। परन्तु यदि ये लोग ध्यान से पवित्रशास्त्र का अध्ययन कर लें तो वे कभी भी प्रभु से वह नहीं मांगेंगे जो वह उन्हें नहीं देने वाला।

कुछ लोगों को यह भी लगता है कि प्रभु द्वारा आज हमारे समय में आग का बपतिस्मा दिया जाता है। वे इस बात में भी गलत हैं। आग का बपतिस्मा ऐसी बात है जो भविष्य में होने वाली है। उस समय दुष्ट लोगों को आग दण्ड की झील में डाला जाएगा जो कि आग का बपतिस्मा होगा। यकीनन अगर

किसी को पता चल जाए कि यह बपतिस्मा क्या है तो कोई प्रभु से उसे यह बपतिस्मा देने को नहीं कहेगा। कृपया प्रकाशितवाक्य 21:8 पढ़ें।

पैंटिकॉस्टल और करिश्माई लोग मांग करते हैं कि प्रभु उनके द्वारा आश्चर्यकर्म करे। उनका कहना होता है कि उनके पास पवित्र आत्मा की सामर्थ है और वे आज्ञा देते हैं, ''चंगाई हो! चंगाई हो!'' नहीं उन लोगों के पास न तो तो पवित्र आत्मा की सामर्थ है और न ही प्रभु उनके चिल्लाने का उत्तर देता है कि वह चमत्कार से चंगाई दे, या मुर्दों को जिलाए या वह सब करे जो वे उसे करने को कहते हैं। बाइबल में हम पढ़ते हैं कि प्रेरित और जिनके ऊपर उन्होंने हाथ रखे थे, केवल वे ही लोग आश्चर्यकर्म कर सकते थे (प्रेरितों 2:43; 8:6, 7)। आज उन्नीस सदियों के बाद जबकि न तो प्रेरित हैं, और न ही वे जिन्हें उन्होंने आश्चर्यकर्म के द्वारा आत्मिक दान दिए थे, तो आज ऐसा कोई नहीं है जो परमेश्वर के अधिकार से आश्चर्यकर्म कर सके।

दावे बहुत किए जाते हैं, पर एक के बाद एक ''चमत्कार करने वाले'' लोग अंत में फ्राड ही साबित होते हैं। प्रेरित जब आश्चर्यकर्म किया करते थे, तब सबको पता होता था कि आश्चर्यकर्म हुआ है। वे मुर्दों को जिला देते, दुष्ट आत्माओं को निकाल देते, तथा और भी काम किया करते थे जिन्हें बिना किसी संदेह के आश्चर्यकर्म कहा जाता था। याद रखें कि आश्चर्यकर्मों का वास्तविक उद्देश्य लोगों को विश्वासी बनाना होता था, और पहली सदी में लोगों ने विश्वास भी किया। आज केवल दावे किए जाते हैं और अदृश्य बीमारियां ही ''ठीक होती'' हैं, पर कभी कोई टुण्डा ठीक नहीं हुआ, किसी अंधे को आंखें नहीं मिलीं, न ही कोई मुर्दा कभी जीवित हुआ है। भोले–भाले लोगों के लिए मत्ती 24:24 में यीशु की चेतावनी को याद रखना सही रहेगा कि **''क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिह्न और अद्‌भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें।''**

आज डिनोमिनेशनों के बहुत से प्रचारक प्रभु से प्रार्थना करके कहते हैं कि वह दुष्टात्मा को निकालने दे, परन्तु जैसा कि मसीह ने कहा क्या ''शैतान, शैतान को निकाल सकता है?'' यकीनन, यदि प्रभु ने आज किसी को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देना होता जिससे वे आश्चर्यकर्म कर सकें, या दुष्ट आत्माओं को निकाल सकें तो उसने यह सामर्थ उन्हें देनी थी जो उसकी आज्ञा को मानते हैं यानी उसकी कलीसिया के लोग हैं, और उसके वचन अनुसार चलते हुए उन्होंने उसका नाम पहना हुआ है। बेशक उसने आज वह सामर्थ देने की प्रतिज्ञा, किसी को भी नहीं, यानी उन लोगों को भी नहीं दी है जो उसकी कलीसिया में हैं। जो लोग आश्चर्यकर्म करने की शक्ति की मांग

करते हैं वे नहीं जानते कि क्या मांग रहे हैं?

इन्हीं में कई लोग हैं जो प्रभु से प्रार्थना करके कहते हैं कि वह उनका और उनके प्रचार को मानने वालों का उद्धार कर दे। यकीनन वे नहीं जानते कि क्या मांग रहे हैं। परमेश्वर ने अपने वचन में कहीं यह नहीं कहा है कि प्रार्थना करने से पापों से क्षमा हो सकती है। याकूब 5:16 के अनुसार बपतिस्मा लेकर मसीही बन जाने के बाद यदि कोई पाप करता है, तो उसे उन पापों की क्षमा के लिए प्रभु से प्रार्थना करने को कहा गया है, परन्तु परमेश्वर की संतान बनने के लिए यीशु ने कहा कि ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:15, 16)।

क्या यह अजीब बात नहीं है कि जो लोग पवित्र आत्मा की सामर्थ होने का दावा करते हैं उन्हें खुद यह नहीं पता कि पवित्र आत्मा ने लिखित वचन के द्वारा क्या कहा है? वे प्रभु से उनसे यूं बात करने को कहते हैं, जैसे उसने उनसे कोई खास बात करनी हो। लगता है कि उन्हें मालूम नहीं है कि परमेश्वर ने नये नियम में बात की है और उसने जो कहना था वह सब अपने वचन के द्वारा कह दिया है। यदि उसे लगता कि और कहने की आवश्यकता है तो वह अवश्य कह देता। परन्तु यदि उसने कुछ और कहना हो वह सब के लिए होगा, यह नहीं कि खास व्यक्ति को चुन कर किसी से कुछ कहे और किसी से कुछ और। हम यह तो पक्का जान सकते हैं कि किसी को कुछ और किसी और को कुछ और नहीं बताएगा जो उसके लिखित वचन के उलट हो।

हमें बहकावे में नहीं आना चाहिए। बेशक परमेश्वर से मांगने का हमें हक तो है, परन्तु हमें अज्ञानता में उसे कुछ ऐसा करने को नहीं कहना चाहिए जिसका उसने वचन नहीं दिया है। बल्कि हमें पता होना चाहिए कि प्रभु ने क्या कहा है, तो हमें उसकी ओर से आश्वासन है कि यदि उसकी इच्छा के अनुसार हो तो वह हमारी प्रार्थनाओं को सुन कर उनका उत्तर देगा (1 यूहन्ना 5:14–15)।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. रोमियों 3:23 कहता है कि सबने पाप किया है तो फिर पापियों का उद्धार कैसे हो सकता है (मरकुस 16:16)।
2. क्या पापियों का उद्धार किसी भी और तरीके से हो सकता है? क्या आज डिनोमिनेशनों में बताए गए बहुत से ''उद्धार के मार्ग'' हैं?

3. यीशु ने कहा कि सिवाय पवित्र आत्मा की निंदा के हर प्रकार का पाप (उसके विरुद्ध कही गई बातें थीं) क्षमा हो सकता है (मत्ती 12:31, 32)। क्यों? क्या आत्मा मसीह से बड़ा है? [समकालीन लोगों ने] केवल एक साधारण यहूदी को देखकर कि शारीरिक मनुष्य लगने वाला अपने आरम्भिक अविश्वास से क्षमा किया जा सकता है, जब तक उन्होंने उन आश्चर्यकर्मों को नहीं देखा जो पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा दिए गए थे। उस सामर्थ ने यह स्वरूप दे दिया कि यीशु जैसा कि उसने दावा किया था सचमुच में परमेश्वर का पुत्र था। परन्तु यदि देखने वालों ने यह कहा कि वह सामर्थ बालजबूल की थी तो उन्हें यकीन दिलाने और आज्ञा मनवाने के लिए और कोई बात नहीं बची थी। पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्मों को नकारने का अर्थ था कि वे बिना क्षमा के अपने पाप में मरेंगे]।
4. आप ''ऐसा पाप जिसका फल मृत्यु नहीं है'' की परिभाषा कैसे देंगे? आप पाप जिसका फल मृत्यु है'' की परिभाषा कैसे देंगे? ''यदि कोई व्यक्ति अपने पाप से मन फिरा लेता है तो उसे पाप से क्षमा मिल जाएगी? यदि कोई व्यक्ति बिना मन फिराए मर जाता है तो क्या उसे क्षमा मिल जाएगी?''
5. यदि कोई व्यक्ति पूरी तरह से सच्चाई को समझता और सुसमाचार की आज्ञा मान लेता है पर फिर इससे मुंह फेर लेता है तो उसके भाइयों के पास उसे मन फिराव के लिए वापस लाने के लिए कोई अतिरिक्त सच्चाई क्यों नहीं है? यदि वह लौट आता है तो यह दूसरों के तर्क से नहीं बल्कि उसके अपने विवेक और मन बदलने से होना चाहिए।
6. फिर से सच्चाई को जानते हुए उस से फिर जाने वाले की हालत उससे जिसने उस ज्ञान को कभी पाया नहीं बुरी क्यों है (2 पतरस 2:20–21)? क्योंकि उसे मालूम है कि वह किसे छोड़ रहा है और अब उसने उसे अपने पास नहीं रखा।]
7. ''इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा'' (मत्ती 12:31, 32)।
8. वे कौन हैं, जिन्हें क्षमा नहीं किया जा सकता? [जो मन नहीं फिराते हैं]।
9. ऐसे लोगों पर चर्चा करें जो इस युग में परमेश्वर से गलत ढंग से मानते हैं।।
10. मत्ती 24:24 में हमें क्या चेतावनी दी गई है।

पाठ 13

''परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा''

पवित्र आत्मा के काम पर श्रृंखला के इस अन्तिम पाठ में इससे बेहतर और क्या बात होगी कि प्रेरित पौलुस के इन शब्दों पर ध्यान लगाया जाए जो उसने कुरिन्थुस के मसीही लोगों से कहे थे, **''परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा तो, अधूरा मिट जाएगा''** (1 कुरिन्थियों 13:10)। उसके अनुसार, सर्वसिद्ध आने वाला था और उसके आने पर जो अधूरा था वह समाप्त हो जाना था। यहां जिसे वह ''सर्वसिद्ध'' कह रहा था, वह क्या था? और उसने ''अधूरा'' किसे कहा?

यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रेरित सच्चाई का प्रचार बिना किसी गलती के कर सकें हम ने बार–बार मसीह के चमत्कारी ढंग से उनकी अगुआई के लिए, सहायक या पवित्र आत्मा को भेजने की बात की है। इसके अलावा कुछ चेलों को इसीलिए चुना गया था ताकि प्रेरित उन्हें आत्मा की चंगा करने की सामर्थ देने के लिए उनके ऊपर हाथ रखें जिससे वे सुसमाचार सुनाने के परमेश्वर के इस बड़े काम में सहायता करें। यह सब लोगों को यकीन दिलाने के लिए था कि प्रेरितों और उपदेशकों को परमेश्वर की ओर से भेजा गया था और वे उस वचन को जिसे वे सुन रहे थे, मान लें। अन्त में जब नया नियम पूर्ण रूप से पूरा होने पर मनुष्य को दे दिया गया तो वह युग समाप्त हो गया जिसमें आश्चर्यकर्म किए जाते थे। उसके बाद से लेकर अब तक परमेश्वर और उसकी इच्छा को जानने वालों को इसे जानने के लिए नये नियम में से ही देखना होगा। पौलुस हमें बताता है कि विश्वास परमेश्वर का वचन सुनने के द्वारा आता है (रोमियों 10:17)।

परन्तु आइए 1 कुरिन्थियों 13 अध्याय को खोलें और यह देखने के लिए पौलुस परमेश्वर की सर्वसिद्ध इच्छा के बारे में क्या कहता है, इस प्रसिद्ध अध्याय को पढ़ें, **''यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झांझ हूं। और यदि**

मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिए दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।

प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।

''प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी। परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।

''जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाईं बोलता था, बालकों का सा मन था बालकों की सी समझ थी; परन्तु जब सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दीं। अभी हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है; परन्तु उस समय आमने-सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है; परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहचानूंगा, जैसा मैं पहचाना गया हूं। पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है'' (1 कुरिन्थियों 13)।

यह अध्याय बेशक प्रेम पर अधिक जोर दिए जाने और विशेषकर इसकी इस अन्तिम टिप्पणी के कारण जाना जाता है कि **''अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है,''** परन्तु इस में कुछ और भी बातें हैं जिन पर हमें विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

कृपया ध्यान दें कि पौलुस कहता है, **''प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।''** पौलुस आश्चर्यकर्मों के युग में रहता था। वह एक प्रेरित था इस कारण उसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया होने के कारण वह अन्य-भाषाओं में बोलने आदि जैसे आश्चर्यकर्म व चमत्कारी काम कर सकता था। परन्तु उस ने कहा कि प्रेम कभी नहीं टलेगा, जबकि आश्चयकर्म के द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणियां, अन्य-भाषाओं में बातें करना और परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया ज्ञान खत्म हो जाना था। अन्य शब्दों में, स्वाभाविक रूप में यानी सीखने पर इन्हें बोला जाना रहना था पर चमत्कारी ढंग से या आश्चर्यकर्म के द्वारा मिलना बंद हो जाना था।

पौलुस आगे कहता है, ''हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी है।'' वह आश्चर्यकर्मों से मिलने वाले ज्ञान और भविष्यद्वाणियों की बात कर रहा था। वह कहता है कि वे अधूरे थे क्योंकि इसमें केवल कलीसिया के चुनिंदा लोगों को ही वे दान मिले थे, और वे दान एक सीमित समय के लिए थे। वे वह टेक व सहारा थे जो नई बनने वाली इमारत की छत को पक्का होने तक टिकाए रखने के लिए दिया जाता है। कलीसिया अभी थोड़ी देर पहले बनी थी। यह नई–नई बनी थी और बढ़ रही थी और इसके पास अगुआई या निर्देशन के लिए नया नियम अभी सम्पूर्ण रूप में नहीं मिला था। इस कारण नया नियम लिखित रूप में दिए जाने तक आवश्यक सहायता देने के लिए ये आश्चर्यकर्म आवश्यक थे।

पौलुस ने अंत में कहा, **''परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा तो अधूरा मिट जाएगा।''** जिन बातों को पौलुस अधूरी कहता है वे आश्चर्यकर्म थे जो कि थोड़े समय के लिए थे, जब तक कि स्वतन्त्रता की नई व्यवस्था नहीं आ जानी थी। कुछ लोग शायद इसे इस प्रकार से समझाएं कि यह यीशु के आने की बात है, परन्तु ऐसा नहीं है। क्यों? (अंग्रेजी बाइबल पढ़ने पर आप को इस प्रकार मिलता है– "But when that which is perfect is come, then that which is in part shall be done away." इसमें ध्यान देने वाली बात है कि वस्तु के लिए which और व्यक्ति के लिए He शब्द का इस्तेमाल होता है।) इसके अलावा पौलुस कहता है कि सर्वसिद्ध के आ जाने के बाद जो तीन चीज़ें बनी रहेंगी वे हैं **आशा, प्रेम और विश्वास।** इसका स्पष्ट अर्थ यह होगा कि वह मसीह की बात नहीं कर सकता था तब तो अनन्तकाल की वास्तविकता में विश्वास और आशा जाते रहेंगे।

पौलुस किसी ''चीज'' की भविष्यवाणी कर रहा था इसलिए हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि वह परमेश्वर की सम्पूर्ण और सिद्ध इच्छा यानी **नये नियम** की बात कर रहा था । हमें कैसे मालूम? **क्योंकि इस संसार में और कोई सम्पूर्ण चीज नहीं है!** यह कितना परमेश्वर के प्रबंध के अनुसार है कि प्रेरितों की मृत्यु, उनके जीवन के सामान्य रूप में अंत होने, जिन्हें उन्होंने आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी थी, और नये नियम का पूरा होना पहली सदी के अन्तिम भाग में, यह सब कैसे हुआ! मनुष्यजाति को परमेश्वर का वचन दे दिए जाने के पश्चात इन आश्चर्यकर्मों को कोई आवश्यकता नहीं रही, जिस कारण वे बंद हो गए। याकूब इसका समर्थन करता है जब वह कहता है, **''पर जो व्यक्ति स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता है''** (याकूब 1:25)।

पौलुस इसे समझाते हुए यूं कहता है, **''जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाईं बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परन्तु जब सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दी''** (आयत 11)। पौलुस केवल इतना दिखा रहा था कि जब कलीसिया का बचपन था तब उसे इन आश्चर्यकर्मों, यानी इन बचकाना बातों की आवश्यकता थी, परन्तु कलीसिया के बड़े हो जाने और सयानी हो जाने और इसकी अगुआई के लिए नया नियम मिल जाने के बाद ये आश्चर्यकम बंद हो गए।

इसे वह फिर से यह कह कर समझाता है, **''अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है, परन्तु उस समय आमने-सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहचानूंगा जैसे मैं पहचाना गया हूं।''** वह समझा रहा था कि आश्चर्यकर्मों के युग में मसीही लोगों को परमेश्वर के सम्पूर्ण वचन का केवल एक भाग ही पता था। यह अंधेरे कमरे में दर्पण में देखने जैसा था, जिसमें साफ साफ कुछ नज़र नहीं आता। परन्तु वायदा यह था कि समय आएगा जब हर कोई नये नियम में देखकर अपने चेहरे को साफ–साफ देख सकेगा कि वह कैसा दिखता है। याकूब 1:22–25 में याकूब बिल्कुल यही कहता है। पौलुस इस तथ्य के साथ समाप्त करता है उसे केवल अधूरा ज्ञान था, परन्तु वह समय आना था जब सब लोगों ने परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह से जान लेना था।

हमें समझना आवश्यक है कि नये नियम के आने के साथ आश्चर्यकर्मों का युग खत्म हो गया। परमेश्वर ने अपनी इच्छा को पूरी तरह से प्रकट कर दिया है और यदि कोई जानना चाहे कि प्रभु उसके जीवन से क्या करवाना चाहता है तो उसे नये नियम में जाना होगा। परमेश्वर मनुष्य के साथ अपने वचन से अलहिदा और अलग बात नहीं कर रहा है।

आज बहुत से कथित चमत्कार करने वाले लोग हैं, जो उद्धार पाने के इच्छुक लोगों को आगे आकर पापी की प्रार्थना दोहराने को कहते हैं कि ''मैं विश्वास करता हूं कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के नाम से मेरे पापों को क्षमा कर दिया है।'' वे यह दावा करने की हिम्मत भी कैसे करते हैं कि परमेश्वर उनके द्वारा काम कर रहा है! **क्या आप वचन में कहीं बता सकते हैं कि पतरस, पौलुस या सुसमाचार के अन्य किसी प्रचारक ने सुननेवालों को आगे आकर यह प्रार्थना करने के लिए कहा कि हे प्रभु यीशु मुझ पापी को क्षमा कर?** परमेश्वर के वचन में ऐसी कोई प्रार्थना नहीं मिलती है!

आत्मा आज काम करता है पर केवल अपने वचन के द्वारा और वचन से मेल खाते हुए बेशक पवित्र आत्मा आज चमत्कारी ढंग से लोगों में काम

नहीं कर रहा है। पर वह परमेश्वर की इच्छा को बताने के लिए और मसीह को प्रकट करने के लिए जो मनुष्य को उसके पापों से बचा सकता है वचन के द्वारा काम करता है। वह इससे बढ़कर और क्या काम कर सकता था?

क्या परमेश्वर आज हमारे जीवनों में काम करता है?

[पाठ का यह भाग जे. सी. चोट की पत्नी बैटी चोट के लिखे पाठों से लिया गया है]

अपने अध्ययन में यहां हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि परमेश्वर ने इस संसार के मामलों के साथ अपनी सक्रिय भागीदारी पूरी कर ली है। उसने हमारे पापों के लिए अपने पुत्र को क्रूस पर मरने दिया, जिससे हम उद्धार पाने के लिए उसके सुसमाचार की आज्ञा को मानकर उसके परिवार यानी कलीसिया का भाग बन सकते हैं। पवित्र आत्मा ने बाइबल को लिखने की प्रेरणा दी ताकि हमारे पास परमेश्वर की आज्ञा मानने और अपने प्रतिदिन के जीवन में अगुआई के लिए स्पष्ट वचन मिल सकें। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इस प्रतिज्ञा के साथ बंद होती है कि यीशु एक दिन बादलों पर आएगा, जब इस संसार का अंत हो जाएगा और तब लोगों का न्याय होगा।

यह सच है कि आश्चर्यकर्मों का युग खत्म हो गया है क्योंकि उद्धार का काम, कलीसिया की स्थापना और इस तथ्य की पुष्टि हो चुकी है कि पहली सदी के दौरान परमेश्वर का संदेश बोलने और लिखने का काम पूरा हो गया है। परन्तु यदि हम ध्यान से देखें तो नये के साथ साथ पूरे पुराने नियम में हम पाएंगे कि परमेश्वर का अधिकतर काम आश्चर्यकर्मों के द्वारा नहीं था! आश्चर्यकर्म नियम का अपवाद थे, जब किसी नबी को या आत्मा की प्रेरणा से बोले गए नये संदेश को प्रमाणित करना होता था। हम इस्राएलियों के मिस्र की दासता से छूटने और जंगल में रहने के वर्षों के दौरान (निर्गमन) उस जाति को सम्भालने के मूसा के काम के साथ आश्चर्यकर्म देखते है। तीन इब्रानी ''बच्चे'' और दानिय्येल को परमेश्वर के स्पष्ट हस्तक्षेप के द्वारा नबूकदनेस्सर के प्रकोप से बचाया गया था (दानिय्येल 3 और 6)। आश्चर्यकर्म हम तब देखते हैं जब एलिय्याह से बाल के नबियों को नष्ट करने के लिए आकाश से आग बुलवाई थी (1 राजाओं 18)। आज जब लोग परमेश्वर और बाइबल से अपने मनों को कठोर कर लेते हैं तो यह ऐसा होता है जैसे वे अपने मुंह पर मुक्का मारते हुए चिल्ला रहे हों, ''कोई परमेश्वर नहीं है!'' पर परमेश्वर उन्हें भस्म करने के लिए आकाश से कोई आग नहीं भेजता है! वह आश्चर्यकर्म के साथ दण्ड भी नहीं देता। इसके बजाय बाइबल में वह हर किसी को चाहे चेतावनी देता है कि यही यीशु

जो हमें हमारे पापों से बचाने के लिए मर गया था एक दिन हमारा न्यायी बनने के लिए वापस आएगा। यीशु ने स्वयं कहा कि धर्मी आज्ञा मानने वाले लोगों को अनंत जीवन में भेजा जाएगा पर आज्ञा न मानने वालों को वह कहेगा, '' 'हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है' '' (मत्ती 25:41)।

मनुष्यों के साथ परमेश्वर के व्यवहार में हम एक बड़ी विभाजक रेखा को देख सकते हैं। सृष्टि के आरम्भ से लेकर यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद बाइबल के पूरा होने तक परमेश्वर कुछ लोगों के साथ सीधे बात करता था और उसके दूत और नबी यह साबित करने के लिए कि वे परमेश्वर के वचन को ही बता रहे हैं कि कई आश्चर्यकर्म करते थे। परन्तु बाइबल के पूरा हो जाने के बाद परमेश्वर के काम करने का तरीका बदल गया है और इसे ''ईश्वरीय प्रबन्ध'' कहा जाता है। आइए बाइबल में चलकर कुछ अतिरिक्त उदाहरणों को देखते हैं!

योनातान और उसके हथियार ढोने वाले की उस युद्ध की कहानी है जिसमें फरीसियों के साथ लड़े थे। वहां हम परमेश्वर की सहायता के ईश्वरीय प्रबन्ध को देख सकते हैं:

''तब योनातान ने अपने हथियार ढोनेवाले जवान से कहा, आ, हम उन खतनारहित लोगों की चौकी के पास जाएं; क्या जाने यहोवा हमारी सहायता करे; क्योंकि यहोवा को कुछ रोक नहीं, कि चाहे तो बहुत लोगों के द्वारा चाहे थोड़े लोगों के द्वारा छुटकारा दे। उसके हथियार ढोनेवाले ने उस से कहा, जो कुछ तेरे मन में हो वही कर; उधर चल, मैं तेरी इच्छा के अनुसार तेरे संग रहूंगा।

योनातान ने कहा, सुन, हम उन मनुष्यों के पास जाकर अपने को उन्हें दिखाएं। यदि वे हम से यों कहें, हमारे आने तक ठहरे रहो, तब तो हम उसी स्थान पर खड़े रहें, और उनके पास न चढ़ें। परन्तु यदि वे यह कहें, कि हमारे पास चढ़ आओ, तो हम यह जानकर चढ़ें, कि यहोवा उन्हें हमारे साथ कर देगा। हमारे लिये यही चिन्ह हो।

तब उन दोनों ने अपने को पलिश्तियों की चौकी पर प्रगट किया, तब पलिश्ती कहने लगे, देखो, इब्री लोग उन बिलों में से जहां वे छिप रहे थे निकले आते हैं। फिर चौकी के लोगों ने योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले से पुकार के कहा, हमारे पास चढ़ आओ, तब हम तुम को कुछ सिखाएंगे। तब योनातान ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा मेरे पीछे पीछे चढ़ आ; क्योंकि यहोवा उन्हें इस्राएलियों के हाथ में कर देगा।

और योनातान अपने हाथों और पावों के बल चढ़ गया, और उसका हथियार ढोनेवाला भी उसके पीछे पीछे चढ़ गया। और पलिश्ती योनातान के सामने गिरते गए, और उसका हथियार ढोनेवाला उसके पीछे पीछे उन्हें मारता गया। यह पहिला संहार जो योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले से हुआ, उस में आधे

बीघे भूमि में बीस एक पुरुष मारे गए।

और छावनी में, और मैदान पर, और उन सब लोगों में थरथराहट हुई; और चौकीवाले और नाश करनेवाले भी थरथराने लगे; और भुईंडोल भी हुआ; और अत्यन्त बड़ी थरथराहट हुई। और बिन्यामीन के गिबा में शाऊल के पहरूओं ने दृष्टि करके देखा कि वह भीड़ घटती जाती है, और वे लोग इधर उधर चले जाते हैं'' (1 शमूएल 14:6–16)।

अब कुछ सवाल: क्या परमेश्वर ने योनातान से कहा कि जाकर इस्राएल के शत्रुओं से लड़े? नहीं। क्या परमेश्वर ने योनातान को बताया कि वह इस बात के चिह्न के रूप में परमेश्वर युद्ध जीतने में उनकी सहायता करेगा इस चिह्न की सहायता करे। नहीं।

योनातान ने जो चिह्न बताया था वह यह था कि पलिश्ती उससे पहाड़ी की ढलान के ऊपर आने को कहेंगे। चढ़ाई चढ़ते हुए उनके हाथों और घुटने के बल होने के कारण पलिश्तियों के लिए उन्हें मार डालना आसान होना था, सो चढ़ाई शुरू करने के लिए योनातान में विश्वास बहुत अधिक होना आवश्यक था। लेकिन वह चढ़ गया और उन्हें बड़ी विजय मिली! बाइबल यह नहीं बताती है कि वहां दुष्ट सिपाहियों को मारते हुए कोई स्वर्गदूत दिखाई दिया था, परन्तु वहां बहुत बड़ा भूकम्प आया था! भूकम्प तो आना कुदरती तौर पर होता ही रहता है? हां वह आते ही रहते हैं! सो हम यह कहेंगे कि परमेश्वर ने इस्राएल के शत्रुओं को हराने के लिए योनातान और उसके हथियार ढोने वाले की ईश्वरीय प्रबन्ध के द्वारा सहायता करने के लिए प्रकृति का इस्तेमाल किया।

एक और बार पर्दे के पीछे से परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए लड़ाई की ताकि किसी को कोई स्वर्गदूत दिखाई न दिया या किसी को यह पता न चला कि यह परमेश्वर ही कर रहा था, जब अश्शूर के राजा सन्हेरीन ने यरूशलेम को पूरी तरह से नष्ट करने की योजना बनाते हुए नगर को घेर लिया था।

''इसके बाद अश्शूर का राजा सन्हेरीब जो सारी सेना समेत लाकीश के सामने पड़ा था, उस ने अपने कर्मचारियों को यरूशलेम में यहूदा के राजा हिजकिय्याह और उन सब यहूदियों से जो यरूशलेम में थे यों कहने के लिये भेजा, कि अश्शूर का राजा सन्हेरीब कहता है, कि तुम्हें किस का भरोसा है जिस से कि तुम घिरे हुए यरूशलेम में बैठे हो? ... और वे यरूशलेम के परमेश्वर के विरुद्ध ऐसे बोलते थे जैसे पृथ्वी के लोगों के देवताओं के विरुद्ध जो कि मनुष्य के हाथ की कारीगरी हैं।

''तब इन घटनाओं के कारण राजा हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र यशायाह नबी दोनों ने प्रार्थना की और स्वर्ग की ओर दोहाई दी। तब यहोवा ने एक दूत भेज दिया, जिस ने अश्शूर के राजा की छावनी में सब शूरवीरों, प्रधानों और सेनापतियों को नष्ट किया। अत: वह लज्जित होकर, अपने देश को लौट गया। जब वह अपने देवता के भवन में था, तब उसके निज पुत्रों ने वहीं उसे तलवार से मार डाला'' (2 इतिहास 32:9, 10, 19–21)।

वचन हमें बताता है कि परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को भेजा, परन्तु इतिहास बताता है कि पूरी सेना एक भयंकर बीमारी से मर गई जो उस रात उन पर पड़ी थी। किसी ने भी असल में स्वर्गदूत को नहीं देखा था।

इब्रानियों 1:14 के अनुसार **''क्या वे सब सेवा टहल करने वाली आत्माएं नहीं; जो उद्धार पाने वालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं?''**

एक बार में सीरिया का राजा एलीशा नबी के खिलाफ़ हो गया था। जो कुछ हुआ बाइबल में उसे यूं लिखा गया है: **''तब उस (राजा) ने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा, और उन्हों ने रात को आकर नगर को घेर लिया। भोर को परमेश्वर के भक्त का टहलुआ उठा और निकलकर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे हुए पड़ा है। और उसके सेवक ने उस से कहा, हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें?**

उस ने कहा, मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं। तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, 'हे यहोवा इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके।' तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं, और वह देख सका, तब क्या देखा कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है'' (2 राजाओं 6:14–17)।

सो एलीशा की रक्षा के लिए वह पूरी जगह स्वर्गदूतों से भर गई, बेशक किसी को कोई स्वर्गदूत दिखाई नहीं दिया। परमेश्वर का ईश्वरीय प्रबन्ध ऐसे ही काम करता है!

आज, अक्सर लोग अपने जीवन में कुछ अनापेक्षित होने पर पुकार उठते हैं, **''वह तो चमत्कार था!'' यह मुर्दों को जिलाने, लंगड़े को टांग देने, टूटे हाथ वाले का हाथ लगाने, या अंधे को आंखें देने जैसा प्रकृति के नियम के उलट काम था।**

इस के उलट आइए ''ईश्वरीय प्रबंध'' के द्वारा परमेश्वर के काम करने के बाइबल के एक और बेहतरीन उदाहरण को देखते हैं। **ईश्वरीय प्रबंध क्या है? यह परमेश्वर का प्रकृति के नियमों को तोड़े बिना जिन्हें उसने आदम और हव्वा के पाप के कारण ठहराया, अपने अधिकार से ''पर्दे के पीछे'' किसी भी चीज़ का इस्तेमाल करना है।** रोमियों 15:30–32 में पौलुस ने रोम की कलीसिया से यह विनती की: **''हे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह के और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिला कर मैं तुम से विनती करता हूं, कि (1) मेरे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो। कि (2) मैं यहूदिया के अविश्वासियों से बचा रहूं, और मेरी वह सेवा जो यरूशलेम के लिये है, पवित्र लोगों को भाए; (3) और मैं परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आनन्द के साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम पाऊं।''** परमेश्वर ने उन प्रार्थनाओं का उतर दिया, पर आश्चर्यकर्मों के द्वारा नहीं।

दूसरी बात जिसके लिए रोम के मसीहियों से प्रार्थना करने को कहा गया था वह यह थी कि पौलुस को यरूशलेम की कलीसिया द्वारा ग्रहण किया जाए। **प्रेरितों**

21:15-20 में लिखा है कि कैसरिया और कुप्रुस से भाई पौलुस के साथ गए, **''जब हम यरूशलेम में पहुंचे, तो भाई बड़े आनन्द के साथ हम से मिले। दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर याकूब के पास गया, जहां सब प्राचीन इकट्ठे थे। तब उसने उन्हें नमस्कार करके, जो जो काम परमेश्वर ने उसकी सेवा के द्वारा अन्यजातियों में किए थे, एक-एक करके सब बताए। उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर की महिमा की। ''**

परमेश्वर ने पौलुस को उन के हाथों से कैसे छुड़ाया जो यहूदिया में उसके प्राणों के पीछे पड़े थे, जिस के लिए उसने प्रार्थना में पहली विनती की? **प्रेरितों 22:22-25:** जब यहूदियों की भीड़ चिल्लाने लगी कि पौलुस जीवित रहने के योग्य नहीं है तो **परमेश्वर ने उसे बचाने के लिए रोमी सेना के सेनापति को इस्तेमाल किया। प्रेरितों 23:11-22:** उसकी गिरफ्तारी के बाद परमेश्वर ने सेनापति को यह संदेश भेजने के लिए कि उसे अपने बचाव के लिए सभा के सामने ले जाए जान के समय यहूदी अगुवे पौलुस की हत्या की योजना बना रहे हैं उसके भांजे का इस्तेमाल किया। **प्रेरितों 23:23-31: जवाब में सेनापति ने दो सूबेदारों को बुलाकर 200 सिपाही घुड़सवार और 200 भालैत (तैयार रखने के लिए) पहर रात बीतने पर कैदी को फैलिक्स के सामने सुरक्षित लाने के लिए इकट्ठे करने को कहा। प्रेरितों 25:12:** फिर जब यहूदी अगुवों ने पौलुस पर राजद्रोह के आरोप लगाए, तो रोमी नागरिक के रूप में उसने अपने बचाव के लिए **रोमी कानून का इस्तेमाल करते हुए कैसर को अपील की।**

पौलुस की **तीसरी विनती** रोम की कलीसिया को मजबूत करने के लिए रोम में आने की उसकी इच्छा से जुड़ी थी। यरूशलेम में उसकी गिरफ्तारी के बाद, **प्रेरितों 27 और 28:** जब पौलुस को कैदी बनाकर समुद्री जहाज़ पर रोम में ले जाया जा रहा था तो एक बहुत खतरनाक तुफ़ान आया। बहुत दिनों के बाद पौलुस ने मल्लाहों को यह यकीन दिलाते हुए कोई नहीं मरेगा सब बच जाएंगे, खाना लाने के लिए कहा। **''यह कहकर उसने रोटी लेकर सब के सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया और तोड़कर खाने लगा। तब वे सब भी ढाढ़स बांधकर भोजन करने लगे। हम सब मिलकर जहाज पर दो सौ छिहत्तर जन थे।**

तब सैनिकों का यह विचार हुआ कि बन्दियों को मार डालें, ऐसा न हो कि कोई तैर के निकल भागे। परन्तु सूबेदार ने पौलुस को बचाने की इच्छा से उन्हें इस विचार से रोका और यह कहा, कि जो तैर सकते हैं, पहले कूदकर किनारे पर निकल जाएं'' (प्रेरितों 27)।

सो यहां पर परमेश्वर ने रोम में अपनी गवाही के लिए पौलुस को ले जाने के लिए **रोमी जहाज, मल्लाह और सिपाहियों** का इस्तेमाल किया! **जो चीज़ें सरकार की हैं वे भी असल में परमेश्वर की हैं! सो पौलुस के सफ़र का खर्च रोम ने अदा किया!** अब यहां पर देखते हैं कि फिर से बिना आश्चर्यकर्मों के इस्तेमाल से परमेश्वर ने जो कुछ किए जाने की आवश्यकता थी, ईश्वरीय प्रबन्ध के साथ किया

ताकि पौलुस रोम में सुरक्षित पहुंचकर कैसर के सामने अपील कर सके? बेशक उसके वहां रहते समय उसे किराए के मकान में रहने की अनुमति दी गई ताकि वह कलीसिया के साथ मिल सके, मसीही लोगों को आत्मिक दान दे सके और मसीह की देह को मज़बूत कर सके। प्रार्थनाओं का उत्तर दिया गया!

ईश्वरीय प्रबन्ध आज काम करता है

ऐसी ही एक परिस्थिति आज पाई जाती है जिसमें सामान्यवादी चीनी सरकार मसीहियत की शिक्षा की ''अनुमति'' नहीं देती है। परन्तु अंग्रेजी भाषा के अंतरराष्ट्रीय भाषा होने के कारण वह चाहते हैं कि उनके कॉलेजों में अंग्रेज़ी भाषा सिखाई जाए, तो वे करते हैं? वे पढ़ाने के लिए टीचरों को लाते हैं। वर्षों से बहुत से **अमेरिकी मसीही** चीन में रहते हुए, वफ़ादारी से अंग्रेजी भाषा सिखा रहे हैं। **चीन में आने का उनका भाड़ा सरकार देती है, उन्हें रहने के लिए मकान दिए जाते हैं और वेतन भी दिया जाता है।** वहां रहते हुए वे साधारण लोगों को सुसमाचार ही बताते हैं जिसका सरकारी अधिकारियों को पता है पर वे अधिकारी जब तक कोई गड़बड़ न हो तब तक कोई दखल नहीं देते। **कितनी विडम्बना है कि चीन की नास्तिक साम्यवादी सरकार अपने देश के लिए सुसमाचार सुनाए जाने के लिए पैसे दे रही है जिसकी असल में यह मनाही करती है!**

इस युग में परमेश्वर के ईश्वरीय प्रबन्ध के काम करने का एक और उदाहरण है। मिशनरी किसी नये देश में जाने वाले थे। वर्षों से वह भारत में जाने की कोशिश कर रहे थे परन्तु श्रीलंका के छोटे देश में अब काम कर रहे अमरीकी मसीहियों का एक परिवार किसी से वहां आकर प्रभु की कलीसिया को आरम्भ करने के लिए सहायता करने को कह रहा था। क्या करने को? मिशनरी परमेश्वर से सही दरवाजे खोलने और गलत दरवाजे बंद करने के लिए प्रार्थना कर रहे थे। उनके हिस्से का काम वीज़ा के लिए अप्लाई करना था [देश में रहने की अनुमति के लिए]। पति के पास भारतीय वीज़ा था जिसका अर्थ यह था कि परिवार के लिए वीज़ा पाने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। सो उन्होंने कहा कि यदि परिवार को वीज़ा मिल जाए तो हम यह निष्कर्ष निकालेंगे कि परमेश्वर चाहता है कि हम भारत में जाएं। यदि हमें नहीं मिलता तो हम यह मान लेंगे कि हम श्रीलंका में रहें।''

वीज़ा मना कर दिया गया जिस कारण वे श्रीलंका की राजधानी कोलम्बो में चले गए और किसी को भी जो सुनने को तैयार हो सुसमाचार सुनाने लगे।

मिशनरियों ने बाइबल अध्ययन करने के इच्छुक लोगों के लिए दो सप्ताह के स्कूल का विज्ञापन दिया। एक पढ़ा लिखा आदमी जो अभी अभी अपने ससुर के साथ कारोबार से निकला था, और उसके पास अभी कोई काम नहीं था, उसने उस विज्ञापन को देखा। उसने अपने आप से कहा, ''मैं कोई काम नहीं कर रहा। तो मेरे पास बाइबल स्कूल में जाने का अच्छा अवसर है।''

दो हफ्ते खत्म होने से पहले–पहले उसने बपतिस्मा ले लिया और होम बाइबल स्टडी में एक अच्छा सहायक बन गया। कुछ ही महीनों के अंदर वह मिशनरी परिवार भारत में चला गया। लोगों के साथ अध्ययन करते हुए और नई दिल्ली में कलीसिया आरम्भ करने के बाद वे भारत सरकार द्वारा चलाए जाने वाले रेडियो स्टेशनों पर कार्यक्रम देने की सम्भावना तलाशने लगे पर उन्हें बताया गया कि उस हिन्दू राष्ट्र में मसीही धार्मिक प्रसारण की अनुमति नहीं है।

फिर उन्होंने एक रोमांचकारी खबर सुनी की श्रीलंका का रेडियो स्टेशन जिसे ''द जॉइंट इन ऐशिया'' कहा जाता था प्रसारण के लिए अपने टावरों के इस्तेमाल के लिए मसीही लोगों को अनुमति दे रहा था! उसकी कवरेज विश्व के अधिकतर पूर्वी भाग में थी! परमेश्वर की कितनी बड़ी आशीष थी! वह मिशनरी भारत के कुछ प्रचारकों को जानता था जो भारत की प्रमुख भाषाएं बोल सकते थे उसे यकीन था कि सब प्रबन्ध हो सकता है, परन्तु रेडियो स्टेशन के साथ सम्पर्क के प्रबन्ध के लिए भरोसेमंद व्यक्ति कहां से लाएं? अरे हां! **परमेश्वर समय से आगे देख रहा था और एक जोशीला भरोसेमंद मसीही कोलम्बो में पहले से तैयार था!**

फिर क्या हुआ? वर्षों से इकट्ठे काम करते हुए ''टीम'' भारत के करोड़ों लोग यह जान पाए हैं कि यीशु उनके लिए मरा और बहुतों ने बपतिस्मा लेकर उसकी आज्ञा मानी हैं! परमेश्वर सब बातों को मिलाकर भलाई के लिए इस्तेमाल करता है!

मैं आपको एक और कहानी बताती हूं जो ईश्वरीय प्रबन्ध को दिखाती है। आप जानते हैं कि यीशु ने मसीही लोगों से सारे संसार में जाकर सुसमाचार सुनाने को कहा था और हमारा काम सचमुच में जाकर सिखाना है ताकि लोग परमेश्वर के बारे में और जानना चाहें और उसकी आज्ञा को मानें। परन्तु परमेश्वर जानता है कि ऐसे लोग हैं जो पहले से उसकी तलाश में हैं, चाहे उन्हें सिखाने के लिए कोई नहीं गया है। वे लोग वे हैं जिन्हें वह बहुत सी चीज़ों को इकट्ठे करके ईश्वरीय प्रबन्ध के द्वारा इस्तेमाल करता है!

बर्मा में एक व्यक्ति एयर कंट्रोलर के रूप में **रंगून** में एयरपोर्ट में काम

करता था। एक दिन उसकी मुलाकात **भारत** के एक व्यक्ति से हुई जो उसी की तरह एक एयर कंट्रोलर था। वह बातें करने लगे और भारतीय व्यक्ति ने कहा कि वह अमेरिकी लोगों की सहायता से **थाईलैंड** की एक **अमेरिकी मिशनरी** से बाइबल कोर्स कर रहा है। उसने उस बर्मी व्यक्ति को वह पता दिया जिस ने कोर्स के लिए लिखा था। फिर उस ने और उस के परिवार ने हर पाठ का बड़ी सावधानी से अध्ययन किया। उन्हें यह यकीन हो गया कि उन्हें बपतिस्मा लेना आवश्यक है सो **थाईलैंड** के मिशनरी जहाज़ से उन के पास आकर आगे अध्ययन कराने लगा और उस ने उन्हें मसीह की देह में बपतिस्मा दिया! यह बर्मा में मसीह की कलीसिया का आरम्भ था। अब वहां उस देश में बहुत से मसीही हैं बल्कि बाइबल ट्रेनिंग स्कूल भी हैं! परन्तु इस में परमेश्वर की पहुंच को देखें: **भारत से बर्मा से अमेरिका से थाईलैंड** और वापस बर्मा और कई सालों तक काम करते रहे! परमेश्वर का हाथ छोटा नहीं है कि वह, वह न कर सके, जिसकी आवश्यकता है, वह अपनी तैयारियों में समय से आगे देखता है और इस बात को कभी नहीं भूलता कि वह सब बातों को सुन रहा होता है!

बाद में यह पाया गया कि **उत्तर पूर्व भारत** में छपा **साहित्य पश्चिमी बर्मा** की सीमा के लोगों में बांटा गया था और वहां पर कलीसिया की कई मण्डलियां बन गईं थीं। उन विश्वासियों में से एक दक्षिण भारत के एक **बाइबल स्कूल** में चला गया और वहां से बर्मा में लौट गया। जब उसे **रंगून** [यंगोन] में कलीसिया के होने का पता चला तो वह स्थानीय **बाइबल स्कूल में और देश के नगरों और गांवों में सुसमाचार सुनाते हुए कलीसिया के साथ वहीं बस गया!**

एक और अनोखी बात **पाकिस्तान** में एक मिशनरी के साथ हुई। एक दिन एक आदमी गेट पर खड़ा वहां लगे बोर्ड को पढ़ रहा था जिस में लिखा था मसीह की कलीसिया यहां इकट्ठा होती है।'' वह कलीसिया के बारे में और जानने के लिए अंदर आया, असल में वह यह जानना चाह रहा था कि वह अच्छे विवेक के साथ उनके साथ आराधना कर सकता है या नहीं। कई घंटे तक चली बातचीत के बाद मिशनरी को उस आदमी के बारे में पता चला जो एक डॉक्टर था कि वह **रूस की सीमा के पास ईरान** के पहाड़ी इलाके से आया था। उसने कहा कि वह वहां मसीही लोगों की मण्डली का एक भाग था और जिस कलीसिया के साथ वह आराधना करता था उसमें लगभग 5,000 लोग थे।

उनका इतिहास? उसने बताया कि **उनमें से कुछ लोग जिन्होंने यीशु**

का तारा देखा था उसी के कबीले के थे और वे तारे का पीछा करते करते बैतलहम चले गए थे। घर लौटने के बाद उन्होंने बालक के बड़ा होकर और उस काम को करने के योग्य होने तक जिसके लिए उसने जन्म लिया था प्रतीक्षा की। वे इस्राएल में लौट गए पिंतेकुस्त के दिन यरूशलेम में उन लोगों की भीड़ में थे जिन्होंने पतरस और अन्य प्रेरितों को यह प्रचार करते हुए सुना था कि अंत में परमेश्वर का राज्य आ गया है! उन्होंने बपतिस्मा लिया और वहां कुछ समय रूके थे, प्रेरितों से सीखकर उन बातों को लिखने के लिए जिन्हें वे ''मसीह की बातें'' कहते थे। जब वे दोबारा घर आए तो उन्होंने अपने परिवारों और अपने कबीले के लोगों को वे बातें सिखाईं जो उन्होंने सीखीं ताकि वे भी मसीह बन जाएं।

उस डॉक्टर को सुसमाचार की और मसीह बनने की तरीके की और परमेश्वर से आराधना करने के ढंग की बड़ी सही समझ थी। उसने कहा कि उसके लोगों को यहां तक सताया गया था कि उन्होंने अपने आपको पहाड़ी इलाकों से अलग कर लिया था। बाद में जब फिर से ईरान में मिशनरी आया तो वह उस इलाके में गया जहां डॉक्टर ने उसे बताया था, पहाड़ों की सीमा पर। वहां जाने का एकमात्र तरीका घोड़े पर बैठकर और एक अनुवादक साथ लेकर हो सकता था। जिस कारण सफर वहीं रोकना पड़ा। बेशक इलाके के लोगों ने उसे बताया कि बहुत से मसीही वहां रहा करते थे परन्तु वे पहाड़ों में चले गए थे।

सो आप देखते हैं कि परमेश्वर किस प्रकार उसकी सहायता के लिए जो पहले से सच्चाई की तलाश में हो जो आवश्यक हो वह उपलब्ध कराने के लिए लोगों को किस प्रकार इकट्ठे कर सकता है।

सारांश

अपने चेलों और हमें यीशु का वायदा कि **''मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूंगा; मैं तुम्हारे पास आता हूं''** (यूहन्ना 14:18)। वह यकीन है जिस पर हमारे जीवन निभर हैं। उसने यह वायदा कभी नहीं किया वह हमें हर पाबंदी से बचाएगा; असल में उसने चेतावनी दी कि सताव होना था। परन्तु वह हमारे साथ है और हमें मसीही जीवन जीने में सहायता के लिए हमारे बपतिस्मे के समय उसने हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ दी है:

रोमियों 8: ''अत: अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। [क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं।]

क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।

परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं। यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है। यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा।

इसलिए हे भाइयो, हम शरीर के कर्ज़दार नहीं कि शरीर के अनुसार दिन काटें, क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं। क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।

इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है: क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिये विनती करता है; और मनों का जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मंशा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है। हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।''

परमेश्वर हमारे लिए जो भी बेहतर है और जिस भी परिस्थिति में हम हैं उसमें हमारी सहायता के लिए जो भी बेहतर है, करता है, यदि हम उस पर भरोसा रखकर अपनी क्षमता से बाहर जो भी करते हैं तो वह हमें निराश नहीं करेगा।

चर्चा करने के लिए प्रश्न

1. पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म के द्वारा काम करना बंद हो जाना था ''.. '' (1 कुरिन्थियों 13:10)
2. चर्चा के लिए: बहुत से लोग हैरान होते हैं कि परमेश्वर आज चमत्कार क्यों नहीं करता, उन्हें लगता है कि एक जबर्दस्त सामर्थ पूर्ण तरीके को छोड़ दिया गया है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि आश्चर्यकर्मों के युग में भी जादूगर होते थे जो अपने दावों से लोगों को गुमराह करते थे। सच्चाई को झूठ से अलग करना खासकर जब किसी ने केवल सुना हो कि ''चमत्कार'' हुआ है पर उसने अपनी आंखों से देखा न हो, कठिन होता होगा। आज जादूगर जबर्दस्त काम करते हैं जिन्हें आसानी से ''चमत्कार'' बताया जा सकता था यदि वे ''मनोरंजन के कारोबार के बजाय'' कि ''धार्मिक कारोबार में होते।'' बहुत से करोड़पति हैं जो यह मांग करते हैं कि ''चंगाई, चंगाई और चंगाई'' और लोग उनके द्वारा बताई जाने वाली गलत शिक्षाओं के बावजूद यह विश्वास कर लेते हैं कि वे असली हैं।
3. आज लोगों को विश्वासी बनाने और नये मसीही लोगों के पालन पोषण के लिए किस साधन का इस्तेमाल किया जाता है?
4. क्या परमेश्वर का वचन जो कि नया नियम है, अंतिम, पूरे संसार के लिए, अंत तक अधिकार प्राप्त है जो हमें परमेश्वर की न बदलने वाली इच्छा को बताता है?
5. यदि हमारे पास वह वचन न होता जिसकी पुष्टि लेखकों के आश्चर्यकर्मों के द्वारा हुई है और यदि हम दुनिया भर के यहां वहां के लोगों की दया पर होते जो परमेश्वर की ओर से बोलने का दावा करते थे, चमत्कार करने का दावा करते थे, तो हम यह कैसे पता लगा पाते कि सही क्या है और गलत क्या है? आज जिस प्रकार संचार माध्यम उपलब्ध हैं एक देश में रहते हुए हम किसी हिन्दु ''धर्मात्मा'' या तांत्रिक या संसार के दूसरी ओर किसी देश में ''विश्वास से चंगाई देने वाले'' के कुछ जबर्दस्त दावों को सुना होगा। यदि उनकी शिक्षाओं को साबित करने या झुठलाने के लिए हमारे पास परमेश्वर का वचन न होता तो हम उस

''चमत्कार'' की वैधता को कैसे परख पाते जिसका वे दावा करते हैं? परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम '' .... '' के युग में रहते हैं (1 कुरिन्थियों 12:31)।

6. परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों के बजाय ईश्वरीय प्रबन्ध के द्वारा योनातन और उसके हथियार ढोने वाले को कैसे बचाया?
7. परमेश्वर के प्रकाशन के अनुसार, सन्हेरीब की सेना के साथ क्या हुआ? सेना के मरने का कारण इतिहासकारों ने क्या बताया?
8. उन तीन बातों पर चर्चा करें जिनके लिए रोमियों 15:30–32 में रोम के मसीही लोगो ंसे प्रार्थना करने को कहा?
9. पूरी बातचीत सुनने के बाद क्या यरूशलेम के भाइयों ने पौलुस के काम को स्वीकृति दे दी?
10. पौलुस को उन यहूदियों से जो उसे मार डालना चाहते थे बचाने के लिए ईश्वरीय प्रबन्ध के अनुसार परमेश्वर ने किन हथियारों का इस्तेमाल किया? क्या इनमें से कोई चमत्कारी था।
11. पौलुस के लिए रोम में रहकर वहां के मसीही लोगों की सहायता करना कैसे सम्भव हुआ?
12. रंगून (यंगोन) बर्मा में सुसमाचार पहुंचाने के लिए कितने देशों के लोग शामिल थे?
13. क्या यह बात अहम थी कि रेडियो स्टेशनों पर सुसमाचार सुनाने का अवसर मिलने से पहले श्रीलंका में लोग विश्वासी बन गए थे?
14. पाकिस्तान में उस आदमी ने ईरान में अपने लोगों के बारे में क्या बताया?
15. रोमियों 8 के अनुसार मसीही व्यक्ति के जीवन में पवित्र आत्मा के हस्तक्षेप की चर्चा करें।

''लाइफटाइम गारंटी''

–बैटी चर्टन चोट

बाज़ार से लिए जाने वाले सामान के लिए हमारी इच्छा रहती है कि उसकी ''गारंटी लाइफटाइम'' हो। गारंटी कार्ड से हमें एक सुरक्षा का अहसास होता है, शर्त यह है कि जिस कंपनी से खरीदी गई हो वह अपने सामान की गारंटी देने के लिए जानी जाती है। यदि नया कॉफ़ी–मेकर काम करना बंद कर दे, तो जीवन की विशाल स्कीम में यह कोई बड़ा मसला नहीं होता। यदि डिश–वाशर वारंटी पीरियड के बाद काम न करे तो थोड़ा दुखता है पर अपने मासिक बजट को कोई बड़ी चुनौती दिए बिना हम उसे बदल सकते हैं। यदि गाड़ी अचानक से बदलनी पड़े, तो यह बड़ा काम होता है, जिसके लिए देर तक किस्तें भरनी पड़ती हैं और वह बेहद कष्टदायक हो सकता है। परन्तु भौतिक संसार में जीवन की चुनौतियों की ओर देखकर हम ज़िंदा हैं, हम ने संकटों का सामना किया है और हमने उन सब को पार कर लिया है।

परन्तु भौतिक सामान के संसार में हमें सबसे बड़ी असुरक्षा और सबसे डरावनी चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ता। यह सब तो जीवन में उन सब अदृश्य खतरों और परीक्षाओं के साथ होता है जो उस रास्ते पर जिस पर हम चल रहे होते हैं, छिपे रहते हैं। ''गारंटी'' कहां है जो हमें यह दिलासा दे और यकीन दिलाए कि हम दूसरी ओर सुरक्षित निकल पाएंगे, यानी क्या परमेश्वर के सामने हमारी आत्माएं बिना बिगड़े और पूरी की पूरी जाएंगी?

परमेश्वर अपने हर बालक को ''लाइफ़टाइम गांरटी'' देने की पेशकश करता है। यह सच है कि हमें इसे स्वीकार करना, फॉर्म को भरना और इसे भरकर भेजना है और उसने अपने हिस्से का काम कर दिया है। क्या गारंटी में कुछ अच्छी चीज़ है। तीतुस 1:2 स्पष्ट भाषा में कहता है, ''उस अनन्त जीवन की आशा पर, जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने, जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की है।'' सो यह गारंटी तो बख़तरबंद है।

इस समझौते में हमें क्या करना होगा?

पहलाः अनुबंध केवल परमेश्वर और उसकी संतान के बीच में है। इसका मतलब यह है कि बपतिस्मा पाया हुआ विश्वासी, यानी उसके पुत्र के लहू से धोकर खरीदा हुआ, और प्रभु की कलीसिया का सदस्य होना आवश्यक है।

दूसराः वारंटी में दी जाने वाली चीज़ आप खुद हैं, इसलिए आपको अपना जीवन, अपना मन, अपना शरीर, अपनी सम्पत्ति, और अपना सब कुछ उसे देना आवश्यक है। वह उसकी देखभाल नहीं कर सकता जो आपने उसके सपुर्द नहीं किया है। ऐसा समर्पण बार–बार की जाने वाली प्रार्थना में दिखाया जा सकता है कि ''हे पिता, जो कुछ मैं हूं और जो कुछ मेरे पास है वह सब तेरा है। मेरे विचारों को, मेरी शक्ति को और मेरे समय को आज लेकर इसका इस्तेमाल जैसा तुझे ठीक लगे वैसे ही कर। मुझे अपने रास्ते में न आने देना।''

अब आप ने अपने आपको परमेश्वर के खरीदे हुए पंजीकृत करवा लिया है और आप उसकी ज़िम्मेदारी हैं। वारंटी में आप इन शब्दों में अपना भरोसा जता सकते हैं, ''इस कारण मैं इन दुखों को भी उठाता हूं, पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं उसे जिसका मैंने विश्वास किया है, जानता हूं; और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी धरोहर की रखवाली कर सकता है'' (2 तीमुथियुस 1:12)।

उसकी वारंटी में क्या कहा गया है

''और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:20)।

''जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो'' (यूहन्ना 14:13)।

''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (यूहन्ना 14:15)।

''मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूंगा; मैं तुम्हारे पास आता हूं। यीशु ने उसको उत्तर दिया, ''यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उस के पास आएंगे और उस के साथ वास करेंगे'' (यूहन्ना 14:18, 23)।

''और हमें उस के सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। जब हम

जानते हैं, कि जो कुछ मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया है'' (1 यूहन्ना 5: 14, 15)।

परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर, समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो'' (2 कुरिन्थियों 9:8)।

यह बात लोहे की कील है। वह वायदा करता है:

हर समय: ऐसी कोई परिस्थिति और अवसर न होगा जिसमें वह नाकाम हो जाए।

बहुतायत से: वह गारंटी देता है कि जो कुछ तुम से वह करवाना चाहता है उसके लिए जो कुछ तुम्हें चाहिए वह काफ़ी होगा। उस चुनौती का सामना करने के लिए काफ़ी समय या काफ़ी धन या आप अपने आप में काफ़ी न हों, पर विश्वास से चलते रहें। उसने वायदा किया है और बाकी काम उस की ज़िम्मेदारी है। [और कई बार परमेश्वर का तरीका ही हमें इस तथ्य से चौकस कर सकता है कि हम ऐसे रास्ते से जाने की कोशिश कर रहे हैं जो उसने बंद कर दिया है, हमें ''बहुतायत से'' देने से इनकार करना होता है जिसकी हम अपने आप में उम्मीद कर रहे होते हैं। यदि वह चाहता है कि वह रास्ता खुल जाएगा और बहुतायत से मिल जाएगा।]

हर बात में: आम तौर पर हमें पता भी नहीं होता कि हमें क्या चाहिए। पर परमेश्वर रास्ते के अंत तक देख सकता है और वह गारंटी देता है कि किसी चीज़ की कमी नहीं होगी।

बहुतायत से: वह अपना वायदा दोहराता है, हमारे संघर्षरत विश्वास की खातिर।

हर एक भले काम के लिए: हां हमारे सामने एक और चुनौती है वह यह है कि हमारा फोकस और लक्ष्य भले काम में हो जो कि मसीही जीवन को बनाता है। उसने हमारे शरीरों को बनाया है, तो उसे मालूम है कि हमें भोजन, व्यायाम, आराम और संगति की ज़रूरत होती है, परन्तु यह सब जीवन के यानी उसके पास काम करने के सहायक बातें हैं।

फिर तसल्ली देने वाले और यकीन दिलाने वाले पिता के रूप में वह हमें अपनी गोद में लेकर बड़े प्यार से कहता है: **''किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिल्कुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी। इसलिए, हे भाइयो, जो-जो बातें सत्य**

हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात, जो-जो सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन्हीं पर ध्यान लगाया करो'' (फिलिप्पियों 4:6–8)।

फिर परमेश्वर हमारी आंखों में झांकता है और कहता है, उन समस्याओं के लिए जिनका सामना हमें करना ही होगा: **''मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ [तेरी] निर्बलता में सिद्ध होती है।''**

सो हम धन्यवाद और विश्वास के साथ उत्तर देते हैं कि हम उन चुनौतियों के लिए धन्यवादी होंगे क्योंकि वे ऐसे समय हैं जो हमें मसीह हमारे भाई को सामर्थ दिलाते हैं, **''इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे। इस कारण मैं मसीह के लिए निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में और उपद्रवों में, और संकटों में, प्रसन्न हूं; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं''** (2 कुरिन्थियों 12:9, 10)।

और उन अवसरों पर जब शैतान हमें सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाता है, परमेश्वर हमें अपने सीने से लगाकर कहता है, ''**क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता। देख [और वह अपनी हथेली मुझे दिखाता है], मैं ने तेरा चित्र हथेलियों पर खोदकर बनाया है''** (यशायाह 49:15, 16)।

फिर वह मुझे नीचे उतारकर अपने काम पर भेज देता है और जब मैं मुड़कर देखता हूं तो मुझे सबसे सुन्दर गीत सुनने को मिलता है! **''तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा''** (सपन्याह 3:17)।